कर्नल सुधाकर
ढाका
विजय के चौदह दिन

तानाशाही सेनाओं
के
बर्बर अत्याचारों
को
चुनौती देने वाले
मुक्ति संग्राम
की
यशस्वी
गाथा

साधना पॉकेट बुक्स

ढाका

विजय के चौदह दिन

कर्नल सुधाकर

ढाका विजय के चौदह दिन

तोपों की गड़गड़ाहट, विमानों की घरघराहट एवं लाखों निर्दोष नर-नारियों और बच्चों के कत्लेआम के बाद एक नये राष्ट्र का जन्म हुआ। धर्मनिरपेक्ष बंगला देश भारतीय वीर सैनिकों और मुक्ति-वाहिनी के योद्धाओं के त्याग, शौर्य, पराक्रम तथा बलिदान की अमिट गाथा है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने वाली यह केवल एक भारी सैनिक सफलता ही नहीं बल्कि उन भारतीय आदर्शों की विजय है जो हमारे राष्ट्रीय जीवन का आधार है। इस अग्नि-परीक्षा में एक नया नेतृत्व सामने उभरा, एक नई रोशनी की किरणें फूट पड़ीं। प्रथम बार भारत के प्रधान-मन्त्रियों की परम्परा में आदर्शसूचक व लम्बे-लम्बे भाषणों की अन्तर्राष्ट्रीय ठेकेदारी के स्थान पर यथार्थता के धरातल पर राष्ट्र-हितों को कारनामों द्वारा मुस्तैदी से पूरा करने का दृष्टिकोण सामने आया।

ढाका विजय के चौदह दिनों के इतिहास को लिखते समय अनेक देशी तथा विदेशी दैनिक, साप्ताहिक व पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं का आश्रय लेने के अतिरिक्त विदेशी प्रसारणों का भी सहारा लेना पड़ा। सैनिक व असैनिक घटनाओं की शृंखला को क्रमबद्ध बांधने का यह एक तुच्छ प्रयास है।

—कर्नल सुधाकर

पाकिस्तान का पापमय जन्म

दिसम्बर, १९३० में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में सर मुहम्मद इकबाल ने अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा था—"मैं चाहता हूँ कि पंजाब, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रान्त, सिन्ध व बिलोचिस्तान को मिलाकर एक राज्य बनाया जाए। मुसलमानों का अन्तिम भाग्य ब्रिटिश राज्य में उत्तर-पश्चिम में भारतीय मुस्लिम राज्य की स्थापना में निहित है। भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना ही मुसलमानों की न्यायोचित मांग है।"

कवि इकबाल ने पृथक् मुस्लिम राज्य की मांग नहीं की थी, बल्कि वह चाहते थे कि भारत में ही मुस्लिम राज्य की स्थापना हो। उस समय उन्होंने पूर्वी बंगाल का पाकिस्तान में शामिल किए जाने का उल्लेख नहीं किया था।

२६ मार्च, १९४० के लाहौर अधिवेशन में मुस्लिम लीग के सामने एक प्रस्ताव आया था कि कोई भी संवैधानिक योजना तब तक स्वीकार नहीं होगी जब तक कि उसमें निम्नलिखित मूलतः सिद्धांत न हों। भौगोलिक इकाइयों को प्रान्तों में बांटा जाए और वह प्रान्त ऐसे हों जिनमें मुसलमानों की संख्या अधिक हो। जैसे—भारत का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र और पूर्वी क्षेत्र। इन प्रान्तों को स्वायत्तता प्रदान की जाए।

इस प्रस्ताव में स्वतन्त्र एवं स्वायत्त पूर्वी बंगाल की कल्पना की गई थी और इस ऐतिहासिक प्रस्ताव में 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग नहीं किया गया था।

३ जून, १९४७ को माऊंट वेटन योजना के अन्तर्गत यह सुझाव रखा गया :

(क) बंगाल और पंजाब के बहुसंख्यक मुस्लिम प्रदेश अर्थात् पूर्वी बंगाल और पश्चिमी पंजाब।

(ख) सिन्ध प्रान्त तथा ब्रिटिश विलोचिस्तान।

(ग) आसाम में सिल्हट का जिला।

(घ) उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रान्त (इस भाग की जनसंख्या अपने भविष्य का स्वयं निर्णय करेगी)।

यह बात सर्वविदित है कि बंटवारे के बाद पाकिस्तान का जो रूप सामने आया वह एक भौगोलिक विषमता थी। पाकिस्तान के दोनों भाग भौगोलिक रूप में बारह सौ मील के फासले पर थे। सभ्यता, संस्कृति और भाषा की दृष्टि से दोनों भागों में बहुत अन्तर था। पश्चिमी पाकिस्तान में पंजाबियों और पठानों का प्रभाव अधिक था। पूर्व के भाग में बंगालियों का बोलबाला था। पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना का विचार था कि हिन्दुओं और मुसलमानों में उनकी संस्कृति और भाषा में आकाश-पाताल का अन्तर है, यही बात पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तानियों पर पूर्ण रूप से लागू होती है।

यही कारण है कि बंटवारे के समय इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों का विचार था कि पाकिस्तान की रचना का आधार राजनैतिक, आर्थिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से अवास्तविक है। पाकिस्तान का जन्म कटुता में हुआ। उसका आधार मतान्धता थी। इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान के दोनों भागों को एक इकाई में जोड़ा गया था। परन्तु लोलुप नेताओं ने इस्लाम धर्म की ओट में शोषण की प्रवृत्ति अपनाई।

पाकिस्तान के जन्म से हिन्दुओं और मुसलमानों में कटुता आई। इससे पूर्व दोनों जातियों में अपनत्व की भावना पाई जाती थी। परन्तु जिन्ना का विचार था कि यह जातियां अलग-अलग रहकर ही फल-फूल सकती हैं। इस बात में कोई वास्तविकता न थी।

बंटवारे के शीघ्र बाद ही दोनों देशों में बहुत रक्तपात हुआ। हजारों नर, नारी और बच्चे मौत के घाट उतार दिए गए। धर्म के रक्षकों ने तलवारें खींच लीं और निर्दोष लोगों का खून किया। धन लूट लिया गया, औरतों की इज्जत से खेला गया। हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए। पश्चिमी पाकिस्तान में हिन्दू अथवा सिक्ख जाति नहीं रह पाई। १९४८ के अन्त में पाकिस्तान में प्रवेश पाने वाले मुसलमानों की संख्या ६५,९९,००० थी। भारत में आने वाले गैर मुसलमानों की संख्या ५५,६३,००० थी। पूर्वी पाकिस्तान में भी ऐसा ही हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान के बन जाने से हिन्दू-मुस्लिम समस्या और टेढ़ी हो गई।

सर सिकन्दर हैयात खान ने कहा था कि पाकिस्तान की रचना हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान नहीं है। उसकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। गरीब और अमीर मुसलमान भारत को छोड़कर पाकिस्तान इसलिए गए थे कि वहां उन्हें स्वराज्य मिलेगा; सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक न्याय मिलेगा। परन्तु पाकिस्तान की राजनीति पर सैनिक तानाशाहों के छा जाने से उनकी आशाएं धूल में मिल गईं। उन्हें यह शीघ्र ही मालूम हो गया कि पाकिस्तान सामाजिक विषमता का घर है। शोषित और शोषक मुस्लिम ही थे। गरीब मुसलमानों का शोषण किया गया। इस दृष्टि से पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को अधिक कष्ट सहना पड़ा। पश्चिमी पाकिस्तानी की औसत आय पूर्वी बंगाल में रहने वाले आदमी से दुगनी थी।

शोषण का शिकार पूर्वी बंगाल

पश्चिमी पाकिस्तान के बाईस परिवारों ने और सैनिक शासकों ने मिलकर पूर्वी बंगाल का शोषण किया। वहां की धन-सम्पदा पश्चिमी पाकिस्तान के विकास में लगाई गई। पूर्वी पाकिस्तान की जनता द्वारा

कमाई गई विदेशी मुद्रा से पश्चिमी पाकिस्तान फलता-फूलता रहा।

पश्चिमी पाकिस्तानियों के लिए पूर्वी बंगाल सोने का अण्डा देने वाली एक मुर्गी थी।

हावार्ड विश्वविद्यालय के विद्वानों ने कहा था कि पश्चिमी पाकिस्तान में पूर्वी पाकिस्तान की अपेक्षा कम जनसंख्या होते हुए भी अधिक पूंजी लगाई जा रही है। पाकिस्तान की साठ प्रतिशत जनता पूर्वी भाग में रहती थी। जबकि उनपर किया जाने वाला केन्द्रीय खर्च १९५०-५१ में केवल बीस प्रतिशत था। केन्द्र की प्रशासनिक सेवा में पश्चिमी पाकिस्तानी चौरासी प्रतिशत थे जबकि पूर्वी पाकिस्तानी केवल सोलह प्रतिशत थे। पाकिस्तान की विदेश सेवा में पिचासी प्रतिशत पश्चिमी पाकिस्तानी थे और पन्द्रह प्रतिशत पूर्वी पाकिस्तानी थे। सेना में भी सोलह जनरल पश्चिमी पाकिस्तान के थे और केवल एक जनरल पूर्वी पाकिस्तान का था। अन्य सैनिकों का अनुपात पांच लाख व बीस हजार था। पाकिस्तान की 'पीपुल्स पार्टी' के जनरल सैक्रेटरी भुट्टो को यह मानना पड़ा कि पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान का एक उपनिवेश है।

वार्षिक बजट के विश्लेषण से पता चलता है कि पश्चिमी पाकिस्तान में सुरक्षा पर किया जाने वाला खर्च चालीस प्रतिशत था, जबकि पूर्वी पाकिस्तान पर सुरक्षा के लिए केवल बीस प्रतिशत खर्च किया जाता था। पश्चिमी पाकिस्तान के लिए असैनिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए किया जाने वाला खर्च साठ प्रतिशत था, जबकि पूर्वी पाकिस्तान में केवल चालीस प्रतिशत था। इस प्रकार हर क्षेत्र में पक्षपात की नीति अपनाई गई। बंगालियों को शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान नहीं की गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी पाकिस्तान के प्राइमरी स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या साढ़े चार गुना हो गई परन्तु पूर्वी पाकिस्तान में इस प्रकार की कोई उन्नति नहीं हुई। आंकड़ों से पता चलता है कि उच्च-शिक्षा के क्षेत्रों में भी बंगालियों को इन सुविधाओं से वंचित रक्खा गया।

बंगालियों को यह बात बहुत अखरी कि उन्हें राजनैतिक अधि-

कारों एवं अन्य प्रशासनिक स्वतन्त्रताओं से वंचित किया जा रहा है। उनके आत्मसम्मान को ठेस लगी। वह पाकिस्तान की रचना के समय अधिक आशावादी थे और जिन्ना में उस समय उनकी अटूट श्रद्धा थी। सन् १९४६ में कांग्रेस के विरुद्ध जिन्ना के आवाहन पर उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।

जब पाकिस्तान बना तो बंगालियों ने पूर्वी पाकिस्तान के लिए स्वायत्तता और प्रभुत्व-सम्पन्नता की मांग किए बिना ही पाकिस्तान में शामिल हो जाना उचित समझा। यद्यपि लाहौर अधिवेशन में इस प्रकार की व्यवस्था की गई थी, परन्तु उन्हें यह आशा थी कि अधिक संख्यक होने के कारण उनकी आवाज सुनी जाएगी। पूर्वी पाकिस्तान में प्राकृतिक साधन और जनशक्ति निस्संदेह अधिक थी।

पाकिस्तान के प्रशासन में पंजाबियों और पठानों ने भाग लिया और बंगालियों का विरोध किया। उच्च पदों पर पश्चिमी पाकिस्तानी थे। सेना में बंगालियों की हालत बुरी थी। बंगालियों के उन्नति के मार्ग रोक दिए गए। निराश बंगाली युवक इस प्रकार के पक्षपातपूर्ण नीति के विरुद्ध भड़क उठे। ढाका विश्वविद्यालय उनके आन्दोलन का केन्द्र था।

बंगालियों में असन्तोष के लक्षण प्रकट होते ही पश्चिमी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी गवर्नरों, मुख्य सचिवों, सैनिक कमाण्डरों की नियुक्ति का तांता बांध दिया। मार्च, १९५४ के प्रथम प्रान्तीय चुनावों में मुस्लिम लीग के प्रत्याशियों को हराकर बंगालियों ने विरोध प्रकट किया। फजलुल हक, सुहरावर्दी और भाशानी द्वारा संचालित मोर्चे ने तीन सौ नौ सीटों में से दो सौ निन्यानवें सीटें जीतीं। मुख्यमन्त्री नूरुल अमीन एक युवक विद्यार्थी से सात हजार वोटों से हार गया।

बंगाली राष्ट्रीयता की उमड़ती हुई लहर को देखकर पाकिस्तान के हुक्मरान बौखला उठे। मुस्लिम लीग का जादू अब रफूचक्कर हो चुका था। धर्म के नाम में अब वह शक्ति नहीं रह गई थी। केन्द्र को लोगों

की इच्छा के सामने झुकना पड़ा और संयुक्त मोर्चे के नेता फज़लुल हक को पूर्वी पाकिस्तान की प्रादेशिक सरकार बनाने का निमन्त्रण मिला। उस समय युवा शेख मुजीबुर्रहमान को उद्योग और वाणिज्य का मन्त्रालय मिला। अभी नये मन्त्रि-मण्डल ने कार्यभार संभाला ही था कि पश्चिमी पाकिस्तानी उद्योगपतियों और व्यापारियों ने दंगे करवाए जिनमें चार सौ से अधिक व्यक्ति मारे गए और एक हजार घायल हुए। ३० मई, १९५४ को गवर्नर जनरल गुलाम मोहम्मद ने एक आदेश द्वारा नया मंत्रि-मण्डल भंग कर दिया और पूर्वी पाकिस्तान में गवर्नर का शासन लागू कर दिया। दो महीने के अन्दर बंगालियों की प्रिय सरकार का खात्मा कर दिया गया।

सिकन्दर मिर्ज़ा को पूर्वी पाकिस्तान का गवर्नर नियुक्त किया गया। फज़लुल हक को नजरबन्द कर दिया गया। मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। भय और दण्ड का साम्राज्य छाया रहा। जुलाई, १९५४ के अन्त में १२९२ राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को जेल की सज़ा दी गई। फज़लुल हक के साथ अगानुपिकता का व्यवहार किया गया और उसे राजनीति से संन्यास ग्रहण करने पर विवश किया गया। बंगला राष्ट्रीयता को नीचे गिराने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किये गये।

पाकिस्तानी शासकों ने 'आबू हुसैन सरकार' के नेतृत्व में ढाका में एक कठपुतली सरकार बनाई। एक वर्ष तक वह प्रान्तीय असेम्बली का सामना न कर सकी। २२ मई, १९५६ को असेम्बली का अधिवेशन बुलाया गया परन्तु अध्यक्ष ने सरकार मिनिस्ट्री को बजट पेश करने की अनुमति नहीं दी। परिणामस्वरूप केन्द्र ने संविधान भंग कर दिया। चार दिन बाद सरकार मिनिस्ट्री की पुनःस्थापना हुई। इसी दौरान गवर्नर जनरल ने आदेश जारी कर आर्थिक कठिनाइयां दूर कर दी थीं। तीन मास पश्चात् विधान सभा फिर बुलाई गई। १३ अगस्त, १९५६ को इसका अधिवेशन होना था। कठपुतली सरकार के मुख्यमंत्री की मंत्रणा पर गवर्नर ने अधिवेशन से चार घण्टे पूर्व ही

आदेश जारी कर असेम्बली को अधिकारों से वंचित कर दिया। इसपर और भी असन्तुष्टि फैली और तीन दिन के अन्दर ही असेम्बली बुलानी पड़ी। तीन दिन के पश्चात् सरकार मिनिस्ट्री को त्यागपत्र देना पड़ा। बहुमत दल संयुक्त मोर्चे की सरकार बनाने की बजाय गवर्नर ने संविधान को 'ससपैण्ड' कर दिया।

जनता में रोष की लहर उठी, सभाएं हुईं। सरकार को फिर झुकना पड़ा और अवामी लीग की सरकार बनी। यह सरकार छः महीने तक चली। उसके बाद गवर्नर ने अवामी लीग की सरकार को बरखास्त कर दिया तथा आबू हुसैन सरकार के नेतृत्व में कठपुतली सरकार का गठन हुआ। मुख्यमंत्री का पद संभालने के बारह घण्टे के अन्दर आबू हुसैन को भी पद छोड़ना पड़ा। पाकिस्तान में भ्रष्टाचार और षड्यंत्र व्याप्त था। पूर्वी पाकिस्तान भी इससे अछूता कैसे रह सकता था। कई अवामी लीग के नेताओं को पैसे के बल पर खरीदा गया। सरकार मिनिस्ट्री के त्यागपत्र के बाद जो गवर्नमेंट बनी वह विश्वास प्राप्त न कर सकी।

२४ जून, १९५८ को संविधान को ताक में रख दिया गया। दो मास पश्चात् अवामी लीग को सरकार बनाने की अनुमति प्राप्त हुई। असेम्बली का अधिवेशन बुलाया गया। परन्तु अध्यक्ष आबू हकीम को पागल घोषित किया गया और अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। उपाध्यक्ष शहीद अली की अध्यक्षता में असेम्बली का अधिवेशन बुलाया गया। अधिवेशन आरम्भ होते ही मुक्केबाजी शुरू हुई। सदस्यों ने एक-दूसरे को गालियां दीं और कुर्सियां फेंकीं। उपाध्यक्ष ने हालात को नियंत्रण में रखने का भरसक प्रयास किया परन्तु वह बुरी तरह घायल हुआ।

सैनिक तानाशाही का दौर

अक्तूबर, १९५८ में सेनाओं के कमाण्डर-इन-चीफ अय्यूब खां

ने राज्यसत्ता छीनकर सम्पूर्ण पाकिस्तान में अपना निजी शासन लागू किया। उस समय मुक्तिदाता के रूप में उसकी प्रशंसा की गई। शोषित एवं निर्धन पाकिस्तानियों को नई आशा मिली। अय्यूब ने लोकतन्त्र की स्थापना व स्वस्थ प्रशासन का वचन दिया। जून, १९६२ को उसने मार्शल ला उठा लिया और 'बेसिक डैमोक्रेसी' की योजना लोगों के सामने रखी। उसने १६६० से अधिक सरकारी अफसरों को भ्रष्टाचार के आरोप में सेवा से मुक्त कर दिया। काला बाजार, तस्करी व जमाखोरी के आरोप में सैकड़ों राजनैतिक कार्यकर्ता और व्यापारी जेल में ठूस दिए गए। इन कार्य-वाहियों का पूर्वी पाकिस्तान पर कोई असर नहीं हुआ। उनका शोषण उसी प्रकार होता रहा। पूर्वी पाकिस्तान के प्रति अय्यूबशाही का रवैया भी वैसा ही रहा जैसा पहले शासकों का था। कमाण्डर-इन-चीफ होने के नाते उसने बंगालियों को सेना में घुसने नहीं दिया। अय्यूब ने अपनी पुस्तक 'फ्रैण्डस नॉट मास्टरज़' में बंगालियों को द्वितीय दर्जे का नागरिक स्वीकार करते हुए लिखा है—"वे लोग स्व-तन्त्रता के अनुरूप मनोवैज्ञानिक तौर पर तैयार नहीं हो सके थे।" घृणा प्रकट करते हुए अय्यूब लिखते हैं कि वे लोग छोटे कद के व भद्दे दिखाई देने वाले हैं। इतनी घृणा तो ब्रिटिश शासकों ने अपने अधीन लोगों के प्रति भी नहीं दिखाई थी।

इतनी घृणा होने के बावजूद भी कई ब्रिटिश और अमरीकी पर्यवेक्षकों ने अय्यूब खां को पूर्वी पाकिस्तान के प्रति हमदर्दी का रवैया अपनाने का सम्मान दिया है, इससे अधिक झूठ और क्या हो सकता है। उसका बंगालियों के प्रति बाहरी तौर पर जो दृष्टिकोण था, केवल दिखावा मात्र था। बंगाली आकांक्षाओं के प्रति सम्मान दिखाने के लिए उसने एक बंगाली—मुनीम खां—को गवर्नर नियुक्त किया। वास्तव में अय्यूब बंगाल में हुए आन्दोलनों को कुचलने में कठोरता से काम लेता था। सत्ता छीनने के शीघ्र बाद ही उसने पूर्वी पाकिस्तान के लोकप्रिय किसान नेता मौलाना भाशानी को गिरफ्तार किया और

कई वर्षों तक उसे जेल में रखा। अपने चमचों की असैनिक व सैनिक स्थानों पर नियुक्तियां कर उसने बंगाली विद्यार्थियों को सिर उठाने नहीं दिया। ऐसा करने के लिए ढाका विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के रूप में गुण्डों को शामिल किया गया। वे गुण्डे विद्यार्थी अपने पास चाकू, रिवाल्वर और बन्दूकें रखते थे। सरकार द्वारा मनोनीत नेशनल स्टूडैण्ट्स फेडरेशन के नेता को आदेश था कि वह बंगाली विद्यार्थियों को ऐसा पाठ पढ़ाये कि वे जीवन-भर न भूल सकें। उसने सरकारी संरक्षकता में कत्ल व बलात्कार किये।

शेख मुजीबुर्रहमान ने सुहरावर्दी की मौत का आरोप अय्यूब पर लगाया था। शेख ने कहा था कि सुहरावर्दी का स्वास्थ्य मौत की रात को बिल्कुल ठीक था। सुहरावर्दी की मौत बेरूत के एक होटल में रहस्यमय हालात में हुई।

शेख को अगरतला षड्यंत्र में फंसाया गया और उन्हें अनेक प्रकार की यातनाएं दी गईं, यह सर्वविदित है। इतना ही कहना काफी होगा कि अय्यूब ने बंगालियों के लोकप्रिय नेता पर गन्दे व छिछले आरोप लगाये। उस तानाशाह को तिरस्कृत होकर गद्दी छोड़नी पड़ी।

फील्ड मार्शल आगा मुहम्मद याह्या खां की सैनिक तानाशाही

याह्या खां ने अय्यूब से देश की बागडोर छीनी। गद्दीनशीन होने पर उसने भी जनता को झांसा देते हुए वचन दिया कि वह लोकतंत्र की स्थापना करेगा। २५ वर्षों में प्रथम बार पाकिस्तान में आम चुनाव हुआ, परन्तु अवामी लीग के नेता शेख मुजीब को जब बहुमत मिला तो वह सैनिक तानाशाह घबरा गया। २५ मार्च, १९७१ को उसने और जनरल टिक्का खां ने पूर्वी बंगाल के बुद्धिजीवी वर्ग को मौत के घाट उतारना शुरू किया। राजनैतिक कार्यकर्ता,

विद्यार्थी, लेखक, अध्यापक और डाक्टरों का योजनाबद्ध सफाया किया जाने लगा। 'ईस्ट पाकिस्तान रेजिमेंट' भी उस नापाक जुल्म का शिकार बनी। लगभग तीस लाख निर्दोष नर-नारी और बच्चों का कत्ल किया गया। एक करोड़ बंगाली जनता को भारत में शरण लेनी पड़ी। साढ़े सात करोड़ जनता पर अत्याचार ढाये गये। मृत्यु-दायिनी गोलियों की बौछार लाखों बंगालियों को मौत के घाट उतारने लगी। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण पूर्वी पाकिस्तान में जनता ने आततायिओं का विरोध किया। घोर अत्याचार और कत्लेआम के विरुद्ध बंगाली जनता ने मुकाबला किया।

पाकिस्तान का विघटन और बंगला देश का उदय उन लोगों की आशाओं की पूर्ति है जो स्वतन्त्रता के लिए तड़प रहे थे। विभाजन से पहले मुस्लिम लीग के कट्टरपंथियों ने "इस्लाम खतरे में है" का नारा लगाकर मुसलमानों को गुमराह किया और अब धर्म-निरपेक्ष भारत ही ने पश्चिमी पाकिस्तानी मुसलमानों द्वारा प्रताड़ित बंगाली मुसलमानों को बचाया है। जिहाद का नारा अधिक देर तक मुसल-मानों को गुमराह नहीं कर सकता। इस्लाम के नाम को इस्तेमाल करते हुए कोई जाति कब तक अत्याचार कर सकती है। पाकिस्तान के सैनिक शासकों ने घृणित अत्याचारों द्वारा इस्लाम के नाम को धब्बा लगाया है। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए और निर्दोष व्यक्तियों का शोषण करने के लिए उन्होंने इस्लाम का नाम इस्तेमाल किया है।

पाकिस्तानी पत्रकार एवं संवाददाता श्री एनथोनी मसकरहंस ने, भी अपनी पुस्तक 'दी रेप आफ बंगला देश' में भी इस बात का उल्लेख किया है। उसने अपने निजी अनुभवों के आधार पर यह लिखा है कि अरब और दूसरे मुस्लिम लोग इस सत्य को जान लें कि यह युद्ध इस्लाम के विरुद्ध नहीं है। उसका कहना है कि पश्चिमी पाकि-स्तान के पंजाबी सिपाही बंगालियों की इस्लाम भक्ति को सन्देह की दृष्टि से देखते थे और उन्हें काफिर (नास्तिक) कहते थे। जब कि

ढाका में एक हजार मस्जिदें हैं। मैंने बंगाली मुसलमानों को पश्चिमी पाकिस्तान के मुसलमानों से अधिक निष्ठावान पाया है। पूर्वी पाकिस्तान में नशाबन्दी को कठोरता-से लागू किया गया है। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में शराब की दुकानें शुक्रवार (जुम्मा) के दिन भी खुली रहती हैं और कराची और लाहौर में जो विदेशी फिल्में और कैबरे नृत्य होते हैं यदि वह ढाका या चटगाँव में हों तो जनता क्रोधित हो उठेगी। रमजान के महीने में भी पश्चिमी पाकिस्तान की अपेक्षा पूर्वी पाकिस्तान में रोजे रखने का नियम अधिक कठोरता से पालन किया जाता है। शेख मुजीबुर्रहमान ने नवम्बर, १९७० में चुनाव आन्दोलन में भाग लेते हुए भी प्रतिदिन रोजा रखा। ढाका के निकट धानमंडी में जब मैं उनसे मिलने गया तब मुझे इस बात का पता चला था। परन्तु रावलपिंडी और करार्चा के मित्रों के साथ मेरा और ही अनुभव था।

एक सप्ताह पूर्व मैंने वहां एक पाकिस्तानी मित्र के साथ दोपहर का खाना खाया, एक अन्य मित्र के साथ शराब पी, फिर भी मुजीब और उनके अनुयायियों को काफिर करार किया गया।

पूर्वी पाकिस्तान के व्हिस्की पियक्कड़ एवं सुख भोगी गवर्नर मलिक फिरोज खान नून ने बंगालियों को आधा मुसलमान कहा था। तब सीधे-सादे तथा ईश भगत बंगालियों में इसकी कटुतापूर्ण प्रतिक्रिया हुई। तब पंजाबी शासकों ने अपने तर्क को सही बताते हुए यह कहा था कि यह लोग अपने चूज़ों को हलाल नहीं करते थे। इस्लाम के प्रति उनकी क्या अजीब धारणा थी। बंगला देश का युद्ध अन्याय एवं दासता के विरुद्ध युद्ध है। अधर्म के विरुद्ध धर्म का युद्ध है। यह युद्ध न केवल बंगला देश के दलदली खेतों में लड़ा गया बल्कि भारत-पाकसीमा पर भी लड़ा गया। पाकिस्तान का वह रूप खण्डित हो चुका है जिसकी कल्पना कभी जिन्ना ने की थी। पाकिस्तान के व्यक्ति ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण संस्थाएं भ्रष्टाचार के गर्त में पड़ी हुई हैं। क्या उस देश की पथभ्रष्ट जनता का मनोबल ऊंचा रह सकता है?

मुक्तिवाहिनी का जन्म

पच्चीस और छब्बीस मार्च, १९७१ की रात को मुक्तिवाहिनी का जन्म हुआ। उसी रात को बंगालियों पर कहर टूट पड़ा। तब तक बंगालियों का मुक्तिवाहिनी संगठित करने का कोई इरादा न था। मुक्तिवाहिनी के कर्नल उसमानी ने उन्नीस मार्च को शेख मुजीबुर्रहमान के निर्देश पर बंगाली आफिसरों से मुलाकात करने की कोशिश की। कर्नल उसमानी ने एक विश्वसनीय मेजर के द्वारा एक गुप्त विज्ञप्ति भेजी जिसमें कहा गया था कि राजनीति से दूर रहो, हथियारों को मत डालो और अत्याचार किए जाने पर मुकाबला करो। यदि पाकिस्तानी केवल कुछ राजनीतिक नेताओं को पकड़ते तो बंगाली सेना और पुलिस तटस्थ रहती परन्तु जब यह समाचार पहुंचा कि पाकिस्तानी सेना बंगाली बुद्धिजीवियों को मौत के घाट उतारने पर तुली हुई है तब बंगाली एक होकर अत्याचार का सामना करने के लिए आगे बढ़े और उसी रात पाकिस्तानी सेना में मुक्तिवाहिनी का जन्म हुआ। पाकिस्तान में इस बात का सन्देह पहले से ही था। बंगाली सैनिक अफसरों को स्थानान्तरित किया गया था और ऐसे कार्यों पर लगाया गया था जिससे युद्ध और हथियारों का वास्ता बहुत कम था। राष्ट्रवादी बंगाली सैनिक अफसरों ने कुछ ही दिनों में दस हज़ार प्रशिक्षित सैनिक एकत्रित कर लिए और अवामी लीग के एक नेता कर्नल उसमानी को उन्होंने अपना कमाण्डर-इन-चीफ बनाया। मुक्तिवाहिनी अलग-अलग समूहों का एक समुदाय है जिसका दिग्दर्शन मुजीब की पार्टी के चुने हुए सदस्य कर रहे थे। वे व्यक्ति हथियार तो नहीं चला सकते थे परन्तु निर्णय लेने में समर्थ थे। मुक्तिवाहिनी में युद्ध लड़ने वाले वे सैनिक हैं जो पहले ईस्ट बंगाल रेजिमेंट, ईस्ट पाकिस्तान राइफल्स और पुलिस में थे। मुक्तिवाहिनी में अनसार और मुजाहिद भी हैं जिनको नगरों में

शान्ति स्थापना के लिए होमगार्ड का प्रशिक्षण दिया गया था। पच्चीस मार्च की प्रलय से बचे हुए वे दस हजार व्यक्ति पाकिस्तानी अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए उठे। मुक्तिवाहिनी में वे नवयुवक भी थे जिनकी आयु पन्द्रह से बीस वर्ष की थी। इस समुदाय को राजनीति की विचारधारा ही प्रभावित कर सकती है। पीकिंग समर्थक और मास्को समर्थक कम्युनिस्ट पार्टी के दो अलग-अलग ग्रुप थे। पीकिंग समर्थक ग्रुप को 'भाशानी ग्रुप' और मास्को समर्थक ग्रुप को' मुजफ्फर ग्रुप' के नाम से पुकारा जाता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी नेताओं का ऐसा भी समुदाय, जिनको हथियारों का प्रशिक्षण दिया गया था, वे अपने आपको मुजीबवाहिनी कहते हैं। कर्नल उसमानी के अनुसार मुक्तिवाहिनी की संख्या पचास हजार से साठ हजार के बीच थी जिसको शीघ्र ही एक लाख पचास हजार तक किया जाना था। इसमें तीन हजार से अधिक हिन्दू देशभक्त थे। बम्ब और डाइनामाइट से तोड़-फोड़ करने में बंगाली पीछे न रहे। ब्रिटिश राज्य के समय में भी बंगाली अंग्रेज लोगों का कत्ल करने और तोड़-फोड़ करने में प्रथम रहे थे। पाकिस्तान की सेना में अधिकतर पंजाबी और पठान हैं, जो बंगालियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। ईस्ट बंगाल रेजिमेंट और ईस्ट पाकिस्तान राइफल्स में बंगाली थे। परन्तु तीनों सेनाओं में केवल एक लैफ्टीनेण्ट जनरल बंगाली था। पाकिस्तान की वायु और जल सेना में इस पद के समान पद पर कोई भी बंगाली अफसर न था। बंगाली लोग शान्तिप्रिय हैं। परन्तु पठानों, बिलोचियों और पंजाबियों के अत्याचारों ने उनको सैनिक बना दिया था। पाकिस्तानी सैनिकों ने बच्चों और औरतों तक को नहीं छोड़ा। बंगला देश के यह निर्दोष व्यक्ति अपने प्राणों की रक्षा के लिए कमर कसकर तैयार हो गए थे। उन लोगों का पक्का इरादा था कि वह पाकिस्तानी आततायियों को बाहर निकालकर ही दम लेंगे।

स्वतन्त्रता सेनानियों की संख्या बढ़ती ही गई। दो महीनों के बाद मुक्ति फौज का नाम मुक्तिवाहिनी रखा गया। वह लोग पुलिस

की तरह छिपकर आक्रमण करने लगे थे। मुक्तिवाहिनी में केवल स्थल सेना ही नहीं थी वल्कि जल और वायु सेना भी थी। वंगला देश की वायु सेना का संचालन ग्रुप कैप्टन खोन्दरकर कर रहे थे। उन्हें यह आशा थी कि उनके पास शीघ्र ही सैनिक विमान होंगे।

मुक्तिवाहिनी को प्रशिक्षण देने के लिए भारत-वंगला देश सीमा पर प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए और उनको गुरिल्ला युद्ध नीति का प्रशिक्षण दिया गया। वंगालियों को आशा थी कि विश्व शक्तियां उनकी रक्षा के लिए आगे बढ़ेंगी। पाकिस्तान ने टैंकों, मशीनगनों और वम्बों से युक्त साढ़े चार डिवीजन सेना और झोंक दी। मुक्तिवाहिनी के सैनिक छिपकर उन पर हमला करने लगे और पाकिस्तानी सेना को मजबूर कर दिया कि वे गांवों तक फैल जाएं। सूचना लाइनों को तोड़ दिया गया। पाकिस्तानी सिपाहियों को और उनकी छोटी-छोटी टुकड़ियों को घेरकर मारा गया और उनसे चीनी व अमेरिकी हथियार छीने गए। सैनिकों के पास या तो अपने हथियार थे या दुश्मन से छीने हुए हथियार थे। विदेशों में रहने वाले वंगालियों ने धन एकत्रित करके और हथियार खरीदकर मुक्तिवाहिनी को दिए। परन्तु फिर भी मुक्तिवाहिनी को हथियारों की कमी बड़ी खलती रही। मुक्तिवाहिनी के सैनिकों को लाइनों से ट्रेन गिराना, सुरंगें विछाना आदि की ट्रेनिंग दी गई। मुक्तिवाहिनी ने कुछ सफलताएं अवश्य प्राप्त कीं। सितम्बर के अन्त तक पच्चीस हजार तक सिपाहियों का सफाया किया गया था। इक्कीस जलपोत डुवोये जा चुके थे। छः सौ पुलों को उड़ाया जा चुका था, रेलों, सड़कों व सूचना लाइनों को वरवाद किया गया। वंगला देश में रेलों का चलना लगभग समाप्तप्राय: हो गया था।

भारतीय संसद की सहानुभूति

भारत एक लोकतन्त्रीय गणराज्य है। वंगला देश में हो रहे अत्याचारों को देखकर यहां की जनता में पाकिस्तान के प्रति रोष की लहर

फैल गई। ३१ मार्च, १९७१ को भारतीय संसद के दोनों सदनों ने श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा रखे गए प्रस्ताव को पास कर दिया। इसमें कहा गया था कि भारतीय बंगला देश की आजादी की लड़ाई में उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं। उसमें यह मांग की गई थी कि सैनिक शक्ति के प्रयोग को पाकिस्तान रोक लगाए और निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करना बन्द करे। उस प्रस्ताव में विश्व-राष्ट्रों और सरकारों से कहा गया था कि वह पाकिस्तानी हुक्मरानों पर दबाव डालकर बंगला देश में हो रहे नरसंहार को बन्द करने के लिए कहें।

हर रोज अत्याचारों की सूचनाएं भारत पहुंच रही थीं और भारतीय जनता का धैर्य टूट रहा था। भारतीय जानते थे कि पाकिस्तान ने बंगला देश को एक उपनिवेश के रूप में देखा है। पाकिस्तानी अत्याचारों का परिणाम यह हुआ कि अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए हजारों नर-नारी और बच्चे पैदल चलकर प्रतिदिन भारत की शरण लेने लगे। उनका तांता टूटने वाला न था। यह क्रम बढ़ता ही गया। उनकी दुःख की कहानियों को सुनकर रोना ही आता था। वह शरणार्थी भारत की शरण में आए थे। घर-बार, धन-सम्पत्ति आदि छोड़कर लाखों परिवार शरणार्थी कैम्पों में आकर रहने लगे। शायद ही कोई परिवार के सदस्य पूरे आए हों। इसमें अल्पसंख्यक हिन्दू शरणार्थियों की दशा बुरी थी। वे पाकिस्तानी सिपाहियों के हाथों साम्प्रदायिकता के शिकार बने।

बंगला देश में लूटपाट और मार-धाड़ का बाजार गर्म था। गांवों के गांव जला दिए गए। गांवों और नगरों की जनता को समूहों में इकट्ठा कर अथवा पंक्तिबद्ध करके पाकिस्तानी सिपाहियों द्वारा गोली का निशाना बनाया गया। औरतों की इज्जत को लूटा गया। युवा लड़कियों को ट्रकों में भरकर सैनिक शिविरों को भेजा गया। बंगला देश का कोई ऐसा नगर न होगा जो पाकिस्तानी अत्याचारों से बच सका होगा। १९७१ के अन्त तक शरणार्थियों की संख्या एक करोड़

के आसपास होने का अनुमान था। इंग्लैंड के समाचार-पत्र टाइम ने लिखा था कि मार्च, १९७२ तक शरणार्थियों पर किया जाने वाला खर्च ८३ करोड़ डालर होगा। भारत के लिए यह एक आर्थिक बोझ था परन्तु इससे भी अधिक शरणार्थियों के आ जाने से और अधिक समस्याएं पैदा हो गई थीं। भारत के पूर्वी भाग में बंगला देश से आए शरणार्थियों को बसाया गया था। इससे साम्प्रदायिक झगड़े फैलने का डर था। लाखों बेकार शरणार्थी कब तक हाथ पर हाथ धरे बैठ सकते थे। उनके लिए काम ढूंढना, उनको रोजगारी के मौके देना, उनकी आवास-सम्बन्धी समस्या का हल करना आदि अनेक ऐसे प्रश्न थे जिनका भारत के पास कोई समाधान न था।

उन भागों में शरणार्थियों के आने से मजदूरी की दरें घट गईं। भारतीय मजदूरों की आमदनी पर भी असर पड़ा और दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं महंगी हो गईं। विशेषकर खाद्य पदार्थ और मिट्टी के तेल के भाव बढ़ गए। शरणार्थियों को अधिकतर स्कूल भवनों में ठहराया गया था। इसलिए स्कूलों और कालिजों में अध्यापन-कार्य ठप्प हो गया।

शरणार्थी कैम्पों का प्रशासन भी अपने-आप में एक समस्या थी। प्रत्येक कैम्प में आवश्यकता से अधिक शरणार्थी परिवार थे। छप्परों, त्रिपालों और तम्बुओं का अभाव पड़ गया। इतनी बड़ी संख्या के शरणार्थियों के कैम्पों का प्रबन्ध करने के लिए असीम धैर्य की आवश्यकता थी। शरणार्थी शिविरों में स्थानाभाव के कारण हजारों शरणार्थियों को खुले आसमान के नीचे खेतों, मैदानों और सड़कों पर रहना पड़ा। उनकी आवास-सम्बन्धी समस्या को तत्काल हल करना असम्भव था। परन्तु शरणार्थियों के आने का क्रम चलता ही गया।

घायल और बीमार नर-नारी और बच्चों को डाक्टरी सहायता और सेवा की आवश्यकता थी। भारतीय डाक्टर और नर्सें दिन-रात काम में जुटे रहे। भारत और अन्य देशों ने दवाइयों की सहायता की। शिविरों में हस्पताल खोले गए। इसके बावजूद भी हैजा, निमोनिया, ठण्ड और थकावट के कारण हजारों व्यक्ति मर गए। मृतकों में बच्चों

की संख्या अधिक थी।

उधर पूर्वी बंगाल में पाकिस्तानी तानाशाह का दमन चक्र चलता ही रहा। वे लोग बंगाली नस्ल को समाप्त करने पर तुले हुए थे। अमेरीका और चीन से हथियार पाकर पाकिस्तानी जनरल शक्ति के मद में चूर थे। उन्होंने योजनाबद्ध कत्लेआम किया। विशेषकर बुद्धिजीवी वर्ग का नामोनिशान मिटा देने के लिए उनको सामूहिक रूप में गोली दाग दी। इससे सैनिक तानाशाहों के कई प्रकार के उद्देश्य पूरे होते थे। उन्होंने न केवल उग्र बंगालियों का ही सफाया किया बल्कि पूर्वी बंगाल की जनसंख्या ही कम कर दी। इसके साथ ही साथ भारत की आर्थिक स्थिति को भी खतरा उत्पन्न हो गया।

जोर, जुल्म और दरिंदगी

बंगला देश की आबादी को लगातार समाप्त किया जा रहा था। बारिसल, खुलना, जैसोर, मैमनसिंह, सिल्हट, कौमिल्ला, चिटगांव, दिनाजपुर, रंगपुर के देहातों में पाकिस्तानी सेना ने आतंक मचा रखा था ताकि किसान अपना घर-बार छोड़कर भारत में भाग जाएं। इन अत्याचारों का समाचार विदेशी संवाददाताओं ने भी अपने पेपरों में छापा। बंगालियों पर हुए अत्याचारों की कहानियां पढ़कर ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, अमेरिका आदि देशों की जनता ने शरणार्थियों के लिए दवाइयां, कम्बल, दूध का पाउडर, विस्कुट व अन्य प्रकार का सामान भेजा। पाकिस्तानी शासकों ने कुछ विदेशी संवाददाताओं को ढाका जाने के लिए इसलिए इजाजत दी थी ताकि वे सैनिक शासन के पक्ष में समाचार दे सकें। पाकिस्तानी अधिकारियों ने विदेशी संवाददाताओं से बहुत कुछ छिपाने की कोशिश की। परन्तु स्थानीय आबादी की मदद से उन्होंने झाड़ियों में छिपकर देखा कि रात के समय सेना नौजवानोंको ट्रकों मेंभरकर(आंखों पर पट्टी और हाथ पीछे बांधकर) छावनी की ओर ले जा रही थी। उन्होंने कई नौजवानों की लाशें नदी

में वहती देखी थीं जिनके शरीर पर गोलियों के निशान भी न थे। अवामी लीग के समर्थकों को ढूंढ़-ढूंढ़ कर निकाला गया और उनकी जायदाद लूट ली गई। बंगाली व्यापारियों पर भी हमले हुए। उनसे लाखों रुपयों की मांग की गई। सैनिक अधिकारियों को पैसा न देने पर उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। कई व्यक्तियों से उनकी वेटियों और वीवियों की मांग की गई।

मुजीबुर्रहमान पाकिस्तानी जेल में

जव याह्या खां और शेख मुजीबुर्रहमान की वात का सिलसिला टूट गया था और श्री भुट्टो और याह्या खां वापिस पश्चिमी पाकिस्तान चले गए थे, तव धोखे से मुजीव को गिरफ्तार किया गया और पश्चिमी पाकिस्तान भेज दिया गया। याह्या ने मुजीव की छः सूत्री कार्यक्रम की मांग ठुकरा दी थी। वातचीत को भंग करने में भुट्टो का भी हाथ कम न था। पश्चिमी पाकिस्तान की 'अटल' जेल में मुजीबुर्रहमान को मनाने के लिए याह्या खां ने हाथ-पांव मारे ताकि वह पूर्वी बंगाल में सत्ता के स्थानान्तरण पर किसी समझौते पर राजी हो जाएं। याह्या खां ने भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय सुहरावर्दी की बेटी वेगम सुलेमान के द्वारा शेख मुजीव को सन्देश भिजवाया था। परन्तु शेख का कहना था कि वह अपनी पार्टी के अन्य नेताओं से मिलकर ही किसी निर्णय पर पहुंच सकते हैं। शेख मुजीब पाकिस्तानी तानाशाहों की धमकियों के आगे नहीं झुके और न ही सत्ता का लोभ उन्हें अपने पथ से डिगा सका। पाकिस्तानी अधिकारियों ने शेख मुजीव पर देशद्रोह का गम्भीर आरोप लगाया। यह सर्वविदित है कि मुकदमा चलाए जाने से पूर्व ही सैनिक तानाशाह याह्या ने वार्तालाप भंग होने पर शेख को देश-द्रोही घोषित किया था। एक सैनिक अदालत का गठन हुआ और शेख पर देशद्रोह का मुकदमा चला। पाकिस्तान का कोई भी वकील मुजीव

का पक्ष लेने को तैयार न था। भला कोई वकील सैनिक अधिकारियों

के रोष का शिकार क्यों बनता। सैनिक अदालत से न्याय की आशा करना व्यर्थ था। पाकिस्तानी पत्रकारों व संवाददाताओं को धमकियां देकर गवाह के रूप में खड़ा किया गया और शेख मुजीब के भाषणों को तोड़-मरोड़कर गवाहियां दिलवाई गईं। ब्रिटेन के एक प्रसिद्ध वकील ने शेख से मिलने के लिए पाकिस्तानी अधिकारियों से इजाजत मांगी। परन्तु पाकिस्तानी अधिकारियों ने उसकी मांग का उत्तर तक न दिया। बाद में शेख मुजीब के कैदखाने को भी गुप्त रखा गया। कई मास तक यह पता तक न चल सका कि वह जिन्दा भी या हैं सैनिक शासकों की गोली का शिकार हो गए हैं। बड़ी आश्चर्य कीबात तो यह थी कि सैनिक तानाशाह याह्या ने जिस व्यक्ति को पाकिस्तान का भावी प्रधान मंत्री कहा था, पाकिस्तान में उसी पर ही देशद्रोह का मुकदमा चलाया जा रहा था। विश्व के कानून विशेषज्ञ पाकिस्तानियों की इस नीति पर आश्चर्यचकित थे। विश्व के अन्य कानून विशेषज्ञों ने मुजीब की ओर से पैरवी करने की आज्ञा मांगी, परन्तु पाकिस्तानी हुकमरानों ने उनकी मांग का कोई उत्तर न दिया।

बंगला देश के शरणार्थियों की बाढ़

पूर्वी बंगाल से आने वाले शरणार्थियों को कहां रखा जाय यह एक कठिन समस्या थी। कई कारणों से प्रान्तीय सरकारें शरणार्थियों को बसाने में अधिक उत्सुक नहीं दिखाई देती थीं। उन्हें आशंका थी कि उनके राज्यों में शरणार्थियों के आ जाने से आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक तनाव उत्पन्न हो जाएगा। फिर भी पश्चिमी बंगाल, असम, मेघालय व त्रिपुरा बंगला देश के शरणार्थियों की बाढ़ में आ ही गए। यह कहना संगत होगा कि ये सीमावर्ती राज्य बंगला देश के शरणार्थियों की बाढ़ में डूबने लगें। असल में आम ख्याल यह था कि पश्चिमी पाकिस्तान में याह्या खां की सरकार बड़े देशों की तरफ से भारी

दबाव और अंदरूनी आर्थिक कठिनाइयां बढ़ जाने से शेख मुजीब के

नेतृत्व वाली अवामी लीग के साथ किसी राजनीतिक समझौते की कोशिश कर रही है, हालांकि यह सभी जानते थे कि पूरी आजादी से किसी कम चीज पर मुक्ति फौज जो पश्चिमी पाकिस्तान की हमलावर फौजों के खिलाफ जिंदगी और मौत की लड़ाई लड़ रही थी, राजी नहीं होगी।

एक विचार यह भी था कि याह्या खां बंगला देश की तहरीक 'उग्रवादी नेतृत्व' में चले जाने से पहले मुजीब जैसे नरम पंथी नेता के साथ कोई समझौता कर पश्चिमी पाकिस्तान में अपनी फौजी मण्डली को और ज्यादा मुसीबत में पड़ने से बचा सकते थे। नेशनल अवामी पार्टी के नेता मौलाना भाशानी ने अपनी पार्टी के लोगों तथा बंगला देश की दूसरी तमाम वामपंथी ताकतों से कहा था कि सर्वदलीय संग्राम समितियां कायम की जाएं जो पश्चिमी पाकिस्तान के खिलाफ लंबी लड़ाई चलाने के लिए आम जनता को लाभान्वित करेंगी।

शेख ने उत्पादन के साधनों के समाजीकरण के एक कदम के रूप में बैंकों, बीमा कंपनियों, जूट निर्यात, बुनियादी उद्योगों आदि के राष्ट्रीयकरण और उत्पादन साधनों के समाजीकरण का ऐलान भी किया था।

७ मार्च, १९७१ को मुजीब ने यह निर्देश भी जारी किया था कि अगर अवामी लीग के नेता गिरफ्तार कर लिए जायें या उनका सफाया कर दिया जाए तो जनता को संग्राम समितियां कायम करनी चाहिए, फौज से सहयोग करने से इनकार कर देना चाहिए, रेल पथ, पैदल मार्ग, परिवहन व्यवस्था आदि ठप्प कर देना चाहिए और हर गांव को प्रतिरोध के किलों में बदल देना चाहिए।

बंगला देश को क्रान्तिकारी समाजवादी देशों की मदद न मिलने से घोर निराशा हुई। चीन के रवैये से बंगला देश की जनता में बड़ी कडुवाहट बढ़ी।

उधर शरणार्थियों की बाढ़ बढ़ रही थी। असमी बंगालियों को पसंद नहीं करते थे। खासिया और गारवा आदिवासियों को आशंका

थी कि शरणार्थी जल्द ही उन पर छा जायेंगे। प्रशासन की सारी जिम्मेवारी केन्द्र पर छोड़ दी गई थी। बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रदेश में भी शरणार्थियों को भेजने का निर्णय लिया गया था।

भारत की दुविधा

बंगला देश की भयानक घटनाएं भारत सरकार के सामने दुविधा पैदा कर रही थीं। लगभग ३ करोड़ रुपया रोज शरणार्थियों पर खर्च हो रहा था। प्रश्न यह था कि क्या हम पूर्वी क्षेत्र का आर्थिक और सामाजिक ढांचा धीरे-धीरे बैठ जाने देंगे या क्या हम ऐसे रास्ते अपनायेंगे कि बंगला देश सरकार की सीधी मदद की जाय और वह इलाके आजाद करा लें ताकि इन शरणार्थियों को वहां इज्जत के साथ वापस जाने का मौका मिल सके। प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने संसद में घोषणा की थी कि अगर दुनिया मानव इतिहास में सबसे भयानक कत्लेआम पर चुप रही तो भारत को अपनी सुरक्षा और आर्थिक हित में मजबूरन कुछ कदम उठाने पड़ेंगे। इशारा स्पष्ट था।

इसी सिलसिले में हमारे विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह छः बड़ी राजधानियों के दौरे पर गये। शरणार्थियों को जो कुछ सहायता के रूप में मिला वह ऊंट के मुंह में जीरे के समान था। तीसरे, दुनिया का रवैया सबसे ज्यादा दुखदायी था। अरब देशों की सरकारों ने बंगला देश की साढ़े सात करोड़ जनता के बहादुराना संघर्ष के प्रति दुश्मनी का रवैया अपनाया था। उनमें नब्बे प्रतिशत सरकारें उसी इस्लाम धर्म की होने का दावा करती थीं जो पूर्व बंगाली हैं। कुछ तो खूनी याह्या सरकार को हथियार भेज रही थीं ताकि वह और कत्लेआम करे।

पिछले वर्षों प्रगतिशील भारत मिस्र और दूसरे अरब देशों का साथ देता रहा था जो दस लाख फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए संघर्ष कर रहे थे। हमारे देश में तो इससे कहीं अधिक शरणार्थी आ गये थे। उनका मौन भारत के लिए दुखदायी सिद्ध हुआ। इस्राइल के व्यापार दूत की विदाई और नये दूत के आगमन पर दिल्ली में लाखों

उड़ीं, उससे पता चलता था कि अरब और मिस्र का रवैया उचित नहीं है।

शर्मनाक मौन

पश्चिमी देशों ने पाकिस्तान वनवाया और उसे गर्दन तक लैस किया। वे उसे अन्धाधुन्ध हथियार देते रहे। अमरीका ने यह हथियार साम्यवाद को रोकने के लिए दिए थे। वही हथियार वंगला देश की निर्दोष जनता का कत्लेआम करने के काम में आये और उस पर भी अमेरिका मौन साधे रहा। अमेरिका सरकार का रवैया खेदपूर्ण रहा। वहां के समाचार-पत्रों ने पाकिस्तान को हथियारों से लैस करने की नीति की निन्दा की। वाशिंगटन में अमेरिकी अधिकारियों ने विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह को आश्वासन दिया कि अमेरिका ने पाकिस्तान को हथियार देने वन्द कर दिए हैं। स्वर्णसिंह अभी वापस लौटे ही थे कि समाचार मिला कि हथियारों से भरे दो जलपोत पाकिस्तान की ओर रवाना हो चुके हैं।

सोवियत प्रेसिडेंट पोदगोर्नी ने शुरू में पाकिस्तान के राष्ट्रपति को जो संदेश भेजा था उससे स्पष्ट था कि बंगला देश में हो रहे नरसंहार से सोवियत नेता चिन्तित थे।

१९७० में भारत में कई नेता शायद बंगला देश में स्वायत्त सत्ता के आन्दोलन के पक्ष में इसलिए नहीं थे क्योंकि उनका विचार था कि ऐसी बीमारी भारत के पड़ोसी राज्यों और खासकर पश्चिमी बंगाल में फैल सकती है।

विमानहरण वाली घटना के वाद भारत के ऊपर से पाक विमानों की उड़ान वन्द होने से बंगला देश के लोगों को काफी मदद मिली। फिर भी मार्च और अप्रैल के शुरू में जब पाक सेना दम तोड़ रही थी तो भारत झिझक गया और उसने उस समय वह सब कुछ नहीं किया जो वंगला देश के नेताओं ने उससे चाहा था। उसका नतीजा यह हुआ कि भारत में शरणार्थियों की बाढ़ आ गई।

शरणार्थियों के बोझ से हमारा अर्थ तंत्र टूटने लगा और पूर्वी राज्यों का प्रशासन बिखरने लगा। यदि हालत और अधिक बिगड़ जाती तो निस्सन्देह इंदिरा गांधी की लोकप्रियता बहुत कम हो जाती। यह ऐसी समस्या थी जिसको टाला नहीं जा सकता था।

सरकार पर विभिन्न पार्टियों द्वारा दवाव पड़ने पर भी बंगला देश की 'ताजुद्दीन सरकार' को मान्यता न मिल सकी। समय गुजरने व हालात वदलने के साथ ही साथ सरकार 'ताजुद्दीन सरकार' को मान्यता देने की ओर झुकी। नर्म नीति से दुनिया की नींद नहीं टूट सकती थी। शायद दुनिया भारत के कड़े रवैये की प्रतीक्षा में थी। और भारत के सामने भी इस रवैये के वगैर और कोई चारा नहीं था।

भारत-रूस मैत्री-सन्धि

९ अगस्त, १९७१ को भारत और रूस ने वीस वर्षीय मैत्री एवं शान्ति सन्धि पर हस्ताक्षर किये। संक्षिप्त में उस सन्धि की धाराएं निम्नलिखित हैं—(i) दोनों देश प्रभुत्व-सम्पन्नता, अखण्डता और स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए समानता के आधार पर मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध स्थापित करने में प्रयत्नशील रहेंगे। (ii) एशिया और विश्व में शान्ति के उपायों को सुदृढ़ करने, अस्त्रों की अदला-वदली पर रोक लगाने व सम्पूर्ण निशस्त्रीकरण लागू करने की दशा में प्रयास करते रहेंगे। (iii) दोनों देश उपनिवेशवाद व जातिवाद की निन्दा करते हैं और बुराई की जड़ को उखाड़ने में पक्का इरादा दोहराते हैं। (iv) विश्व-शान्ति की स्थापना में भारत की तटस्थता की नीति का सम्मान सोवियत रूस करता है। (v) दोनों देश विश्व की प्रमुख समस्याओं से निरन्तर एक-दूसरे को अवगत करते रहेंगे। (vi) ऐसे साधन अपनाये जायेंगे जिससे कि दोनों देशों में आर्थिक, वैज्ञानिक और टैक्नोलोजी के क्षेत्र में सहयोग वढ़ सके। 'उच्चतम पसन्द देश' का व्यवहार देते हुए दोनों देश व्यापार, परिवहन और सूचना केन्द्रों का

प्रसार करेंगे। (vii) विज्ञान, कला, साहित्य, शिक्षा, जनस्वास्थ्य, सिनेमा, खेल आदि क्षेत्रों में दोनों देश एक-दूसरेके सम्बन्धों का विकास करेंगे। (viii) दोनों देशों में कोई भी देश एक-दूसरे के विरुद्ध सैनिक समझौतों में सम्मिलित नहीं होगा या किसी अन्य देश से ऐसा समझौता नहीं करेगा। इसी प्रकार प्रत्येक देश एक-दूसरे पर आक्रमण की नीति नहीं अपनायेगा और अपने देश का कोई भाग उस सैनिक गति-विधि का प्रयोग करनेसे रोकेगा जिससेदूसरे देश को हानि होने की सम्भावना हो। (ix) दोनों देशों में से कोई भी देश अन्य किसी युद्धरत देश की सहायता नहीं करेगा। यदि अन्य देश दोनों देशों में किसी भी देश के विरुद्ध युद्धरत हों, यदि दोनों हस्ताक्षरकर्ता देशों में से किसी पर आक्रमण हो, अथवा आक्रमण का खतरा हो, तो इस प्रकार के आक्रमण अथवा आक्रमण के खतरे का मुकाबला करने के लिए दोनों देश शीघ्र ही एक-दूसरे से परामर्श करेंगे। (x) कोई भी देश किसी अन्य देश का इस प्रकार कृपापात्र नहीं बनेगा जिससे सैनिक दृष्टि से दोनों देशों में किसी को भी हानि होने की सम्भावना हो।

इस प्रकार की मैत्री-सन्धि भारत की सुरक्षा और एशिया की शान्ति के लिए आवश्यक थी। भारत ने यह सन्धि किसी अन्य देश के विरुद्ध नहीं की थी और न ही इससन्धि को सैनिक-सन्धि कहा जा सकता था। भारत के प्रधान मंत्री ने यह घोषणा की कि यह सन्धि किसी दूसरे देश के विरुद्ध नहीं है और न ही इसका अर्थ तटस्थता की नीति का त्याग है। भारत आरम्भ से ही सैनिक गुटों से पृथक् नीति पर चलता रहा है।

अमरीका में इस सन्धि को सन्देह की दृष्टि से देखा गया। वहां के नेताओं ने भारत पर आरोप लगाया कि भारत साम्यवादी देश बन गया है। समाचार-पत्रों ने भी इस सन्धि की आलोचना की। प्रधान-मंत्री इन्दिरा गांधी के अमेरिकी दौरे के अवसर पर इस सन्धि के कारण उनका कार्य और भी कठिन हो गया।

पाकिस्तान में भारत और रूस की निन्दा की गई। पाक सैनिक अधिकारियों की दृष्टि में इस प्रकार की सन्धि किसी सैनिक-सन्धि से कम नहीं।

चीन के नेताओं ने इस सन्धि पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि यह मैत्री-सन्धि चीन देश के विरुद्ध नहीं है। चीन को इस सन्धि से किसी प्रकार का खतरा नहीं है। परन्तु हालात वदलने के साथ-साथ इस सन्धि के प्रति चीनी नेताओं का रवैया वदल गया।

ओमगा मिशन

बंगला देश में हुए नरसंहार को देखकर जून, १६७१ में लन्दन में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक समुदाय वना। इस समुदाय का उद्देश्य पाकिस्तानी आततायियों द्वारा प्रतिवन्ध की अवहेलना कर बंगलादेश-वासियों तक दवाइयों और खाद्यान्न के रूप में सहायता पहुंचाना था। अगस्त और सितम्वर, १६७१ में इस मिशन के सदस्यों ने पाक अधिकृत बंगला देश में प्रवेश पाने का प्रयत्न किया परन्तु पाकिस्तानी अधिकारियों ने ऐसा करने से रोका। इसके चार सदस्यों को पाकिस्तानी सैनिक अधिकारियों ने जेल में ठूंस दिया।

सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने, विदेशी नेताओं को वास्तविक स्थिति से अवगत कराने और बंगला देश आन्दोलन के प्रति सहायता कार्यों को व्यवस्थित करने के लिए विश्व के अनेक देशों का दौरा किया। वे वहां नेताओं, पत्रकारों और संवाददाताओं से मिले और भारतका रवैया स्पष्ट किया। इसके साथ ही पाकिस्तानी अधिकारियों के अत्याचारपूर्ण रवैये और दमनचक्र की वात कही। विदेशी नेता केवल मौखिक सहानुभूति प्रकट करने को तैयार थे। विदेशी सरकारें विशेष कर मुस्लिम देशों के नेताओं ने भारतीय नेता से भेंट तक करना स्वीकार नहीं किया।

सितम्वर, १६७१ के तीसरे सप्ताह में नई दिल्ली में बंगला देश

पर अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विश्व के जनमत को बंगला देश को सहायता व मान्यता देने को तैयार करना था। यह आयोजन सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा किया गया था। इसमें बाईस देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पाकिस्तानियों द्वारा किए जा रहे निर्दोष बंगालियों के नरसंहार की निन्दा की गई। विश्व-शक्तियों को कहा गया कि वे पाकिस्तान पर दबाव डालें और बंगालियों के लोकप्रिय नेता शेख मुजीब को रिहा करवायें। इस बात पर भी जोर दिया गया कि शेख मुजीब के नेतृत्व में बंगला देश में लोकतंत्री सरकार का गठन हो।

एक नये नेतृत्व का उदय

श्रीमती इन्दिरा गांधी सोवियत रूस की यात्रा पर गईं। २९ सितम्बर, १९७१ को प्रकाशित हुई विज्ञप्ति में भारत और रूस के नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि पूर्वी बंगाल की समस्या का राजनैतिक हल होना आवश्यक है ताकि वहां की जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं का पालन हो सके। सोवियत नेता श्री एल० के० ब्रिजनेव ,श्री पोदगर्नी एवं श्री कोसीगिन ने प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की इस बात पर सहमति प्रगट की कि इस गम्भीर समस्या का इस प्रकार समाधान होना आवश्यक है जिससे शरणार्थी अपनी मातृ-भूमि को लौट सकें। सोवियत नेताओं ने भारत के उस मानवीय दृष्टि-कोण की भी प्रशंसा की जिसके कारण बंगला देश से आई शरणार्थियों की बाढ़ को स्थान दिया है और उनके रहने-सहने का प्रबन्ध किया है। उस समय सोवियत रूस पाकिस्तान के विघटन की बात नहीं सोच रहा था और न ही उन्हें बंगला देश के उदय होने की आशा थी। यद्यपि भारत का यही विचार था कि पूर्वी बंगाल में हुई दुर्घटनाओं का हल केवल स्वतंत्र बंगला देश के उदय में है। श्री कोसीगिन ने पाकिस्तान में लोक-तान्त्रिक शक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की थी। लगता था सोवि-यत रूस के नेता किसी प्रकार का कोई दृढ़ निर्णय लेने में असमर्थ थे।

रूसी नेताओं को यह आशा थी कि वह पाकिस्तानी अधिकारियों पर प्रभाव डालकर पूर्वी बंगाल की समस्या का समाधान करा सकेंगे। और भारत का यह विचार था कि पूर्वी बंगाल में जब तक पाकिस्तानी सेनाएं हैं तब तक शरणार्थी वापिस नहीं लौट पाएंगे। विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा को यह बता दिया था कि यदि पाकिस्तान राजनैतिक समाधान के लिए तैयार नहीं है तो स्थिति और बिगड़ सकती है।

सोवियत विदेश मंत्री श्री ग्रोमिको ने २९ सितम्बर, १९७१ को संयुक्त राष्ट्रसंघ की सभा में भाषण देते हुए और सोवियत रूस का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा था कि सोवियत रूस पूर्वी बंगाल की समस्या को उसकी अन्दरूनी समस्या नहीं समझता। भारतीय उपमहाद्वीप की स्थिति गम्भीर है और यह मानना पड़ेगा कि पूर्वी बंगाल में हुई घटनाओं से भारत को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एशिया के लोगों को स्थायी शान्ति की आवश्यकता है। उनके लिए यह आवश्यक है कि वह अपने साधनों और प्रयत्नों को संघर्षों में व्यर्थ न गवाएं।

यही बात विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने सयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में कही। उन्होंने कहा, "हमारे दृष्टिकोण में शरणार्थियों का आना बन्द नहीं होगा और न ही आए हुए शरणार्थी तब तक वापिस जाएंगे जब तक वहां की समस्या का सन्तोषप्रद राजनैतिक हल नहीं हो जाता। सर्वप्रथम अवामी लीग के नेता शेख मुजीबुर्रहमान को तुरन्त रिहा किया जाए और उससे बातचीत शुरू की जाए। निस्संदेह वही व्यक्ति ऐसा है जो पूर्वी बंगाल में लोगों की आवाज है। उस समय तक प्रतीक्षा करना कि हालत और बिगड़ जाए, अदूरदर्शिता है। स्पष्ट था कि भारत युद्ध की नीति नहीं चाहता था बल्कि बातचीत द्वारा समाधान में विश्वास रखता था। भारत सरकार पहले भी कई बार यह घोषित कर चुकी थी कि राष्ट्रपति याह्या खां अवामी लीग के नेताओं से बातचीत शुरू करें और इस बढ़ती हुई समस्या का समा-

धान निकालें। यह पहला मौका था कि पूर्वी बंगाल की समस्या को संयुक्त राष्ट्रसंघ में उठाया गया था। महासभा के भाषण में हजारों स्वतंत्रता सेनानियों की बात की गई थी जो पूर्वी बंगाल में पाकिस्तानी सेना का मुकाबला कर रहे थे। भाषण से चार बातें स्पष्ट हो गई थीं (i) प्रथम राजनैतिक समाधान होना आवश्यक है। (ii) यह केवल शेख मुजीब द्वारा ही किया जा सकता है। (iii) बहुमत पार्टी के नेता होने के कारण यह उनका अधिकार भी है।(iv) यदि कोई समाधान नहीं हुआ तो स्थिति और बिगड़ जाएगी।

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि द्वारा पोदगार्नी के हुए भोज में राष्ट्रपति ने कहा था कि सोवियत रूस बंगला देश के समाधान के लिए हर सहायता देने के लिए तैयार है। यह आवश्यक है कि पूर्वी बंगाल से आने वाले शरणार्थियों पर रोक लगाई जाए और आए हुए शरणार्थियों को उनकी मातृभूमि पर वापिस भेजा जाए। सोवियत नेता ने यह भी कहा कि इस समस्या को सैनिक संघर्ष की ओर न जाने दिया जाए और बंगालियों की आकांक्षाओं के अनुरूप समाधान किया जाए। पोदगार्नी ने कहा कि हम महसूस करते हैं कि भारत उपमहाद्वीप की इस गम्भीर समस्या का यदि शीघ्र समाधान न हुआ तो सैनिक संघर्ष शुरू होने की सम्भावना है।

धैर्य की सीमा

जब कलकत्ता और दिल्ली के पाकिस्तानी हाई कमानों के अफसर और कर्मचारियों ने निष्ठा बदली तो पाकिस्तान ने इस करतूत के कारण भारत को दोषी ठहराया। स्विट्जरलैंड के बीच में पड़ने के बाद यह सिद्ध हो गया कि निष्ठा बदलने वाले उन पाकिस्तानी कर्मचारियों में से एक ने भी पाकिस्तान के प्रति सद्भाव न दिखाया और न वहां लौटने को राजी ही हुआ। पाकिस्तान असली कारण को छिपाना चाहता

था। कोई कब तक अपने भाई-बन्धुओं को मरते देखकर चुप रह सकता

है। धैर्य की भी एक सीमा होती है।

पाकिस्तान का निर्माण हुए पच्चीस वर्ष हो गए। भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी कूटनीति के कारण कुछ भाग इस देश से अलग हो गए। पाकिस्तान की ओर से इस बीच दो बार भारत पर आक्रमण हुए, फिर भी भारत ने पूर्वी बंगाल में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। हालांकि शासकों के अत्याचारों से पीड़ित हो हजारों ही हिन्दू पूर्वी बंगाल छोड़कर भारत आए। ऐसी स्थिति में जबकि वहां कत्लेआम हो रहा हो, यदि बंगला देशवासी पाक राजनयिक अपनी निष्ठा बंगला देश के प्रति व्यक्त करें तो उसका यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जा सकता कि उनसे प्रलोभन देकर ऐसा कराया जा रहा है।

पाकिस्तान ने अपने समस्त राजनयिक अधिकारियों के पासपोर्ट ले लिए थे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसे अपने अधिकारियों पर विश्वास नहीं रहा था। जब एक देश अपने अधिकारियों पर विश्वास नहीं करता तो भारत पर दोष मढ़ना अपनी कमजोरी को छिपाना ही था। भारत सहअस्तित्व के सिद्धांत में विश्वास करता है और उसकी निरन्तर यह नीति रही है कि वह किसी भी देश के अन्दरूनी मामलों में दखल नहीं देता है। पर जब एक करोड़ के लगभग बंगला देशवासी शरणार्थी बनाकर इस देश में खदेड़ दिए जाएं तब वह कब तक शांत व चुप बैठा रह सकता था। इसीलिए भारत के धैर्य की सभी देशों में बहुत प्रशंसा की गई कि करोड़ों रुपया प्रतिदिन व्यय करके भी भारत ने मानवीय दृष्टिकोण को अपनाया और इस प्रतीक्षा में रहा कि संसार के विवेकशील राष्ट्र पाक पर जोर डालकर समस्या का समुचित समाधान निकालेंगे।

राजनयिकों का निष्ठा बदलना

नेपाल की राजधानी काठमांडू में स्थित एक वरिष्ट पाकिस्तानी नायिक श्री मुस्तफा फिजुर रहमान ने पाकिस्तान के सैनिक ताना-

शाहों से सम्वन्ध-विच्छेद कर वंगला देश के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। वे पाकिस्तान के राजदूतावास में प्रथम सचिव के पद पर कार्य कर रहे थे। उन्होंने नेपाल के प्रधानमन्त्री को पत्र लिखकर यह कहा था कि मैं उस सरकार के साथ सम्वन्ध नहीं रखना चाहता कि जिसने मेरे देशवासियों के मूल अधिकारों का हनन किया है। ताकि बंगाली नसल को नष्ट किया जा सके। यह स्मरण रहे कि उनका स्थानान्तरण इस्लामावाद कर दिया गया था और उनको शीघ्र ही इस्लामावाद पहुंचने के लिए कहा गया था। पाकिस्तान ने नेपाल की सरकार को भी इस स्थानान्तरण की सूचना नहीं दी थी। उनके स्थान पर एक पंजावी राजनयिक को भेज दिया गया था।

इसी प्रकार दिल्ली में चार अक्टूबर, १९७१ को पाकिस्तानी हाई-कमीशन के प्रमुख राजनयिक हुमायुं रशीद चौधरी ने भी वंगला देश के प्रति निष्ठा व्यक्त की। उन्होंने यह कहा कि वह पाकिस्तान के सैनिक टोले से इसलिए सम्वन्ध-विच्छेद कर रहा है ताकि वह मातृभूमि की आजादी के संघर्ष में अपनी सेवाएं व्यक्त कर सके। हाई कमीशन के फरीदुद्दीन अहमद अपनी पत्नी और चार बच्चों सहित दीवार फांदकर वाहर आए थे। श्री चौधरी ने अपने एक भाषण में कहा कि निर्दोष व्यक्तियों का नरसंहार करने के कारण इतिहास याह्या खां की निन्दा करेगा और याह्या खां ही पाकिस्तान के विघटन का मूल कारण है। उसने कहा कि घोर अपराधों के आरोप में सैनिक ताना-शाह पर मुकदमा चलना चाहिए।

लन्दन में स्थित पाकिस्तान हाई कमीशन के एक वरिष्ठ राज-नयिक श्री रिज़ील करीम ने इस्लामावाद की सरकार से ७ अक्टूबर, १९७१ को सम्वन्ध-विच्छेद करते हुए वंगला देश के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की और लन्दन में स्थित वंगला देश मिशन में जा मिले। इसी प्रकार संसार के अन्य देशों में स्थित पाकिस्तानी हाई कमीशनों के कई राजनयिकों ने पाकिस्तान से सम्वन्ध-विच्छेद करके वंगला देश के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। अर्जेण्टाइना की राजधानी बीनसआयर्स

में स्थित पाकिस्तानी राजदूत श्री अब्दुल मोमीन ने भी अपना पद छोड़ते हुए ऐसा ही किया।

भारत के प्रति पाक की घृणा की नीति

पाकिस्तान के सभी शासकों की भारत के प्रति एक-सी नीति रही है। हर शासक ने अपनी कठिनाई और असफलता के लिए भारत को गाली दी है और इसी नीति को पाकिस्तान के राजनीतिज्ञ पाकिस्तान के जन्म से अब तक अपनाते रहे हैं। जब भी कभी पाकिस्तान में आन्तरिक तनाव हुआ या आर्थिक हालत बिगड़ी तो उन्होंने स्थिति को मोड़ देने के लिए और पाकिस्तानी जनता का ध्यान असली समस्या से दूर करने के लिए भारत के विरुद्ध घृणा के साथ-साथ रोष प्रगट करने के लिए अन्धाधुन्ध झूठे प्रचार का दामन पकड़ा। होना तो यह चाहिए था कि वह अपने घर की हालत को सुधारते और अपनी जनता को खुशहाल बनाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। भारत के खिलाफ प्रचार करके हर शासक ने यह पाया कि उसका संकट समाप्त भले ही न हुआ हो किन्तु टल अवश्य गया है। इसलिए भारत के प्रति घृणा और विद्वेष की नीति पाकिस्तानी राजनीति का अंग बन गई है। आज भी पाकिस्तानी शासक उन्हीं नीतियों को अपनाते जा रहे हैं।

पाकिस्तान के संस्थापक कायदे आज़म जिन्ना ने भी यही नुस्खा अपनाया, पर शायद अपने देश को एक करने का उनका यह तरीका रहा हो अन्यथा पाकिस्तान बन जाने के बाद इसकी आवश्यकता न थी। नवाबज़ादा लियाकत अली खां अपनी हत्या से कुछ दिन पहले यह समझते जा रहे थे कि भारत को गाली देकर किसी भी समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता। उसके बाद जो भी शासक आए थे ज्यादा दिन न टिक सके और फिर वहां फौजी शासन स्थापित हो गया। इस्कंदर मिर्जा ने जब अपना शासन डावांडोल होते देखा तो भारत के विरुद्ध

कबाइलियों को भड़काया, पर तभी जनरल अय्यूब खां ने सत्ता उनसे

हाथ से छीन ली।

सर्वविदित है कि १९६४ और ६५ में कच्छ और कश्मीर पर हमला करके अय्यूब खां अपने जीवन के लिये ही नहीं बल्कि अपने वंशजों के लिए भी पाकिस्तान की गद्दी पक्की कर लेना चाहते थे। अय्यूब खां से पाकिस्तान के शासन की रास जनरल याहिया खां ने छीन ली। जनरल याहिया खां ने पाकिस्तान का विघटन करवाया है।

यह समाचार आये दिन आ रहे थे कि जनरल याहिया खां के हाथ से बागडोर कभी भी जा सकती है। इस संदर्भ में पाकिस्तान के भूतपूर्व राजनयिक श्री हुमायूं रशीद चौधरी ने यह बताया था कि पिछले ६ महीनों में वे कई बार पश्चिमी पाकिस्तान जा चुके हैं, वहां उन्हें ये जानकारी सरकारी सूत्रों तथा अपने मित्रों द्वारा मिली। वहां पाकिस्तानी शासक यह फिजां बना रहे थे कि पूर्वी बंगाल हाथ से निकल रहा हो तो क्यों न एक बार फिर दुस्साहस करके ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाय जिससे संसार और पाकिस्तानी जनता का ध्यान बंगला देश से हटकर कश्मीर की ओर लग जाये और भारत-पाकिस्तान संघर्ष मुख्य तथा बंगला देश और शरणार्थी समस्या गौण बन जाय।

पाकिस्तानी शासक अपनी जनता को यह कहकर गुमराह करते रहे थे कि भारत ने पाकिस्तान के अस्तित्व को उसके जन्म से ही स्वीकार नहीं किया। उसे जब-जब मौका मिला पाकिस्तान को हानि पहुंचाने के लिए कार्य करता रहा। भारत से बदला लेने का एक ही उपाय था कि कश्मीर को पाकिस्तान में मिला लिया जाय।

इस दुस्साहसपूर्ण विचार में कितनी ही विसंगतियां हों, किन्तु भारत के विरुद्ध प्रचार पर पली पाकिस्तानी जनता का वह वर्ग अवश्य ही प्रभावित होता रहा है जो शुरू से अब तक गलतफहमियों का शिकार रहा हो।

प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री तथा अन्य वरिष्ठ मंत्रियों ने यह भरोसा दिया कि पाकिस्तान के किसी भी दुस्साहस का मुंहतोड़ जवाब दिया जायेगा।

एक अप्रत्यक्ष धमकी

पाकिस्तान रेडियो पर १२ अक्तूबर को एक प्रसारण में याहिया खां ने कहा कि बीस दिसम्बर को पाक का नया संविधान प्रकाशित कर दिया जायेगा और २७ दिसम्बर को राष्ट्रीय असेम्बली का अधिवेशन बुलाया जायेगा। उसने भारत पर आरोप लगाया कि हिन्दुस्तानी सेनाएं सीमा पर जमाव कर रही हैं। पाकिस्तान को भारत की ओर से आक्रमण का खतरा है। वास्तव में इस प्रसारण से यह स्पष्ट था कि मानसून मौसम की समाप्ति के साथ ही पाकिस्तानी सेना बंगला देश में अत्याचार बढ़ा देगी और भारत को अधिक संख्या में शरणार्थियों को शरण देनी होगी। याहिया खां ने धार्मिक भावनाओं को भड़काने के लिए जिहाद का नारा लगाया। उन्होंने पाकिस्तान की बारह करोड़ जनता को 'अल्लाह के मुजाहिद' के नाम से पुकारा। उसने यह भी धमकी दी कि विश्व के इस्लामी राष्ट्र पाकिस्तान को इसमें सहायता देंगे।

याहिया खां ने भारत-पाकिस्तान के युद्ध के खतरे को इसलिए बढ़ा-चढ़ाकर कहा था ताकि बंगला देश की समस्या गौण होकर पाकिस्तानी जनता के सामने आए और वास्तविक समस्या से देश का ध्यान हट जाए। शेख मुजीबुर्रहमान के बारे में उसने कुछ नहीं कहा था। पाकिस्तान पर नया संविधान लागू करने की बात वह ८ जून और १८ सितम्बर को भी कह चुका था। उसी दिन भुट्टो ने भी कहा, "हमने लोकतन्त्र की स्थापना के लिए दस महीने तक इन्तजार किया है। हम कुछ दिन और भी इन्तजार करेंगे।" वास्तव में भुट्टो याहियाखां के इस रेडियो प्रसारण पर अधिक प्रसन्न नहीं हुए थे।

पाकिस्तान को चेतावनी

चौदह अक्टूबर को बम्बई में भाषण देते हुए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए कहा कि भारत अपनी सीमाओं की

रक्षा के लिये वह हर कदम उठाएगा जो एक स्वतन्त्र देश को ऐसे समय में उठाने चाहिए। अपने देश की जनता को शरणार्थी वनाकर पड़ोसी राज्य में भेजना समस्या का समाधान कभी नहीं हो सकता। वंगला देश समस्या के विषय में भारत ने धैर्य से काम लिया है और शरणार्थियों के आ जाने से भारत की अर्थ-व्यवस्था को धक्का पहुंचा है। उन्होंने भारतीयों को एक होकर रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान दोनों देश गरीव हैं और उन्हें मिलकर दोनों देशों में गरीवी हटानी चाहिए परन्तु जव भी हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान से सहयोग की मांग की तभी पकिस्तान ने धमकियां दीं। हिन्दुस्तान की वागडोर स्वतन्त्रता सेनानियों ने संभाली जवकि पाकिस्तान में स्वतन्त्रता सेनानी जेलें भुगतते रहे। पाकिस्तान ने वंगला देश की जनता के साथ विश्वासघात किया है वंगला देश की जनता स्वतन्त्रता संग्राम में अवश्य ही सफल होगी।

पाक सेनाएं भारतीय सीमा के निकट पहुंचीं

१६ अक्टूवर को रक्षा मन्त्रालय के एक प्रवक्ता ने वताया कि हमारी सीमा के बिलकुल निकट पाकिस्तान ने अपनी सेना का भारी जमाव कर लिया है। पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों ही सीमावर्ती इलाकों में पाक सेना का जमाव भारी है। राजनीतिक मामलों की समिति ने स्थिति को गम्भीर वताया और यह कहा कि पाकिस्तान ने कहीं भी सीमा का उल्लंघन किया तो भारत की सशस्त्र सेनाएं अपने देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के लिए विवश होंगी। रक्षा मंत्री ने सेनाध्यक्षों से सम्पर्क स्थापित किया। दो-तीन दिनों से पाक सेना की गतिविधियां तीव्र हो गई थीं।

पूर्वी सीमा पर पश्चिम बंगाल तथा असम और त्रिपुरा की सीमा

पर भी पाक सैनिक जमा हो गये थे। पाकिस्तानी वायुसेना की गति विधियां भी बढ़ गई थीं।

अगले ही दिन भारतीय सेनाओं को सतर्क रहने व तैयार हो जा[ने] का आदेश दिया गया। राजनीतिक मामलों की समिति ने स्थिति [का] जायजा लिया। पाकिस्तानी सेनाओं के जमाव के कारण उत्पन्न हु[ई] स्थिति पर कश्मीर मन्त्रिमण्डल की बैठक हुई और रक्षा सम्बन्[धी] मामलों के लिए तीन सदस्यों की एक विशेष समिति का गठन कि[या] गया। उसी क्षेत्र में पाकिस्तानी सैनिकों ने एक चौकी पर कब्जा कर[ने] का प्रयत्न किया परन्तु असफल रहे। पाकिस्तानियों ने राजौरी में खा[न] चौकी पर गोलाबारी की। उरी के सामने पाकिस्तानी क्षेत्र रणवी[र] सिंह पुरा, छम्ब, जौरिया आदि जनता से खाली करवा लिये गये।

सियालकोट की पांच लाख की आबादी में से आधी जनसंख[्या] लायलपुर और मुल्तान की ओर चली गई। यह पाक की युद्ध की तैया[] रियों का परिणाम था।

'गारजियन' में प्रकाशित एक लेख में ब्रिटिश विचारक और लेख[क] ने लिखा कि पश्चिमी देशों को भारत को पूरी सहायता देनी चाहि[ए] नहीं तो पश्चिमी देशों का प्रभाव भारत पर नहीं रह पाएगा। य[दि] १६४४ में नाजी सेनाओं से आजाद कराने के लिए फ्रांस के उत्तरी भा[ग] में बम्ब फेंकना सही था तो सैनिक तानाशाही से मुक्ति दिलाने के लि[ए] पाकिस्तान की जनता पर कठिनाइयां थोपना ही ठीक है। अमेरि[का] को चाहिए कि वह पाकिस्तान की सरकार को हथियार न दे। उ[स] लिखा कि ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री एडवर्ड हीथ को प्रभाव प्रयोग कर[के] पाकिस्तान के प्रति अमेरिकन नीति में परिवर्तन लाने का प्रयत्न कर[ना] चाहिए। पाकिस्तान के साथ कठोरता का व्यवहार करने से पश्चि[मी] देशों के तेल सम्बन्धी मामले खतरे में नहीं पड़ सकते। अरब देश के[वल] इजरायल के मामले में ही उत्तेजित हैं।

श्री ग्रिग ने भारत का दौरा किया था और यहां उन्होंने अप[नी] आंखों से सभी कुछ देखा था। ... त्रिपुरा और मेघालय ...

क्षित क्षेत्रों में भी जाने की आज्ञा दे दी गई और वह किसी भी महत्त्व-पूर्ण व्यक्ति से मिल सकते थे। श्री जोन ग्रिग ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्य, राजनैतिक नेता, पत्रकारों व व्यापारियों से वातचीत की थी। इसके अतिरिक्त वे वंगला देश के प्रतिनिधियों और शिविरों में रह रहे शरणार्थियों से भी मिले थे। उन्होंने यह परिणाम निकाला था कि पश्चिमी देशों को शीघ्र ही भारत का साथ देना चाहिए वर्ना वे देश भारत की सहानुभूति खो वैठेंगे। उनका कहना था कि भारत पर यह आरोप लगाना कि वह शरणार्थियों को वापस जाने से रोक रहा है, सरासर झूठ और काल्पनिक है। और यह भी झूठ है कि भारत पाकिस्तान का विघटन चाहता है। उसके विचार में वंगला देश का उदय होना उसके राष्ट्रीय हित में नहीं है (याहिया खां की तानाशाही सेना के अत्याचारों के कारण पाकिस्तान का विघटन हो चुका है)।

"हम एक मुट्ठी से हाथ नहीं मिला सकते"

नई दिल्ली में १९ अक्टूबर को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में वताया कि भारत युद्ध से वचने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करेगा। पारस्परिक मामलों पर बातचीत करने के लिए भारत तैयार है, परन्तु बंगला देश पर कोई भी वार्तालाप नहीं हो सकता, क्योंकि वंगला देश की समस्या वहां के लोगों और पाकिस्तानी शासकों की निजी समस्या है। प्रधान मन्त्री ने यह स्पष्ट किया कि वंगला देश में कठपुतली सरकार वना देने से समस्या हल नहीं हो सकती। कोई भी समाधान वंगला देश की जनता को सन्तुष्टि दे सके वह मान्य होगा। सीमाओं पर सेनाओं का भारी जमाव पाकिस्तान ने पहले किया है। और भारत ने अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए वहां सेनाएं भेजी थीं। सेनाओं की वापसी और पाकिस्तान से बात-चीत आरम्भ करने के प्रश्न पर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि हम मुट्ठी बने हाथ से हाथ नहीं मिला सकते हैं। पाकिस्तानी सैनिक

बंगला देश में अत्याचार वन्द करें और जनता द्वारा चुने गए प्रति-
निधियों को सत्ता सौंपें। साधारण-सी बात है कि बंगला देश में
मुक्ति-संग्राम चल रहा है और उसका समाधान भी वहीं ढूंढा
सकेगा। संयुक्त राष्ट्रसंघ पर्यवेक्षक की नियुक्ति के बारे में श्रीम
इन्दिरा गांधी ने कहा कि भारत को यह सुझाव मान्य नहीं है।

शरणार्थी शिविरों में कोई भी जाकर हालात को स्वयं देख सक
है। भारतीय समाज एक लोकतन्त्रीय समाज है। इस समाज में
बात छिपाई नहीं जा सकती। पाकिस्तानी फौजों की वापसी की
सीमाओं के निकट है जबकि भारतीय सेना को सीमा रेखा से अधि
दूर जाना पड़ेगा। भारत के प्रति घृणा का आन्दोलन और जिहाद
पुकार को हम नजरअन्दाज नहीं कर सकते।

"भारत-रूस मैत्री-सन्धि से भारत के अणुशक्ति विकास
क्रम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सन्धि किसी देश अथवा प्र
के विरुद्ध नहीं की गई है। इससे भारत को मजबूत बनाने और भा
रूसी मित्रता को विकसित करने में सहायता मिली है। कोई
बाहरी ताकत हमारे कार्यक्रमों में परिवर्तन नहीं ला सकती
राष्ट्रीय हित के कार्यों में बाधा नहीं डाल सकती।"

त्रिपुरा नगर खाली कराया गया

बैलोनिया कस्बे पर पाकिस्तानियों द्वारा लगातार गोला
करने के कारण इस कस्बे को खाली करवाना पड़ा। बी० के० इं
टूशन होस्टल और उसके आसपास के मकानों में गोलाबारी के का
आग लग गई। दमकल केन्द्र के व्यक्ति गोलियों की बौछार के का
आगे न बढ़ पाए। यह प्रथम अवसर था जबकि पाकिस्तानी सिपा
ने इस प्रकार गोलाबारी की थी। पिछले दो दिनों से पाकिस्
सैनिक पश्चिमी बंगाल के क्षेत्र पर गोलाबारी कर रहे थे।
भारतीयों को जान से हाथ धोना पड़ा। करीमगंज के कुर्ती गांव
पाकिस्तानी सेना ने गोलियां चलाईं। इससे तीन व्यक्ति घायल

करीमगंज स्टेशन से गुजरती हुई एक रेलगाड़ी पर गोलियां पड़ीं।

रक्षा मन्त्रालय के एक प्रवक्ता ने इस आरोप को झूठा बताया कि भारतीय वायुसेना ने बंगला देश की सीमा का उल्लंघन किया है।

उधर मुक्तिवाहिनी ने कोमिल्ला जिले में कस्बे पर अधिकार कर लिया। पाकिस्तानी सैनिकों ने मुक्तिवाहिनी पर हमला किया था।

ईस्ट बंगाल गवर्नर के सैनिक सलाहकार मेजर जनरल फरमान-अली खान ने स्वीकार किया कि पूर्वी बंगाल में पचास हजार गुरिल्ला पाकिस्तानी सेना का मुकाबला कर रहे हैं। उनके पास मशीनगनें और स्टेनगनें हैं।

मानसून के पश्चात् प्रथम बार पाकिस्तानी वायुसेना के सैवर जेटों ने मुक्तिवाहिनी की टुकड़ियों पर बमबारी की। पूर्वी बंगाल के छटक क्षेत्र में पाकिस्तानी अधिकारियों को कुमुक भेजनी पड़ी।

भारत के दौरे पर आये यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो ने बंगला देश के राजनीतिक हल की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि तटस्थ देशों को यथार्थतापूर्ण रवैया अपनाना चाहिए। उन्होंने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से दो घण्टे तक बातचीत की। पाकिस्तान की धमकियों का उल्लेख करते हुए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि भारत अपनी सीमाओं की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर है।

शरणार्थियों के लिए सत्तर करोड़ रुपये के कर

बाईस अक्तूबर को राष्ट्रपति ने एक अध्यादेश जारी किया जिस में सत्तर करोड़ रुपये के करों की अस्थायी व्यवस्था की गई थी। बंगला देश से आए शरणार्थियों पर किए जाने वाले खर्च को पूरा करने के लिए रेलवे-किरायों, डाक-पत्रों, समाचार-पत्रों, और एक्सचेंज बिलों में वृद्धि की गई। प्रान्तीय सरकारों को भी कर लगाकर अपना हिस्सा देना था। यह पहला अवसर था कि केन्द्र अध्यादेश द्वारा करों में वृद्धि की घोषणा कर रहा था।

विदेश यात्रा से पूर्व इन्दिरा की चेतावनी

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने तीन सप्ताह की विदेश यात्रा पर रवाना होने से पूर्व संध्या में देश के नाम एक रेडियो प्रसारण में सभी देशवासियों से अपील की कि हम भारत के सम्मान, स्वतन्त्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए इस संकट की घड़ी में दलगत और धार्मिक भेद-भाव भुलाकर और एक होकर पूरी ताकत से जुट जायें। प्रधान मन्त्री ने व्यापारियों और दुकानदारों से अनुरोध किया कि वे इस संकट में अधिक नफा करके और जमाखोरी करके देश को धोखा न दें। यह समय अधिक मेहनत करके उत्पादन बढ़ाने और अधिक बचत करने का है। इस समय सीमा पर भारी खतरा है। इसके लिए हम सब को तैयार हो जाना चाहिए। एक तरफ सेना की तैयारी और दूसरी ओर जनता की तैयारी। हम सबको साम्प्रदायिकता से सतर्क रहना चाहिए और शक पैदा करने वाली अफवाहों को दबा देना चाहिए।

प्रधान मंत्री ने कहा कि मैं विदेश यात्रा पर जा रही हूं, चाहे मैं हजारों मील दूर हूं, मेरा मन भारत में आपके साथ रहेगा। देश को भारी खतरे का सामना है, फिर भी इस यात्रा पर बहुत सोच-विचार के बाद जा रही हूं। ऐसे समय जाने में मेरा दिल भारी है परन्तु बहुत पहले के आमन्त्रण हैं और आजकल की स्थिति में यह महत्त्वपूर्ण है कि कुछ दूसरे देशों के नेताओं से मिलूं और उनके विचार जानूं और उनको सभी हालात बताऊं।

राष्ट्र का हित और राष्ट्र की सुरक्षा को देखते हुए किसी भी समय क्या कदम उठाना है यह निर्णय तो हमारा ही हो सकता है। हमारी समस्याएं गम्भीर हैं। यही कारण है कि हम कोई बात जल्दबाजी में या गुस्से में न करें। यह समय है कि हम और आप तैयार रहें। एक तरफ तो सुरक्षा सेना की तैयारी है, दूसरी तरफ जनता की।

पिछले महीनों सारी दुनिया ने देखा कि किस धैर्य, हिम्मत और

सब्र से भारत की जनता ने इस चुनौती का सामना किया। मुझे यकीन है कि आते हुए कष्ट और खतरे का सामना करने में आपकी यह दृढ़ता बनी रहेगी। इस समय एकता और अनुशासन की आवश्यकता है।

प्रधान मंत्री ब्रूसेल्स में

श्रीमती इन्दिरा गांधी का बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स पहुंचने पर वहां की जनता ने बड़ा शानदार स्वागत किया। बेल्यिम के तमाम समाचार-पत्रों में श्रीमती इन्दिरा गांधी को आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न महिला और संसार की सबसे बड़े लोकतंत्रीय गणराज्य की नेता कहा। यह आशंका प्रकट की जा रही थी कि क्या वे ऐसी गम्भीर परि-स्थिति में, जबकि दोनों देशों की सेनाएं सीमाओं पर जमा हैं, विदेश-यात्रा पूरी कर सकेंगी। बेरुत में उन्होंने पाकिस्तान के इस आरोप का खण्डन किया कि भारत पाकिस्तान के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है। पच्चीस अक्तूबर को बेल्जियम के प्रधान मंत्री से बातचीत के दौरान में कहा कि पूर्वी बंगाल से आये शरणार्थियों की सहायता की जानी चाहिए। बेल्जियम के प्रधान मंत्री व विदेश मंत्री ने श्रीमती गांधी के दौरे के प्रथम दिन ही इस बात पर सहमति व्यक्त की थी। पूर्वी बंगाल की समस्या का राजनैतिक हल निकाला जाना आवश्यक है। इस बात की आवश्यकता पर भी बल दिया गया कि पूर्वी बंगाल के मामले में संयुक्त राष्ट्रसंघ को हस्तक्षेप करना चाहिए। नेताओं ने स्पष्ट रूप से कहा कि भले ही पाकिस्तान का यह आन्तरिक मामला हो लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इसमें हस्ताक्षेप क्यों नहीं किया, जबकि अगोला, मोजाम्बिक व दक्षिण अफ्रीका में पैदा हुई ऐसी स्थिति में उस ने सक्रिय रूप से हस्तक्षेप किया था।

यद्यपि बेल्जियम चाहता है कि बंगला देश में इस्लामाबाद का दमन और अत्याचार समाप्त हो, फिर भी उसने इस प्रश्न पर कोई स्पष्ट विचार व्यक्त नहीं किया। इसका कारण यह है कि वह सुरक्षा

परिषद का सदस्य है।

यह बात विचारणीय है कि बेल्जियम की राजकीय यात्रा कं समाप्ति पर कोई संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित नहीं की गई। श्रीमतं इन्दिरा गांधी ने इस बात को पसंद नहीं किया लेकिन उन्होंने तब इः बात पर जोर नहीं दिया। बेल्जियम के नेताओं ने कहा कि ऐसे अव सरों पर हमारे यहां विज्ञप्ति जारी नहीं की जाती।

उल्लेखनीय है कि बेल्जियम 'पाकिस्तान सहायता समिति' क सदस्य है। भारत में आये शरणार्थियों के लिए बेल्जियम ने लगभ तीन लाख रुपये की सहायता दी है। फिर भी समूचे तौर पर यह लगत है कि श्रीमती गांधी को बेल्जियम की सरकार से बातचीत करवे अपेक्षित सफलता नहीं मिली। बेल्जियम में अन्तिम प्रेस कान्फ्रेंस उनके वक्तव्य में खीझ और चिंता स्पष्ट झलकती थी। प्रेस कान्फ्रेंस श्रीमती गांधी ने कहा था कि पाकिस्तान के सैनिक गुंडे पूर्वी बंगाल की सात करोड़ जनता को आतंकित किए हुए हैं। इस बात से ए बार फिर यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्व के देशों में भारत और पाकि स्तान की विशेष रूप से वर्तमान बंगला देश सम्बन्धी समस्या कं कितनी कम जानकारी थी और इसका परिणाम यह रहा कि भार के प्रति इन सभी देशों का रुख बहुत उपेक्षापूर्ण था जिसको सुधार के लिए इस उच्चस्तरीय सम्पर्क की अत्यधिक और तुरन्त आवश्यकत थी।

श्रीमती गांधी वियना में

२६ अक्तूबर को श्रीमती इन्दिरा गांधीं आस्ट्रिया की राज धानी वियना पहुंचीं। हवाई अड्डे पर हजारों लोगों ने भारत के प्रधा मंत्री का हार्दिक स्वागत किया। आस्ट्रिया के चांसलर ने श्रीमती गां का स्वागत किया और उनका मन्त्रिमण्डलीय सदस्यों से परिच कराया।

श्रीमती गांधी के सम्मान में दिये गये भोज के समय प्रधान मंत्री ने कहा कि भारत आस्ट्रिया के प्रति कृतज्ञ है कि उसने नाजुक काल में भारत को इतनी सद्भावना व समर्थन दिया। २७ अक्तूबर को आस्ट्रियाई नेताओं से वातचीत करने के दौरान में स्पष्ट हो गया था कि आस्ट्रियाई नेता चाहते हैं कि पूर्वी बंगाल में इस प्रकार के राजनीतिक हालात पैदा किए जायें, जिससे भारत में आये शरणार्थी वापस घर लौट सकें। वहां के लोगों के इच्छानुरूप ही कोई समाधान होना चाहिए।

बंगला देश का जिक्र करते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि उन कारणों को परखा जाए कि लाखों शरणार्थी अपने घर-बार छोड़कर क्यों भारत आ गये। भारत की परम्परा यह है कि हम पीड़ितों को आश्रय देते हैं लेकिन हम इस बोझ को सदा के लिए उठाये नहीं रह सकते।

श्रीमती गांधी ने उन राष्ट्रों की भी बड़ी निन्दा की जो बंगला देश की घटनाओं व सीमा तनावों के बारे में भारत व पाकिस्तान को बराबर दोषी ठहरा रहे हैं। श्रीमती गांधी ने उन राष्ट्रों से, जो यह सुझाव दे रहे हैं कि भारत-पाक सीमा के दोनों ओर सैनिकों को हटा दिया जाये, सवाल किया कि जब पाकिस्तानी सैनिक सीमा तक आ गए, हम चुपचाप क्यों रहें। तब संयुक्त राष्ट्र या संसार के देशों ने चिंता व्यक्त क्यों नहीं की। श्रीमती गांधी ने बड़े व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहा कि जब हम अपनी रक्षा में कुछ कर डालते हैं तभी आपको चिंता सताती है।

आस्ट्रियाई नेताओं से बातचीत बेल्जियम के नेताओं से हुई बातचीत से अधिक सफल रही। जहां बेल्जियम के प्रधान मंत्री ने बंगला देश की समस्या के राजनीतिक हल पर बहुत संकोच से कुछ कहा था, वहां आस्ट्रिया के चांसलर ब्रूनो क्रीसकी ने न सिर्फ श्रीमती गांधी की सराहना की कि उन्हें वर्तमान काल के किसी भी राजनीतिज्ञ से अधिक भार अपने कन्धों पर उठाना पड़ रहा है, बल्कि उन्होंने

इस बात पर भी जोर दिया कि समस्या के हल के लिए बंगला देश की जनता की इच्छाओं का ख्याल भी रखना पड़ेगा।

भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षकों के आने के सुझाव का श्रीमती गांधी ने कड़ा विरोध किया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि भारत और पाकिस्तान में इस तरह की बराबरी स्थापित करने की कोशिशें भारत के हितों को कुचलने की साजिशों के अलावा और कुछ नहीं हैं। अगर स्पष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जाये तो यह कह सकते हैं कि स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह पहला अवसर था जब भारत के एक प्रधान मंत्री ने खुलकर भारत से मित्रता की ओट में उसके राष्ट्रीय हितों को हानि पहुंचाने वाले देशों के खिलाफ एक मोर्चा लिया और एक प्रकार से संयुक्त राष्ट्रसंघ में अविश्वास प्रकट किया।

१६४८-१६४६ में हमारी विदेश नीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रमुख मंच संयुक्त राष्ट्र था, जब हम कूटनीति के नाम पर संयुक्त राष्ट्र के अन्दर लम्बे-लम्बे भाषण देकर संतुष्ट हो जाते थे। आज का यह एहसास कि भारत को अपना रुख विश्व के देशों को स्पष्ट करने तथा अपनी नीति एवं हितों के प्रति अन्य देशों में सहानुभूति पैदा करने के लिए अपनी कूटनीति को अत्यधिक सम्पर्कशील तथा सक्रिय बनाना आवश्यक है, एक मौलिक परिवर्तन का संकेत देता है।

प्रधान मन्त्री ब्रिटेन में

श्रीमती इन्दिरा गांधी २६ अक्तूबर को प्रातः ब्रिटेन की राजधानी लन्दन पहुंचीं और ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री एडवर्ड हीथ से बातचीत आरम्भ की। ब्रिटिश अधिकारियों को यह आशंका थी कि भारत व पाक के बीच युद्ध छिड़ जाएगा। ब्रिटिश नेता बंगाल में राजनैतिक समझौते के पक्ष में थे। उनका ख्याल था कि राष्ट्रपति याह्या

खां अवामी लीग के नेता श्री मुजीब से वातचीत नहीं करेंगे।

लंदन से प्रकाशित इण्डिया वीकली के विशेषांक को भेजे गए अपने एक सन्देश में श्री हीथ ने श्रीमती गांधी की ब्रिटेन यात्रा का हार्दिक स्वागत किया।

'टाइम्स' ने लिखा था कि पूर्वी बंगाल की समस्या का ऐसा राजनीतिक समाधान होना चाहिए कि उससे वहां से भारत गए हुए शरणार्थियों का वापस जाना सम्भव हो सके। पत्र ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया था कि वह सैनिक वल बूते पर डरा-धमकाकर समस्या का समाधान ढूंढ़ने के असफल प्रयास में लगा हुआ है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्पष्ट कह दिया था कि यदि विश्व-शक्तियों ने पाकिस्तान पर दबाव न डाला तो भारत अपने हितों की रक्षा करने के लिए हर कदम उठाएगा। बंगला देश की मान्यता ऐसा ही एक कदम होगा। जहां तक भारत का प्रश्न है वह ईस्ट बंगाल में लोकतन्त्रीय राज्य के लिए लड़ रहे स्वतन्त्रता सेनानियों की सफलता की कामना करता है। इसके साथ ही यदि पाकिस्तान के शासक बंगालियों से वातचीत करने के लिए तैयार हो जाएं तो समाधान हो सकता है।

श्रीमती गांधी की इंग्लैण्ड की यात्रा पहले दो देशों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थी। इस देश का हमारे इतिहास के साथ केवल बहुत पुराना सम्बन्ध ही नहीं है बल्कि हमारी बहुत-सी गम्भीर राष्ट्रीय समस्याओं में भी इसका गहरा हाथ है। वातचीत के शुरू में ही यह वात स्पष्ट हो गई कि ब्रिटिश सरकार का विचार यह है कि भारत सरकार बंगला देश के नेताओं पर कुछ दवाव डालकर उनका रुख नरम करवा सकती है। साथ ही ब्रिटिश अधिकारियों ने यह जताने की भी कोशिश की कि पाकिस्तान पर वह अधिक दवाव नहीं डाल सकते क्योंकि उसपर उनका सीमित प्रभाव है। वात हैरानी की नहीं है बल्कि यह समझने की है कि कोई भी देश अपने राष्ट्रीय हितों के लिए किसी समय अपने बड़े से बड़े मित्र के प्रति पैंतरा बदल सकता है। भारत इस छोटी-सी बात को अब समझ रहा है। ब्रिटिश

अधिकारियों को भारतीय पक्ष में यह समझाया कि भारत की ओर से बंगला देश के नेताओं पर दबाव डालने की बात का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वास्तविकता यह है कि बंगला देश के नेता यह समझते हैं कि भारत उनके लिए पर्याप्त प्रयत्न नहीं कर रहा है।

बातचीत के सिलसिले में ब्रिटेन की यह पेशकश थी कि बंगला देश के संकट को सुलझाने के लिए वह जनरल याह्या खां को इस बात के लिए मनाने की कोशिश कर सकते हैं कि वह शेख मुजीबुर्रहमान तथा बंगला देश के अन्य नेताओं के साथ बातचीत करें। बात बहुत विचित्र है कि ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों ने एक दिन पहले यह विचार व्यक्त किया था कि पाकिस्तान पर उनका प्रभाव सीमित है और दूसरे दिन यह सुझाव भी रख दिया कि वे याह्या खां और मुजीब के बीच बातचीत शुरू कराने की कोशिश को तैयार हैं, लेकिन श्रीमती गांधी ने यह कहकर बात समाप्त कर दी कि इस बारे में कोई भी निर्णय स्वयं बंगला देश के नेता ही दे सकते हैं। आखिर ब्रिटेन की इस पेशकश की तह में क्या था ? वह बंगला देश को पाकिस्तान की सीमा से बाहर नहीं जाने देना चाहता था। अपने सुझाव पर भारत को राजी करने के लिए उसने कई प्रकार की दलीलें दीं कि भारत-पाक युद्ध का खतरा समाप्त करने के लिए जल्दी कोई हल निकलना चाहिए और भारत पर बंगला देश के शरणार्थियों का बहुत अधिक भार है और उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहायता मिलने की भी बहुत अधिक आशा नहीं है। इसलिए भारत को ब्रिटेन का सुझाव स्वीकार कर लेना चाहिए। लेकिन श्रीमती गांधी ने यह कहकर सब दलीलें ठुकरा दीं कि भारत किसी तरह का अधूरा, अस्थायी सुझाव मानने को तैयार नहीं है, क्योंकि इस तरह का कोई भी हल अन्ततः अधिक महंगा और हानिकारक सिद्ध होता है। भारत इस तरह के हल को मानने की अपेक्षा और कुछ समय के लिए शरणार्थियों का भार उठाना पसन्द करेगा।

संयुक्त राष्ट्र के महामन्त्री ऊ थांट द्वारा मध्यस्थता का प्रस्ताव फिर आया और श्रीमती गांधी ने एक बार फिर कड़ा उत्तर दिया कि

क्या ऊ थांट अथवा और किसी व्यक्ति में यह साहस है कि वह भारत में आये पूर्वी बंगाल के १० लाख से अधिक शरणार्थियों से जाकर कहे कि वापस जाओ और जाकर मर जाओ। एक वार फिर उन्होंने दो टूक शब्दों में कह दिया कि संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता के वारे में भारत का अनुभव जरा भी उत्साहजनक नहीं है। हम भारत और पाकिस्तान को समान स्तर पर रखकर जांचने का कार्यक्रम फिर से शुरू करना नहीं चाहते।

प्रधान मंत्री अमेरिका में

ब्रिटेन के वाद श्रीमती गांधी की विदेश यात्रा का अगला पड़ाव अमेरिका था। आज अन्तर्राष्ट्रीय नीति में अमेरिका का क्या महत्त्व है इस विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। भारत के लिए तो अमेरिका की विदेश नीति तो और भी अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि वहुत-से अन्य विकासशील देशों की तरह भारत भी अपने विकास तथा वर्तमान संकटों से निकास के लिए अमेरिकी सहायता पर निर्भर है। अमेरिका के साथ भारत के सम्वन्धों में भी प्राय: वही रूप वहुत वड़े आकार में विद्यमान है जो कि भारत और ब्रिटेन के आपसी सम्वन्धों में रहा है। ब्रिटेन ने परिस्थितियों से विवश होकर भारत को आजाद कर दिया था। परन्तु विश्व का कोई भी देश यह नहीं चाहता कि भारत एक वहुत वड़ा राष्ट्र वने।

वाशिंगटन पहुंचकर प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने निक्सन प्रशासन के उच्च अधिकारियों से वार्ताओं का दौर शुरू किया। प्रधान मन्त्री ने अमेरिका के इस सुझाव का विरोध किया कि उपमहाद्वीप में तनाव खत्म करने के लिए भारतीय सेना सीमा से वापस की जाए। अमेरिकी अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से पाकिस्तान की आलोचना करने से साफ इन्कार कर दिया था। उनका विचार था कि वे निजी वार्ता द्वारा पाकिस्तान को ज्यादा अच्छी तरह से समझा सकते हैं।

अमेरिका में वर्तमान परिस्थितियां कुछ ऐसी थीं जिसके कारण श्रीमती गांधी का सहानुभूति खोजने का कारण और भी कठिन हो गया था। इस पृष्ठभूमि में एक बात और जुड़ गई थी और वह थी अमेरिका का आर्थिक संकट।

वाशिंगटन पोस्ट की एक रिपोट में कहा गया था कि दोनों देशों के नेता भारत-पाकिस्तान संकट को दूर करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर सहमत नहीं हो पाए हैं। अमेरिकी प्रशासन ने यह मांग रखी कि पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान की सीमा से भारत अपनी फौजें वापस बुला ले। लेकिन भारत को यह बात मान्य न थी। अमेरिका ने भारत से आग्रह किया कि वह पाकिस्तान के साथ बात-चीत शुरू करे लेकिन भारत इसपर सहमत नहीं हुआ।

'न्यूयार्क टाइम्स' ने कहा था कि न तो अमेरिकी सूत्रों ने और न ही भारतीय सूत्रों ने ऐसा कहा कि राष्ट्रपति निक्सन भारत के इस प्रस्ताव से सहमत हो गए हैं कि शेख मुजीबुर्रहमान की रिहाई के लिए अमेरिका को पाकिस्तान पर दबाव डालना चाहिए तथा पाकिस्तान को पूर्वी बंगाल की समस्या के हल के लिए शान्तिपूर्ण वार्ता करनी चाहिए।

अमेरिकी सरकार के मन में भारत को लेकर कई आशंकाएं थीं, विशेष रूप से हाल की भारत-रूस संधि ने भारत की निरपेक्षता की नीति के बारे में अमेरिका आदि देशों में संशय उत्पन्न कर दिए थे। इसलिए अमेरिका के रुख के भी बहुत नरम पड़ने या बदलने की कोई सम्भावना न थी। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी का स्वागत करते हुए जो भाषण दिया था उसमें शरणार्थी समस्या का कहीं भी उल्लेख न था। सीमाओं पर से सेना हटा लेने का सुझाव केवल श्री निक्सन का या ब्रिटेन के श्री हीथ का ही नहीं बल्कि इसके लिए तो स्वयं पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह याह्या खां भी पूरा जोर लगा रहे थे। उन्होंने इन दोनों देशों के अलावा ऊ थांट को भी लिखा था कि भारत ... भारत-पाक सीमा पर से

सेनाएं हटाने का प्रयास किया जाए वर्ना भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ सकता है। इस तमाम चीख-पुकार के पीछे असली बात यह थी कि पाकिस्तान की सेनाएं सीमा पर तनाव उत्पन्न हो जाने के कारण 'कैद' हो गई थीं। पाकिस्तान उन सेनाओं को बंगला देश की निहत्थी जनता को मौत के घाट उतारने के लिए काम में नहीं लगा पा रहा था। पाकिस्तान की भारत को तलवार दिखाने की कौड़ी उल्टी पड़ गई थी।

पाकिस्तान ने सीमा पर सेना तैनात इसलिए कर दी थी कि दुनिया में युद्ध का हल्ला मचाकर और अमेरिका और ब्रिटेन आदि अपने मित्र देशों की सहायता से वह भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता के लिए कुछ देशों के प्रतिनिधि दोनों देशों में बिठा लेगा और फिर उसका परिणाम यह होगा कि यह प्रतिनिधि जासूस बनकर भारत के सिर पर बैठे रहेंगे। जबकि दूसरी ओर पाकिस्तान पूर्वी बंगाल को अपने देश का एक भाग कहकर वहां दमन और अत्याचार करके उसे पूरी तरह कुचल देगा। लेकिन श्रीमती गांधी की सतर्कता ने याह्या का यह स्वप्न पूरा न होने दिया। उन्होंने अत्यधिक दृढ़ता के साथ अमेरिका के सेनाएं वापस करने के सुझाव को ठुकरा दिया।

दूसरी बात इस विषय में ध्यान रखने की यह है कि बंगला देश की समस्या के सम्बन्ध में भारत और पाकिस्तान को समतल रखकर कोई हल खोजने का भारत इसलिए भी विरोध कर रहा था कि इस तरह के किसी हल को स्वीकार करने का एक सहज परिणाम यह भी होता कि इस समस्या के साथ कश्मीर की समस्या को जोड़ने की कोशिश भी की जाती। यह बात किसी तरह से भी भारत को स्वीकार्य नहीं हो सकती थी। इसलिए श्रीमती गांधी ने अपनी अमेरिकी यात्रा में प्रेस सम्वाददाताओं के सामने सेनाएं वापस हटाने की पाकिस्तानी मांग के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए यह कहा था कि सेनाओं की सीमा पर तैनाती तो मूल समस्या का एक भजनफल है। दरअसल पाकिस्तान मूल समस्या से ध्यान हटाने के लिए यह सब हथकंडे

अपना रहा था। श्रीमती गांधी ने कहा, "हमें वताया गया है कि सीमा पर सैनिक तैनाव करने से शान्ति को खतरा है तो क्या निरपराध व्यक्तियों का नरसंहार शान्ति को खतरा नहीं है ? और इस कड़े स्वर से अमेरिका यह समझ गया कि इस प्रकार के सुझाव देना व्यर्थ रहेगा और इसलिए उसने दोवारा सेना हटाने के सुझाव पर जोर नहीं दिया।

अमेरिका के अधिकारियों ने एक और चाल चली और वह यह कि उन्होंने यह ऐलान कर दिया कि अमेरिका पाकिस्तान को हथियार देना वन्द कर देगा। यह घोषणा ऐसा अवसर देखकर की गई थी जिससे कि भारतीय जनमत पर यह प्रभाव पड़े कि यह श्रीमती गांधी की वार्ता के फलस्वरूप अमेरिका के रुख में परिवर्तन होने का सबूत है। लेकिन वाद में जो वास्तविकता सामने आई वह यह थी कि यह फैसला श्रीमती गांधी की यात्रा से पहले लिया जा चुका था और भारत के अमेरिका स्थित राजदूत को भी इस वात का पता था। केवल इतना-भर किया गया था कि इसकी घोषणा श्रीमती गांधी की यात्रा के समय पर की गई थी। अमेरिका की चालाकी के वारे में जो दूसरी वात सामने आई वह यह थी कि दरअसल यह घोषणा केवल विश्व जनमत की आंखों में धूल झोंकने के लिए की गई थी। वर्ना सही वात यह थी कि पाकिस्तान को उसकी इच्छा के अनुसार पूरी मात्रा में हथियार देने के वाद तथा उससे सलाह लेने के वाद इस तरह का निर्णय लेने का कदम उठाया गया था।

वहरहाल इन तमाम परिस्थितियों के कारण श्रीमती गांधी की अमेरिका यात्रा का जो तुरन्त परिणाम निकल सकता था, वही निकला अर्थात् दोनों पक्षों के रुख में परिवर्तन नहीं हुआ। दो-एक वातें अवश्य हुई कि न सिर्फ अमेरिका को वल्कि अन्य देशों को अपने-अपने ढंग से जानकारी हो गई। इसीलिए श्रीमती गांधी की फ्रांस और पश्चिम जर्मनी की यात्रा के दौरान उनको वदला हुआ वातावरण मिला।

प्रधान मंत्री फ्रांस और पश्चिमी जर्मनी में

फ्रांस के राष्ट्रपति एम० जार्जेंट ने स्पष्ट शब्दों में भारत की मांग अर्थात् बंगला देश के राजनीतिक हल का समर्थन करते हुए यह कहा कि "इस संकट का हल सम्बन्धित जनता की स्वतंत्र रजामंदी से ही होना चाहिए।"

पश्चिमी जर्मनी तो श्रीमती गांधी की यात्रा का सबसे सफल चरण था। पश्चिमी जर्मनी के चांसलर श्री विली ब्रांट ने भारत के साथ जर्मनी के प्राचीन मैत्री-सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए इस संकट में भारत के प्रति सहानुभूति प्रकट की और उन्होंने भारत की इस धारणा के साथ पूरी सहमति प्रकट की कि पूर्वी बंगाल की समस्या भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद नहीं है बल्कि एक ऐसी समस्या है जिसका पाकिस्तान के दोनों खण्डों के बीच राजनीतिक हल होना चाहिये। उन्होंने इस बात को भी स्वीकार किया कि इस समस्या के किसी भी हल की बातचीत के लिए मुजीबुर्रहमान का रिहा किया जाना आवश्यक है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की इस यात्रा के तुरन्त परिणाम सहज ही न निकले, लेकिन इससे इसका महत्त्व जरा भी कम नहीं होता बल्कि कहा जाना चाहिये कि इस प्रकार विश्व के देशों को अपना दृढ़ रुख समझाने की जरूरत बहुत पहले से ही भारत को थी। इस यात्रा से एक बात और भी समझी जानी चाहिए कि भारत की कूटनीति में जहां मुख्य स्थान संयुक्त राष्ट्र की कार्यवाहियों को दिया जाता था अब वहां नई समझ यही उपजी है कि भारत को स्वयं पारस्परिक सीधे सम्पर्कों पर अधिक जोर देना चाहिए। इस सिलसिले में हमारी रिवायती कूटनीति व्यवस्था की कमजोरी भी स्पष्ट हुई है।

इसके जो चिरकालीन प्रभाव होंगे वे अधिक महत्त्वपूर्ण और

मूल्यवान हैं, न केवल विदेश सम्बन्धी बल्कि हमारी गृह-नीतियों पर भी इसके दूरगामी प्रभाव होंगे। हमें विश्व के देशों और गुटों के प्रति दृढ़ होकर अपने हित की बात कहने और मनवाने का साहस पैदा करना होगा। तब हम पहले राष्ट्रीयता फिर अन्तर्राष्ट्रीयता की यथार्थवादी नीति से अपनी स्थिति एवं सुरक्षा को दृढ़ कर लेंगे।

लेकिन सबसे बड़ी बात, जिस बात पर खुलकर प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी को बधाई देनी चाहिए, वह यह है कि पुराने प्रधान मंत्रियों की खोखली, नकारा आदर्शवादिता को त्यागकर उन्होंने भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक नई वास्तविकतापरख भंगिमा को अपनाया है जो न केवल सक्रिय है बल्कि अत्यधिक परिवर्तनकांक्षी भी है। वर्तमान कूटनीति को देखते हुए भारत के लिए यह सबसे हितकर बात है और यात्रा का सबसे बड़ा वरदान भी यही है।

पाक द्वारा तनाव में वृद्धि

प्रधान मंत्री के विदेश यात्रा के दौरान पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण की तैयारी की जाती रही। पाकिस्तानी शासक अपनी सेना का सीमा पर जमाव करते रहे और भारत को कुचल देने की धमकियां देते रहे।

अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में पाकिस्तान ने अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में पांच मील अन्दर तक नागरिकों को निकालने के पश्चात् सुरंगें बिछा दी थीं और अपनी सीमाओं पर किलाबंदी कर ली थी। पहली मोर्चाबन्दी इच्छोगिल नहर के इस ओर थी, दूसरी इच्छोगिल नहर पर और तीसरी मोर्चाबन्दी इच्छोगिल नहर के उस पार लाहौर की ओर थी। पाकिस्तानी फिरोजपुर, मयदोट, फाजिल्का और सतजुज नदी के मध्यवर्ती क्षेत्रों में भी अपनी स्थिति को मजबूत बना रहे थे।

अगरतला की ओर भारतीय सीमांत गांव कोना बागान और

पड़ोसी गांवों में जो अगरतला से केवल २० किलो मीटर दूर हैं, पाकिस्तानी गोलावारी से २० व्यक्ति घायल हो गये। २३ अक्तूबर को पाकिस्तानी सेना चार वजे शाम से छह वजे के वाद तक गोला-बारी करती रही।

आसाम के कछार जिले में तोड़फोड़ की शिकायतें काफी दिनों से मिल रही थीं। विशेषकर करीम गंज सव-डिवीजन पाक जासूसों से भरा हुआ था। इसी सप्ताह करीम गंज इलाके के लामाजोर और शहदालीपुर गांवों पर दस हजार रुपये का सामूहिक जुर्माना किया गया।

चौवीस अक्तूबर को पाकिस्तानी सैनिकों ने त्रिपुरा के अगरतला और कमालपुर सव-डिवीजन में गोलावारी की। आसाम में करीम गंज के कुछ गांव भी इस गोलावारी से प्रभावित हुए। चौवीस अक्तूबर रात के आठ वजे गोलियां चलनी शुरू हुईं जिसमें पांच व्यक्ति मारे गये और पच्चीस घायल हुए।

वीस अक्तूबर के ऊ थांट के पत्र का उत्तर देते हुए पाकिस्तानी सैनिक तानाशाह ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के महामंत्री भारत और पाकिस्तान का दौरा करें जिससे उपमहाद्वीप में शान्ति स्थापित की जा सके। परन्तु भारत सरकार ने इस सुझाव को मानने से इन्कार कर दिया था।

त्रिपुरा के गांवों और शहरों पर गोलाबारी

अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में केन्द्र शासित क्षेत्र त्रिपुरापर पाकिस्तानी तोपखाने ने गोलावारी तेज कर दी। पाक तोपची सिल्हट जिले में स्थित अपने अड्डे से गोले वरसाते थे। अखौरा में तैनात पाकिस्तानी स्थल सेना के दस्ते हवाई अड्डे के पास लंका भूरा स्थान पर

गोले बरसाते रहे। बीस रजाकारों की एक टोली सिधई पुलिस थाने के अन्तर्गत गंगा मूरा से भारतीय प्रदेश में दाखिल हुई।

अट्ठाईस अक्तूबर को उत्तरी त्रिपुरा जिले के कमालपुर सब-डिवीजन में रातभर गोलावारी की। इसके अतिरिक्त फकीरपारा, तौदीपारा व जलपाईगुड़ी जिले के अन्य गांवों पर रात-भर गोलियां चलाती रही।

उधर बंगला देश में मुक्तिवाहिनी के गुरिल्लाओं ने बोगरा के निकट जमुना नदी में एक गनबोट को ध्वस्त किया। एक अन्य स्थान से २५० राइफलें और गोला-बारूद कब्जे में किया। फरीदपुर जिले के मेदरगंज इलाके में गुरिल्लाओं ने पाकिस्तानी सैनिकों से चीन द्वारा निर्मित २०० राइफलें छीनीं और उन सैनिकों को मार भगाया।

पश्चिमी क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना

पश्चिमी क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना पहली अक्तूबर से २ अक्तूबर तक १३८ बार युद्ध-विराम का उल्लंघन कर चुकी थी। इन उल्लंघनों की सूचना राष्ट्रसंघीय प्रेक्षकों को दे दी गई थी। ये उल्लंघन जम्मू-कश्मीर में सारी युद्ध-विराम रेखा पर कारगिल से छम्ब तक किये गये थे। सबसे ज्यादा उल्लंघन पुंछ क्षेत्र में किये गये थे जिन की संख्या ४३ थी। पाकिस्तानियों ने नये बंकर और खाइयां बनाकर तथा गोलियां चलाकर तथा हमारे क्षेत्र में घुसकर युद्ध-विराम रेखा का उल्लंघन किया था। २३, २४ अक्तूबर तथा २६ अक्तूबर को क्रमशः नौशेरा, जम्मू तथा अखनूर अंचल में पाकिस्तानियों ने हमारी सेना के हैलीकाप्टरों पर गोलियां चलाईं। हालांकि हमारे हैलीकाप्टर हमारे क्षेत्र में थे।

१६ अक्तूबर को उड़ी अंचल में पाकिस्तानी दस्ता घुस आया लेकिन हमारे जवानों ने उसे मार भगाया। २५ अक्तूबर को फि

तीन पाकिस्तानी उड़ी अंचल में हमारे क्षेत्र में घुस आये थे लेकिन हमारे जवानों ने गोलियां चलाकर उन्हें खदेड़ दिया था। ३० अक्तूबर तक जम्मू-कश्मीर के विभिन्न अंचलों में पाकिस्तानी सेनाने पुंछ में ४३ बार, मेधर में २५ बार, कारगिल में २१वार, उड़ी मे १७ बार, नौशेरा में १७ वार, टिथवाल में १६ बार, कैरन में ३ बार, राजौरी में एक वार, छम्ब तथा जम्मू अंचल में एक बार उल्लंघन किया था।

रूसी वायुसेनाध्यक्ष मार्शल कुताखोव को इस्लामाबाद ने पाकिस्तानी क्षेत्र पर उड़कर मास्को से भारत आने की इजाजत देने से इनकार कर दिया था इसलिए उन्हें ईरान होकर लम्बे रास्ते से दिल्ली आना पड़ा इसलिए उनके विमान को दिल्ली आने में १६ घण्टे लगे जवकि पाकिस्तानी क्षेत्र पर उड़ान करके वह छह घंटे में ही मास्को से दिल्ली आ सकते थे।

पूर्वी बंगाल में राजशाही से सतखीरा बहुत बड़ी मात्रा में सैनिकों को तैनात कर दिया गया था। लगभग पैंतीस हजार सैनिकों को इस क्षेत्र में तैनात किया गया था। दरसना, मेहरपुर, चौदगां और जैसोर के सीमावर्ती क्षेत्रों में कम से कम पांच ब्रिगेडों की उपस्थिति कीसूचना मिली थी। ईशवारदी, मैरामारा, मेहरपुर, चौदगां और दरसना में पाकिस्तानी सैनिकों ने आगामी चौकियां स्थापित कर ली थीं। भारतीय सीमा के पांच से लेकर दस किलोमीटर के भीतर उन्होंने खाइयां खोद ली थीं। जैसोर, राजशाही और ईशवारदी में हवाई अड्डे थे। इनके अतिरिक्त पाकिस्तानियों ने कुश्तियां और मेहरपुर में भी हवाई पट्टियों का निर्माण कर लिया था। कुश्तिया, जैसोर और खुलना के क्षेत्रों में कई स्थानों परहैलीकाप्टरों के उतरने के स्थान वनायेगयेथे।

३१ अक्तूबर को अगरतला से लगभग चार किलोमीटर दूर लकमारा के पास अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी सेना ने हल्की तोपों के साथ भारतीय सीमांत पर गोलाबारी की थी। पाक सेना ने नेलोनिया नगर के पास भी भारतीय चौकी पर गोले बरसाये। त्रिपुरा के उत्तरी सदर मुकाम कमालपुर नगर तथा उसके आसपास के गांवों पर

पाकिस्तानी सेना लगभग छह घंटे तक गोले बरसाती रही। पाकिस्तानियों ने कुछ पेट्रोल वम्ब भी गिराये। जिससे कुछ मकानों में आग लग गई। कुछ सरकारी भवनों तथा वायरलैस ट्रांसमिशन स्टेशनों को भी इससे भारी क्षति पहुंची।

भारतीय सीमादस्तों ने मजबूत जवाबी कार्रवाई करके कमालपुर कस्बे पर ११ दिन से लगातार गोले बरसाने वाली पाकिस्तानी तोपों का मुंह वन्द कर दिया था।

पाकिस्तानी एजेण्टों ने २९ अक्तूबर को शिलांग के पास एक शरणार्थी शिविर में आग लगा दी। इसमें चार शरणार्थी जल मरे और वहुत-से घायल हो गये। अधिकांश शिविर जल गया था और इसलिए १२ हजार शरणार्थियों को कठिनाइयां पैदा हो गई थीं।

पाकिस्तानी विमान ने एक नवम्बर दोपहर को भारतीय सीमा का उल्लंघन करके श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उड़ान की और भारतीय तोपों की मार से बचकर पाकिस्तान भागने में सफल हो गया था।

युद्ध के बादल

भारत युद्ध नहीं चाहता था, पर लगता था कि पाकिस्तान इसके लिए आमादा था। अमेरिका की 'न्यूज वीक' पत्रिका में प्रकाशित एक इण्टरव्यू में सदर याह्या ने कहा था कि भारत के साथ हमारा युद्ध अवश्यंभावी है। चीन पाकसेना को आवश्यक हथियार और गोला-बारूद देगा। इसी प्रकार का वक्तव्य सदर याह्या खां ने लन्दन के समाचार-पत्र 'डेली मेल' को दिया। उसमें कहा गया था कि चीन २५ वर्षीय बिना ब्याज के उधार पर पाकिस्तान को हथियार दे रहा है। याह्या ने कहा कि भारत भी पाकिस्तान पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा है। असभ्य एवं गंवार भाषा का प्रयोग करते हुए याह्या ने कहा, "मैं आशा करता हूं कि यह औरत (प्रधान मंत्री) समझ ले कि स्वतंत्र बंगला देश का

उदय होना पाक विघटन से भी बढ़कर दुखदायी है। इससे भारत के विघटन का आरम्भ होगा।" सदर याह्या ने यह स्वीकार किया कि पाकिस्तानियों ने बंगालियों से अच्छा व्यवहार नहीं किया। भारत में बंगला शरणार्थियों की संख्या पचानवें लाख न होकर केवल चालीस लाख है।

पंजाब पर पाक जेट

तीन नवम्बर को चार पाकिस्तानी जेट पंजाब पर उड़ते देखे गये। दो-दो की उड़ानों में पाकिस्तानी सैनिक विमानों ने पंजाब पर दो उड़ानें कीं। इन उड़ानों का उद्देश्य पश्चिमी क्षेत्र के सीमावर्ती इलाकों में सुरक्षा सम्बन्धी सतर्कता को मापना था। भारतीय वायुयानों ने उन जहाजों का पीछा किया। पाकिस्तानी हवाई जहाज भारतीय वायुयानों को देखते ही दुम दबाकर भागे। उन जहाजों का सीमोल्लंघन कम समय के लिए था। संयुक्त राष्ट्रसंघीय प्रेक्षकों को इस उल्लंघन की सूचना दे दी गई और इस विषय में पाकिस्तान को एक कड़ा विरोध-पत्र भी भेजा गया।

छम्ब-जौरिया क्षेत्र में पाकिस्तान ने सेना की तीन डिवीजनें तैनात कर दी थीं। इस क्षेत्र में लैफ्टिनेंट जनरल टिक्का खां कोर कमाण्डर थे। वे लोग बंकर और खाइयां बना रहे थे।

पश्चिमी बंगाल के नाडिया जिले के निकट बंगला देश में भारतीय सेनाओं से हुई मुठभेड़ में चार नवम्बर को पन्द्रह पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। पाकिस्तानी सैनिकों ने परागपुर, कामदेवपुर, घोपाखली, ईश्वरचन्द्रपुर से भारत के गांवों की ओर गोलियां चलाईं। कई गोले भारत की सीमा में पड़े। दो नवम्बर को राजगंज के एक गांव में पाकिस्तानियों के गोलाबारी करने के कारण दो भारतीय मारे गए थे।

भुट्टो की चीन यात्रा

एक पाकिस्तानी शिष्ट मंडल भूतपूर्व विदेश मंत्री जेड० ए० भुट्टो के नेतृत्व में पांच नवम्बर को चीन की राजधानी पीकिंग पहुंचा। शिष्ट मण्डल का उद्देश्य सैनिक, कूटनीतिक व राजनीतिक सहायता प्राप्त करना था। इस शिष्ट मंडल में पाकिस्तानी वायुसेनाध्यक्ष, एयर मार्शल ए० रहीम खान, भूतपूर्व सचिव सुल्तान मोहम्मद, चीफ ऑफ जनरल स्टाफ लेफ्टिनेंट गुलहसन, रीयर एडमिरल ए० रशीद भी सम्मिलित थे।

पाकिस्तानी शिष्ट मण्डल के सम्मान में राजकीय भोज के अवसर पर चीन के कार्यवाहक विदेश मन्त्री श्री ची पिंग ने भारत पर आरोप लगाया कि वह पाकिस्तान के आन्तरिक मामलों में दखल दे रहा है और पाकिस्तान को युद्ध की धमकी दे रहा है। श्री ची पिंग ने यह भी कहा कि पूर्वी बंगाल की समस्या को हल करने के लिए पाकिस्तानी जनता को स्वयं कोई युक्तिसंगत रास्ता ढूंढ़ना चाहिए। यदि पाकिस्तान पर किसी देश का हमला हुआ तो चीन की सरकार तथा जनता पूरी तरह पाकिस्तान सरकार तथा अपनी सार्वभौमिकता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वहां की जनता द्वारा किये जा रहे संघर्ष का सदा की भांति समर्थन करेगी। हमारा विश्वास है कि पाकिस्तान की अधिकांश जनता देशभक्त है तथा वह राष्ट्रीय एकता तथा देश की अखण्डता को कायम रखना चाहती है। और आन्तरिक फूट तथा बाह्य हस्तक्षेप का विरोध करती है।

भोज में चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाऊ-एन-लाई भी उपस्थित थे।

राजनीतिक प्रक्षेक इस बात को महत्त्वपूर्ण समझते थे कि चीन के कार्यवाहक विदेश मन्त्री ने बंगला देश को पाकिस्तान का आन्तरिक मामला बताने के साथ यह भी कहा है कि बंगला देश की समस्या पाकिस्तान के लोगों को स्वयं सुलझानी चाहिए। पाकिस्तान रेडियो ने इसका अर्थ अपने अनुकूल मरोड़कर पेश किया था। रेडियो का

कहना था कि इसका मतलब यह है कि पाकिस्तान को अपनी समस्याएं स्वयं सुलझानी हैं अर्थात् उसकी सरकार को ऐसा करना है। पाकिस्तान-चीन वार्ता के वारे में कोई विज्ञप्ति जारी नहीं की गई। पूछे जाने पर श्री भुट्टो ने कहा था, हम विज्ञप्ति की कोई आवश्यकता नहीं समझते।

लन्दन टाइम्स के संवाददाता ने खबर दी थी कि भुट्टो के नेतृत्व में पाकिस्तानी शिष्ट मण्डल की पीकिंग यात्रा असफल रही है और इससे इस्लामाबाद में भारी निराशा फैली हुई है। पाकिस्तान के नेता चीन से कोई भी ठोस आश्वासन या समर्थन प्राप्त न कर सके।

भारतीय सीमा के अन्दर से बंगला देश में जो गुरिल्ला गतिविधियां होती थीं उनका चीनी पत्रों में प्रचार कम हो गया था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वियना में आस्ट्रिया के चांसलर ने जब प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भोज दिया तो चीनी राजदूत की भारतीय विदेश सचिव श्री टी० एन० कौल से आधे घण्टे तक मैत्रीपूर्ण वातावरण में विशेष बातचीत हुई। कुछ समय से भारत निरन्तर चीन से सम्बन्ध सुधारने की दशा में प्रयत्न कर रहा था। विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह यह प्रकट कर चुके थे कि भारत चीन के साथ उचित समय पर, राजदूत स्तर पर सम्बन्ध स्थापित करने को तैयार है। संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन के प्रवेश तथा वहां से ताईवान के निष्कासन में तो भारत ने साथ दिया ही; प्रधान मंत्री तथा विदेश मन्त्री ने इसके लिए चीन को बधाई सन्देश भी भेजे परन्तु आगे आने वाली घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि चीन अपने पुराने रुख पर कायम रहा है और बंगला देश के मामले में चीन ने पाकिस्तान का साथ दिया। चीन का यह रुख सच्चाई और मानवता के विपरीत था।

यह स्मरण रहे कि विश्व में चीन ही एक ऐसा देश था जिसने पाकिस्तान शिष्ट मण्डल का स्वागत किया।

सैनिक अधिकारियों को साथ लेकर भुट्टो की चीन यात्रा का एक यह भी उद्देश्य था कि १९६५ के युद्ध की तरह पीकिंग और इस्लामा-

वाद भारत के विरुद्ध योजनाएं वना रहे हैं। वे भारतीयों में ऐसी डरावनी आशंका पैदा करना चाहते थे। शिष्ट मण्डल का दूसरा उद्देश्य था—क्या युद्ध के दौरान चीन पाकिस्तान की सहायता करेगा, क्योंकि पाकिस्तानियों के दिमाग में इस वात की आशंका थी कि चीन पहले की तरह से भारत के विरुद्ध शायद ही उनका साथ दे।

यद्यपि चीनी नेताओं ने वंगला देश में स्वतंत्रता के लिए लड़ रही मुक्तिवाहिनी के विरुद्ध कुछ नहीं कहा, फिर भी भारत-विरोधी प्रसारणों में उसने कमी नहीं की। चीन ने वंगला देश में पाकिस्तानी सैनिक अधिकारियों द्वारा किए जा रहे कत्लेआम के वारे में कुछ न कहकर विश्व के अन्य गुलाम देशों में लड़ रहे स्वतंत्रता सेनानियों के साथ विश्वासघात किया है।

परन्तु भुट्टो की पीकिंग यात्रा के वारे में यह अवश्य कहा जा सकता है कि "वड़े वेआवरु होकर पीकिंग से भुट्टो निकले।" भारत पाकिस्तान के मामलों में दखल दे रहा है, यह वात भुट्टो की पीकिंग यात्रा के दौरान चीन ने दोहराई। किन्तु पाकिस्तानी नेताओं को श्री ची ने सार्वजनिक रूप से यह सलाह भी दी थी कि इस मामले को उन्हें विना किसी वाहरी हस्तक्षेप के भारत के साथ वातचीत करके सुलझाना चाहिए। इसका अर्थ यह लगाया गया था कि चीन यह नहीं चाहता कि पाकिस्तान ऐसा कुछ करे जिससे १९६५ की घटना की पुनरावृत्ति हो और भारत तथा पाकिस्तान के नेता उपमहाद्वीप से वाहर किसी तीसरे देश के नगर में वैठकर किसी को पंच वनाकर फैसला करें। भुट्टो को खुश करने के लिए भारत के वारे में दो-चार कठोर शब्द कहकर भी चीन के नेताओं ने अपने पाकिस्तानी अतिथियों को वताया था कि जो किसी देश का घरेलू मामला है और जिसे हल करने का समूचा दायित्व उस देश की सरकार पर है उस मामले को लेकर किसी पड़ोसी देश से युद्ध करने का वहाना नहीं वनाया जा सकता।

चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाऊ-एन-लाई ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम एक सन्देश में ... भी कि भारत

और चीन के लोगों में मित्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी। सन्देश पर १५ नवंबर की तिथि थी। चीन के संयुक्त राष्ट्र में प्रवेश पर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने वियना से श्री चाऊ-एन-लाई को जो बधाई का तार भेजा था उसी के उत्तर में श्री चाऊ-एन-लाई ने जवाब दिया था। वह उत्तर मूल रूप में इस प्रकार था :

महामहिम इन्दिरा गांधी भारत की प्रधानमन्त्री,

'संयुक्त राष्ट्र' की जनरल असैम्बली के छब्बीसवें अधिवेशन में आपके देश ने २३ राष्ट्रों द्वारा उस प्रस्ताव का समर्थन कर मेहरबानी की जिसमें चीन को 'संयुक्त राष्ट्र' में सभी न्यायसंगत अधिकार देने तथा च्यांगकाई शेक के प्रतिनिधि को तत्काल संयुक्त राष्ट्र तथा उसके सभी संगठनों से निष्कासित करने की मांग की गई थी। प्रस्ताव के पारित होने पर आपने मुझे बधाई का तार भेजा। चीन सरकार तथा चीनी जनता की ओर से मैं आपको, आपकी सरकार तथा जनता को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। चीन और भारतीय जनता के बीच मित्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहे।

चाऊ-एन-लाई-प्रधानमन्त्री

पाक द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिक कार्यवाहियां

१५ नवम्बर को नदिया जिले की चौकी पर पाक ने एक बहुत बड़ा हमला किया। यह सीमा चौकी नदिया जिले में शिकारपुर के पास सीमा से तीन किलोमीटर भारतीय क्षेत्र में थी। पाकिस्तानियों ने बड़ी तोपों के साथ इस छोटी-सी चौकी पर सवेरे कुहांसे में हमला किया था परन्तु यह हमला असफल रहा और इसमें १३५ सैनिक मरे व अनेक घायल हुए। बहुत-से पाकिस्तानी पकड़े गए और काफी सैनिक सामान भी हाथ आया। लगभग दो हजार आठ सौ पाकिस्तानी सैनिकों ने सीमा में घुसकर चौकी पर हमला किया था।

१४ नवम्बर को पाकिस्तानी सेना ने त्रिपुरा के बक्शीनगर गांव पर तोपों से गोले दागे और इससे [illegible] शरणार्थी मारे गए या घायल

हुए। उसी दिन पाकिस्तानियों ने मेघालय में तूरा से दक्षिण-पश्चिम में हमारी सीमा चौकी पर भारी तोपों से गोले दागे। १५ नवम्बर को पाकिस्तानी सेना ने अखौरा के निकट सीमापार से अगरतला पर भारी गोलाबारी की। नगर में ८० गोले गिरे। पाक सेना ने १ बजकर ३० मिनट पर गोलियां चलानी शुरू कीं और १ बजकर ४० मिनट तक चलाते रहे।

१७ नवम्बर को पाकिस्तानी सैनिक अधिकारियों ने ढाका में कर्फ्यू लगाने के बाद घर-घर तलाशी लेनी शुरू की। रेडियो पाक ने बताया कि चार व्यक्तियों को कुछ आनाकानी करने पर गोली से उड़ा दिया गया। बी० बी० सी० ने बताया कि ढाका के पांच जिलों को ब्रिगेडियरों के नियन्त्रण में कर दिया गया।

१६ नवम्बर प्रातः साढ़े आठ बजे पांच पाकिस्तानी सैबर जेटों ने बंगला देश की सीमा पर मेघालय के खासी पहाड़ी जिले के बोरसोरा पर भारतीय सीमा का अतिक्रमण किया। न्यूयार्क टाइम्स के संवाददाता ने शेख नगर से सूचना दी थी कि किसी ने पाकिस्तानी फौजियों को सूचना दे दी कि मुक्तिवाहिनी के लोग आ गए हैं इसपर फौजकेएक बड़े दल ने आठ हजार की आबादी वाले शेखरनगर पर धावा बोलकर नष्ट कर दिया। यह घटना २७ अक्टूबर की है। फौजी मोटर बोटों में आए और बिना चेतावनी दिए उन्होंने हल्ला बोल दिया। शोर सुनकर लोग भागे और जाकर आसपास के जोहड़ों और धान के खेतों में शरण ली। फौजियों ने स्कूल की इमारत को तोड़ दिया और फर्नीचर और दरवाज़ों को ईंधन बनाकर रात का खाना पकाया। उन्होंने कोई तीन सौ गायों और भेड़ों का वध किया। अमेरिकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत जो गेहूं आया था उसे उन्होंने अपनी नावों में भर लिया। यही नहीं याह्या खां के सैनिकों ने एक मस्जिद को जला दिया, एक मन्दिर को भी आगलगा दी गई और मूर्तियों को बुरी तरह तोड़ दिया गया, स्थानीय डाकखाने को लूटा गया और फौजी वहां से डाक टिकट और पैसा लेकर चलते बने। एक ग्रामीणने भरे गले से 'न्यूयार्कटाइम्स'

के संवाददाता से कहा, "देख लिया, साहब, आपकी दी हुई मदद किस काम आ रही है। आप गेहूं, तेल, दवाइयां भेजकर याह्या खां के भेजे हुए इन हत्यारों की मदद कर रहे हैं।

२२ नवम्बर को पाकिस्तानी वायुसेना के ४ सैबर जैट विमानों ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा अतिक्रमण करके कलकत्ता से १०४ किलोमीटर दूर पश्चिम बंगाल में राजघाट के पास वोयरा क्षेत्र पर उड़ान की। भारतीय वायुसेना के नेट विमानों ने उनका पीछा किया और गोलियां दागीं। लेकिन पाक विमान भाग निकले।

संभवतः यह पहला अवसर था जब पाकिस्तानी वायुसेना के सैबर जैट विमानों ने पूर्वी अंचल में भारतीय क्षेत्र का अतिक्रमण किया था। हमारी वायुसेना के नेट विमान १९६५ में पाकिस्तान को सबक सिखा चुके थे और इस घटना में भी उन्होंने पाक-विमानों का पीछा करके गोलियां चलाईं। हमारे लड़ाका नेट विमान पहले से ही आकाश में थे। पाकिस्तानी विमान एक मिनट ही हमारे क्षेत्र पर रह पाए।

कुछ दिनों से पूर्वी सीमा पर पाकिस्तानी गोलाबारी बढ़ गई थी और बंगला देश से लगी लगभग सारी सीमा पर उनकी गोलियां तथा गोले आते रहे थे। पाकिस्तानी बिना कुछ देखे ही हमारे गांवों पर गोले बरसाते रहे थे। २१ नवम्बर को करीमगंज में सीमा पार करते हुए सीमा सुरक्षादल ने दस रजाकारों को उनके हथियारों सहित पकड़ा था। वह तोड़फोड़ के लिए भारत आए थे।

केन्द्रीय सरकार ने भारत और पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के बीच पन्द्रह किलोमीटर क्षेत्र में सभी असैनिक विमानों की उड़ानों पर पाबन्दी लगा दी थी। यह पग जन सुरक्षा और शान्ति के लिए उठाया गया था।

याह्या द्वारा ईद की पेशकश और उसका जवाब

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का सदर याह्या द्वारा ईद के

अवसर पर दी गई पेशकश पर जो जवाव था उससे अधिक माकूल जवाव और कोई नहीं हो सकता था। इस पेशकश में सदर याह्या ने कहा था कि अच्छा होगा कि भारत पाकिस्तान की ओर मैत्री का हाथ वढ़ाये और अच्छे सम्वन्धों के एक नये युग का श्रीगणेश करे। उत्तर में प्रधानमंत्री ने कहा था कि यदि सदर की इस पेशकश के पीछे ईमानदारी है तो वे शेख मुजीव को रिहा करें, वंगला देश में नकली चुनाव की वात खत्म करें और शरणार्थियों की सुरक्षित वापसी के लिए, आजादी के लिए लड़ने वालों के साथ कोई समझौता कर लें।

जव से पाकिस्तान वना है भारत का न कभी इरादा था और न है कि वह समाप्त हो जाये। उसकी भारत-विरोधी सव कार्यवाहियों के वावजूद वह निरन्तर इस वात की कोशिश करता रहा है कि दोनों के वीच सामान्य सम्वन्ध स्थापित हों और जो विवादास्पद झगड़े हैं उन्हें शान्तिपूर्वक वार्ता द्वारा सुलझा लिया जाये। इसलिए भारत मैत्री अथवा अच्छे पड़ौसी सम्वन्ध कायम करना नहीं चाहता, ऐसी तो कोई वात नहीं थी। पाकिस्तान के सदर को उसके लिए कोई पेशकश करनी पड़े, इसके लिए कोई आधार नहीं वनता। सत्य तो यह था कि सदर याह्या एक ओर भारत के लिए सीमा पर भारी खतरा और देश की कमर तोड़ने वाली शरणार्थी मुसीवत खड़ी करके और दूसरी ओर भारतकी ओर दोस्ती का हाथ वढ़ाकर दुनिया को यह दिखाना चाहता था कि पाकिस्तान तो उससे अच्छे पड़ौसी सम्वन्ध स्थापित करने को तैयार है परन्तु भारत नहीं है।

इसके अतिरिक्त सदर याह्या के इस मैत्री प्रस्ताव से यह ध्वनि नहीं निकलती थी कि वंगला देश में जो कुछ हो रहा था उससे उसकी अन्तिम परिणति के विषय में उन्हें पूर्वाभास हो गया था। पश्चिम पाकिस्तान में भी उनके विरुद्ध जो वातावरण वन रहा था उसे भी वे जानते थे। सवसे वड़ी वात तो यह थी कि वे इस सत्य से भी दूर नहीं थे कि भारत और पाकिस्तान के वीच युद्ध होता है तो उसका परिणाम उनके लिए १९६५ के भारत-पाक युद्ध से कहीं अधिक भयानक हो

सकता है। फिर दुनिया के वड़े राष्ट्रों का जो दवाव उनपर पड़ रहा था उसके प्रति भी वे एकदम उदासीन नहीं हो सकते थे। इन सवका ही सम्मिलित परिणाम यह था कि सदर याह्या ने भारत से मैत्री की पेशकश की थी। भारत को मैत्री से क़व इनकार था, पर उसके लिए पाकिस्तान को आवश्यक वातावरण तैयार करना चाहिये था। एक ओर तो वह सीमा पर सेनाओं का भारी जमाव कर स्थल और आकाश के रास्ते आक्रमण, अतिक्रमण करता रहे और दूसरी ओर यह आशा करे कि भारत ने सीमा पर जो सुरक्षात्मक कार्यवाहियां की हैं वह उन्हें खत्म कर दे। इसलिए पहली वात तो यह थी कि पाकिस्तान इस सव फौजी जमाव और आक्रमण, अतिक्रमण को खत्म करता। यह इस वात का पहला मजबूत सबूत होता कि याह्या ने भारत के सम्मुख जो पेशकश की थी, उसमें कोई जान थी।

मानवता के नाते भारत सरकार के लिए यह तो संभव नहीं था कि वह शरणार्थियों के लिए अपने दरवाज़े वन्द कर देती। फिर सवसे वड़ी वात यह थी कि अपने पाप को छिपाने और अपने को लोकतंत्री सिद्ध करने के लिए पाकिस्तान वंगला देश में पुनः चुनाव का नाटक रच रहा था। इससे शरणार्थी समस्या हल नहीं हो सकती थी। मैत्री के लिए आवश्यक वातावरण पैदा करने का एक ही तरीका था कि शेख मुजीव को छोड़ दिया जाये जो वहां आजादी के लिए लड़ने वालों का सर्वसम्मत नेता था। उसे छोड़े बिना न तो जनता में ऐसा विश्वास पैदा हो सकता था कि वह वहां से भागना वन्द कर दे और न उस समझौते की भूमिका तैयार हो सकती थी जिससे वहां एक सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हो सके। इसलिए यदि सदर याह्या सच्चे दिल से यह चाहते थे कि भारत के साथ पड़ोसी सम्वन्धों का नया युग शुरू हो तो वह इसके विना नहीं हो सकता था।

भारत की जवाबी कार्रवाइयां

पाकिस्तान पूर्व और पश्चिम क्षेत्रों में उकसाने वाली कार्यवाहियां

लगातार कर रहा था। उसके विमाने भारतीय सीमा का अतिक्रमण कर रहे थे। २४ नवम्बर को भारतीय संसद में रक्षा उत्पादन मंत्री श्री शुक्ल की इस घोषणा पर गड़गड़ाहट के साथ तालियां बजीं कि भारत ने पाकिस्तान के तीन लड़ाकू विमान मार गिराये। तीन पाकिस्तानी चालकों को हिरासत में ले लिया गया। यह घटना पूर्वी क्षेत्र में २३ नवम्बर को हुई। पाक विमानों ने यह घुसपैठ दोपहर कलकत्ता से तीस मील दूर उत्तर-पूर्व में बोयरा के समीप की। लगभग दो बजे दोपहर चार सैवर जेट हमारी सीमा की ओर दिखाई दिए, परन्तु चार नेट विमानों को उनका मुकाबला करने का आदेश दिया गया।

पाकिस्तानी विमान वायु सीमा के अन्दर पांच किलोमीटर तक घुस आये थे। उनका सफलतापूर्वक मुकाबला किया गया और इस मुकाबले में चार विमानों में से तीन को मार गिराया गया। पाकिस्तानी चालक पैराशूट के सहारे उतर आये और उनमें से दो के नाम फ्ला० ले० परवेज मेहदी तथा फ्लाइंग अफसर खलील अहमद हैं। तीनों पाक चालकों को कैद कर लिया गया। एक पाकिस्तानी विमान को जमीन से विमान विरोधी तोपों से क्षति पहुंची थी। जिन भारतीयों ने सैवर जेट मार गिराये उनके नाम हैं : फ्ला० लेफ्टि० आर मैं... फ्ला० लेफ्टि० एम० ए० गणपति तथा फ्लाइंग अफ० डी० लैसारस।

संभवतः यह पहला अवसर था, जब १९६५ के बाद इस लड़ाई में तीन सैबर जेटों को मार गिराया गया था।

२३ नवम्बर को प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने मन्त्रिमण्डल की राजनीतिक मामलों की समिति की विशेष बैठक बुलाकर हाल में पाकिस्तानी विमानों को मार गिराने तथा पाकिस्तान द्वारा आपात्कालीन स्थिति की घोषणा किये जाने पर विचार किया। श्रीमती गांधी ने स्थल सेनाध्यक्ष जनरल मानिकशा और वायुसेना अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल पी० सी० लाल से एकसाथ बातचीत की

ऐसी व्यवस्था की गई थी कि हमारे लड़ाका विमान आकाश में उड़ते रहें ताकि सीमा का अतिक्रमण करने वाले पाकिस्तानी

विमानों को देखते ही मार गिराया जाए। इसी व्यवस्था के कारण तीन पाक सैवर विमानों को पश्चिमी बंगाल में गिराने में सफलता मिली।

भारत द्वारा तीन पाकिस्तानी सैवर जेटों का मार गिराया जाना इस वात का स्पष्ट प्रमाण था कि भारत किसी भी अवस्था में अपनी वायुसीमा का अतिक्रमण सहन नहीं करेगा। उधर पाकिस्तानी सेनाओं पर मुक्तिवाहिनी ने जैसोर और सिल्हट में कई क्षेत्रों पर आक्रमण करके न केवल पछाड़ा ही था वल्कि पूर्वी बंगाल के कई स्थानों पर अपना अधिकार भी जमा लिया था। पाकिस्तानी सेना मुक्तिवाहिनी को मिटाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रही थी और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने टैंकों और हवाई जहाजों तक का प्रयोग किया था। रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम ने भारतीय सेनाओं को खुली छुट्टी दी थी कि वह किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को सहन न करें और सीमा के अन्दर घुसने वाले पाकिस्तानी विमानों को मार गिराएं।

पाकिस्तान सुरक्षा परिषद की आपतकालीन बैठक बुलाने की वात सोच रहा था क्योंकि उसके विचार से भारत एक अघोषित युद्ध लड़ रहा है। चीन और अन्य वड़ी शक्तियों द्वारा बीच-वचाव करके समझौता कराने की भी उसे वड़ी आशा थी। पाकिस्तान के राजदूत श्री आगा-शाही ने महासभा की आर्थिक कमेटी में कहा था कि भारत की सेना की बारह डिवीजनों ने पूर्वी बंगाल के चार क्षेत्रों पर हमला कर दिया है। भारतीय राजदूत श्री समरसेन ने इस आरोप को झूठा वताते हुए कहा कि पाक इस प्रकार के आरोप लगाकर असली समस्या को नजर-अन्दाज कर देना चाहता है।

२१ नवम्वर को वोयरा क्षत्र में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी हमले का मुंहतोड़ जवाब देते हुए १३ पाकिस्तानी टैंक नष्ट किए। यह घटना पूर्वी बंगाल के मुक्तिवाहिनी द्वारा आजाद किए गए बोयरा के आसपास हुई।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने संसद में घोषणा की कि भारत का इरादा युद्ध छेड़ने का नहीं है। उन्होंने कहा, "परन्तु हम १९४७-४८, जनवरी १९६५ और अगस्त-सितम्बर १९६५ का अनुभव नजरअन्दाज नहीं कर सकते।" पाकिस्तान में आपतकालीन घोषणा करके सदर याह्या ने दुनिया की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की है। मार्च से नवम्बर तक भारत ने पाकिस्तान को ८१० सीमा उल्लंघन के ६६ विरोध-पत्र दिए थे। परन्तु इसका कोई असर नहीं हुआ।

विरोधी दलों से मुलाकात करते हुए प्रधान मन्त्री ने विश्वास दिलाया कि इस बार ताशकन्द जैसा कोई भी समझौता नहीं होगा। बंगला देश को मान्यता देने के विषय में उन्होंने यह कहा कि इस प्रश्न को सरकार पर छोड़ दिया जाये। उचित समय आने पर सरकार मान्यता देने से नहीं हिचकिचाएगी।

भारतीय सेना को आदेश दिया गया था कि वह आत्मरक्षा के लिए पाकिस्तान की सीमा में घुस सकती है। उधर मुक्तिवाहिनी ने बंगला देश के चार महत्त्वपूर्ण नगरों सिल्हट, जैसोर, किशोरगंज और राधानगर में पाकिस्तानी सेनाओं को घेर लिया था। छापामारों ने जैसोर हवाई अड्डे का कण्ट्रोल टावर क्षतिग्रस्त कर दिया था। स्वाधीनता सेनानी उत्तर, पश्चिम और दक्षिण तीन दिशाओं से जैसोर शहर की तरफ बढ़ रहे थे। छापामारों ने महत्त्वपूर्ण मुंशी गंज शहर और इसके आसपास के क्षेत्र मुक्त करा लिए थे।

पच्चीस नवम्बर की रात को भारतीय सेना ने हिली नगर के उत्तर में पाकिस्तानी सेना का हमला विफल कर दिया। इस भिड़न्त में पाकिस्तान का एक चैफे टैंक नष्ट हुआ और लगभग ५० पाक सैनिक मारे गये। इस क्षेत्र में सीमांत की अनेक भारतीय चौकियों पर पाकिस्तान के लगातार हमलों के कारण भारतीय सेना को गत ६ दिनों में दूसरी बार रक्षात्मक कार्रवाई करनी पड़ी थी।

पंजाब की सीमा पर पठानकोट के दक्षिण-पश्चिम में और अमृतसर के दक्षिण-पश्चिम में हमारी सीमा चौकियों पर गोलियां चलाईं।

दस दिन में युद्ध

पाकिस्तान के राष्ट्रपति याह्या खां ने कहा, "सम्भव है कि दस दिन में मैं रावलपिण्डी में न रहूं और युद्धक्षेत्र में चला जाऊं।" चीनी शिष्टमण्डल के स्वागत में भोज के अवसर पर भाषण में उन्होंने उपरोक्त बात कही। सैनिक तानाशाह ने यह भी कहा, "दूसरे लोग यह भी सुन लें कि चीनी सदा की भांति हमारे मित्र हैं।"

सैनिक तानाशाह ने आपतकालीन घोषणा करके नेशनल अवामी पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। स्पष्ट था कि पश्चिमी पाकिस्तान में राजनीतिक गड़बड़ी के आसार थे। मार्च के बाद शेख मुजीब की अवामी लीग पार्टी के बाद यह दूसरा राजनीतिक दल था जिसपर पाबन्दी लगाई गई थी। १९५७ में नेशनल अवामी पार्टी का गठन हुआ था। १९७० में नेशनल अवामी पार्टी के दो मुख्य समुदाय थे चीन समर्थक ग्रुप और रूस समर्थक ग्रुप। भाशानी के चीन समर्थक ग्रुप ने १९७० के आम चुनावों का बहिष्कार किया था परन्तु नेशनल असेम्बली में रूस समर्थक ग्रुप ने ६ सीटें जीती थीं। नेशनल अवामी पार्टी के नेता सैनिक अधिकारियों के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते आ रहे थे।

नेशनल अवामी पार्टी के दोनों ग्रुपों के नेता—भाशानी और मुजफ्फर अहमद भारत की शरण में आ गए थे। वे पाक सैनिक अधिकारियों की पहुंच से बाहर थे। पश्चिमी पाकिस्तान के दोनों प्रान्तों—सीमान्त प्रान्त और बिलोचिस्तान में नेशनल अवामी पार्टी का बहु मत था। इन दोनों प्रान्तों में स्वायत्तता की मांग जोरों से उठाई जा रही थी। अय्यूब की सैनिक तानाशाही में भी पश्चिमी पाकिस्तान के नेशनल अवामी पार्टी के नेता खान वली खान पर भी इस प्रकार के गम्भीर आरोप लगाये गये थे। याह्या खां ने जिस प्रकार पूर्वी बंगाल में हुए चुनावों के परिणामों की अवहेलना की थी उसी प्रकार वह पश्चिमी पाकिस्तान के चुनावों में भी बहुमत पार्टी की अवहेलना कर रहा था।

२७ नवम्बर को बलूर घाट, हिली क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा पुनः

गोलावारी किए जाने के वाद भारतीय सेना ने पाकिस्तान के तीन टैंकों को नष्ट कर दिया। सात दिन के अन्दर भारत की यह तीसरी सुरक्षात्मक कार्यवाही थी। उक्त टैंकों को मिलाकर पाकिस्तान के अव तक १७ टैंक नष्ट किए जा चुके थे। वलूरघाट कलकत्ता के उत्तर में १७० मील पर है।

सत्ताईस नवम्वर को ही पश्चिमी सीमा में डेरा वावा नानक के उत्तर-पश्चिम में हमारी सीमा के भीतर १०० गज तक दो दलों में ८ पाकिस्तानी घुस आये। हमारी सीमा के सुरक्षा दल के जवानों नें जब उन पर फायर किया तो वे भाग खड़े हुए।

पाकिस्तानी सैबर जेटों का अगरतला हवाई अड्डे पर हमला

दो दिसम्वर को तीन पाकिस्तानी सैवर जेट विमानों ने अगरतला हवाई अड्डे के चारों ओर गोलियां वरसाईं और २४ घण्टे से लगातार अगरतला नगर तथा पास के क्षेत्रों पर गोले दागे। जवाव में अगरतला के भारतीय सेनापति को आदेश दिया गया कि वह पूर्वी वंगाल में घुसकर रक्षात्मक कार्रवाई करे। दोपहर साढ़े वारह वजे यह घटना घटी। एक पाकिस्तानी विमान को गोला लगा और वह गिरता हुआ ढाका की ओर चला गया। शेष दो विमान भाग निकले। नगर की अनेक इमारतों को नुकसान पहुंचा था पर हवाई अड्डे को कोई क्षति नहीं पहुंची थी।

अखौरा से हुई गोलावारी के कारण ६३ व्यक्ति मरे और ४२ व्यक्ति घायल हुए। अगरतला के चारों ओर २५० वर्ग किलोमीटर तक गोलावारी का असर पड़ा और दस लाख रुपये की सम्पत्ति का नुकसान हुआ। नरसिंहगढ़, कुंजवन कालोनी, अभयनगर, जगतपुर, कुंजवन का वेसिक प्रशिक्षण विद्यालय, अखौरा की अग्रिम चौकी,

हपानिया, जसपुर, लंका मुरा, कैम्परा वाजार और ग्रासपास के क्षेत्रों को नुकसान पहुंचा।

दिल्ली में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्मुख भाषण देते हुए प्रधान मंत्री ने कहा कि "भारत ग्राक्रामण नहीं कहा-जा सकता। पांच वर्षों में समय बदल चुका है। यदि कोई देश हमें ग्राक्रामक घोषित करके यह सोचे कि वह हम पर दबाव डाल सकता है ताकि हम राष्ट्रहित को भूल जायें, तव वह देश कल्पना-लोक में विचर रहा है ग्रौर उसका कल्पना-लोक में विचरना ही ग्रच्छा है।

"१९६५ के भारत-पाक युद्ध में ब्रिटेन ने हमें ग्राक्रामक घोषित करके एक गलती की थी जिसको उन्होंने वाद में स्वीकार किया। परन्तु ग्रव वे स्वयं देख सकते हैं कि वंगला देश में क्या हो रहा है।"

पाकिस्तान का ग्राक्रमण

तीन दिसम्बर सायं के साढ़े ५ वजे के कुछ क्षण वाद पाकिस्तानी लड़ाका विमानों ने भारत के ग्रमृतसर, पठानकोट, श्रीनगर, ग्रवन्तीपुर, उत्तर लाई, जोधपुर, ग्रम्वाला ग्रौर ग्रागरा के हवाई ग्रड्डों पर एक जोरदार हमला किया। ग्रमृतसर हवाई ग्रड्डे पर सबसे भारी हमला हुआ। पाकिस्तान के लड़ाका विमानों ने लगातार ग्राध घण्टे तक ग्रमृतसर हवाई ग्रड्डे पर उड़ान भरी ग्रौर वम्व डाले। हमारी विमानभेदी तोपों ने उनका मुकावला किया।

शाम के समय रक्षा मंत्रालय के एक प्रवक्ता का कहना था, "सदर याह्या खां ने भारत से दस दिन में सम्पूर्ण युद्ध छेड़ देने का वचन पूरा किया है।" इस हमले में पाकिस्तान वायुसेना ने फ्रांस निर्मित मिराज हवाई जहाजों और एफ-४६ सैबर जेट विमानों का इस्तेमाल किया था। लगभग वीस लड़ाका विमानों ने हमले में भाग लिया था। अमृतसर में स्थित राडार स्टेशन पर भी दुश्मन के विमान गुजरे परन्तु ठीक निशाने पर वम्ब नहीं गिरा सके। पाकिस्तानी विमानों ने १२

मिनट तक श्रीनगर और अवन्तीपुर हवाई अड्डों पर बमबारी की। पुंछ के इलाके में पाक सेना ने भारत की सीमा को पार किया।

यह आक्रमण बिल्कुल अचानक व योजनाबद्ध था। इसकी पूर्व योजना का पता इस बात से चलता है कि पाकिस्तान रेडियो ने सवा ६ के समाचारों में भारत पर यह आरोप लगाया कि भारत भारी संख्या में आक्रमण कर रहा है। वास्तव में पाकिस्तानी लड़ाका विमान उस समय भारतीय हवाई अड्डों पर आक्रमण कर रहे थे। उस समय नव चीन समाचार एजेंसी ने भी अपने प्रसारण में भारत पर यही आरोप लगाया था।

जोधपुर हवाई अड्डे पर रात के ११.४० और ११.५० पर आक्रमण हुआ और दो बम्ब गिराये गये। बाड़मेर जिले के उत्तरलाई हवाई अड्डे पर रात के १० बजे से आधी रात के बीच तीन बार हमला हुआ। उसी रात को आगरा पर तीन बार आक्रमण हुए। ये आक्रमण रात के ९ बजे से ११ बजे तक हुए। विमान विरोधी तोपों की मार से एक लड़ाका विमान मार गिराया गया।

अहमदाबाद में ओखा बन्दरगाह की ओर बढ़ता हुआ एक दुश्मन हवाई जहाज देखा गया था। पठानकोट के डेढ़ किलोमीटर उत्तर की ओर घीरा गांव में बमबारी होने के कारण एक असैनिक मारा गया था।

श्रीनगर, अवन्तीपुर (कश्मीर), पठानकोट और अमृतसर पर हुए आक्रमणों में पाकिस्तानी वायुसेना के १४ हवाई जहाजों ने भाग लिया। श्रीनगर पर छः दुश्मन के विमानों ने ५.४० से ६.०८ तक कई आक्रमण किए। अन्वतीपुर पर ६ बजकर ८ मिनट पर आक्रमण हुआ। पठानकोट पर पौने ६ बजे और अमृतसर पर ५ बजकर ४० मिनट पर आक्रमण हुआ। फरीदकोट हवाई पट्टी पर खड़े एक हल्के विमान को नुकसान पहुंचा और तीन टन का छोटा ट्रक ध्वस्त हो गया।

पुंछ के क्षेत्र में ८ पाकिस्तानी वायुयानों ने भारतीय वायुसीमा का अतिक्रमण किया परन्तु जल्दी ही वे वापस लौट गए। अमृतसर हवाई

पर हुए आक्रमण में विमान भेदी तोपों ने एक पाकिस्तानी हवाई जहाज को निशाना बनाया। वह जहाज अपनी ऊंचाई खोता हुआ नीचे की ओर उड़ता हुआ देखा गया था।

रात के साढ़े ९ बजे दुश्मन के विमानों ने आगरा के हवाई अड्डे पर हमला किया। अम्बाला पर भी दुश्मन के विमानों ने उड़ानें भरीं।

प्रधान मंत्री का भाषण

रात को १२ बजकर बीस मिनट पर प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी ने राष्ट्र पर हुए हमले की सूचना देते हुए कहा, "राष्ट्र पर आए घोर संकट के समय मैं आपसे बोल रही हूं। तीन दिसम्बर की सायं साढ़े ५ बजे के शीघ्र बाद पाकिस्तान ने हम पर युद्ध थोप दिया है। पाकिस्तानी वायुसेना ने अचानक अमृतसर, पठानकोट, श्रीनगर, अवन्तीपुर, उत्तर लाई, जोधपुर, अम्बाला और आगरा के हवाई अड्डों पर आक्रमण कर दिया है। उनके फौजी दस्तों ने सुलेमंकी, खेमकरण, पुंछ और अन्य क्षेत्रों पर गोलाबारी की है।

"मार्च के महीने से हम एक बहुत भारी वजन और दबाव सहते आये हैं और हमने बहुत कोशिश की कि कोई शान्तिपूर्ण समाधान निकल जाये और उस जाति को बर्बादी से बचाया जाये जिसका एकमात्र अपराध यही था कि उसने लोकतंत्रीय रीति से अपनी राय जाहिर की थी। परन्तु दुनिया ने असली कारणों को नजरअंदाज कर दिया। और कुछ परिणामों तक अपने आप को सीमित रखा। हालत तो बिगड़नी ही थी। साहसी स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान को उन मूल्यों की रक्षा के लिए जोखम में डाला है जो हमें प्रिय हैं।

"बंगला देश पर छेड़ा गया युद्ध आज हम पर छेड़ा गया युद्ध हो चुका है। इससे मेरी सरकार पर और भारत की जनता पर एक भारी उत्तरदायित्व आ पड़ा है। हमारे लिए और कोई चारा नहीं है कि

हम अपने देश को युद्ध स्तर पर लायें। हमारे जवान और सेनाएं देश की रक्षा के लिए तत्पर हैं। सम्पूर्ण भारत में आपत्तकालीन घोषणा कर दी गई है। प्रत्येक आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। हम हर परिणाम के लिए तैयार हैं। मुझे इस बात में जरा भी सन्देह नहीं है। हम संगठित होकर पाकिस्तान के इस अचानक हमले का पूरी तरह मुकाबला करके दुश्मनों को पूरी तरह पछाड़ देंगे। इस विषय में प्रत्येक राजनीतिक दल और हरेक भारतीय ने सरकार का साथ देने का वचन दिया है।

"हमें कठिनाइयों और त्याग की एक लम्बी अवधि के लिए तैयार रहना है। हम शान्तिपूर्ण जाति के लोग हैं परन्तु हम जानते हैं कि शान्ति तब तक रह नहीं पाती जब हम अपनी आजादी, लोकतंत्र और अपने जीवन मूल्यों की रक्षा न करें। आज हम केवल भारत की अखण्डता के लिए ही नहीं बल्कि उन बेसिक आदर्शों के लिए लड़ रहे हैं जिन्होंने इस देश को ताकत दी है और जिनपर चलकर ही हम अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। आक्रमण का मुकाबला होना ही चाहिए और भारत की जनता पक्के इरादे से, अनुशासन से और संगठित होकर इसका मुकाबला करेगी। जय हिन्द।"

जिस समय यह आक्रमण हुआ भारत की प्रधान मन्त्री कलकत्ता में एक सार्वजनिक सभा में भाषण दे रही थीं। वे तत्काल राजधानी लौटीं और राजनीतिक मामलों की समिति की एक विशेष बैठक बुलायी गई और उसी बैठक में आपतकालीन घोषणा का निर्णय लिया गया और इस निर्णय की पुष्टि पूरे मन्त्रिमंडल ने बाद में की। मन्त्रिमंडल के इस निर्णय के लेने के कुछ क्षणों बाद ही भारत के राष्ट्रपति ने सम्पूर्ण भारत में आपतकालीन घोषणा कर दी। पहली बार आपतकालीन घोषणा चीनियों के आक्रमण के समय २६ अक्तूबर, १९६२ में की गई थी जो १९६५ के पाकिस्तान आक्रमण तक चली। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अब दूसरी बार आपतकालीन घोषणा की गई थी।

रक्षामंत्री श्री जगजीवन राम पटना में थे और वित्तमंत्री श्री. चौहान वम्वई में थे। वे दोनों पालम हवाई अड्डे से सीधे राजनीतिक मामलों की समिति की बैठक में गये। तीनों सेनाओं के अध्यक्षों एवं रक्षासचिव श्री के० वी० लाल ने भी मंत्रिमण्डल की बैठक में भाग लिया।

तीन दिसम्बर की रात को हमारी विमानभेदी तोपों ने जालन्धर के निकट हलवाडा हवाई अड्डे पर दुश्मन के एक विमान को एवं अमृतसर हवाई अड्डे पर दुश्मन के दूसरे विमान को मार गिराया। इसी प्रकार आगरा पर एक विमान मार गिराया गया।

पाकिस्तानी सैनिक तानाशाहों ने बंगला देश का युद्ध भारत का युद्ध वना ही दिया। स्पष्ट था कि पाकिस्तान पूर्वी वंगाल में हो रही आजादी की लड़ाई को दवाने में असमर्थ हुआ। अपनी असफलता को छिपाने के लिए उसने भारत पर आक्रमण कर दिया और 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' वाली कहावत चरितार्थ कर दी। पाकिस्तान विश्व की आंखों में धूल झोंकना चाहता था। अव यह स्पष्ट था कि भारतीय सेना को मुक्तिवाहिनी के स्वतन्त्रता सेनानियों से कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ना था। पाकिस्तान अपने जन्म से शान्तिपूर्ण भारत के लिए एक सिरदर्द वनता रहा था। अपनी जनता की इच्छाओं को कुचलने में पाकिस्तान की सैनिक सरकार कभी नहीं हिचकिचाई। पश्चिमी वायुसेना कमान के एयर चीफ आफीसर कमांडिग एयर मार्शल चीफ इन्जीनियर ने कहा, "एक चालाक दुश्मन ने भारत पर युद्ध थोप दिया है। उसने तमाम सभ्य मानव मूल्यों के प्रति घृणा दिखाई है। यह तीसरी वार है और आने वाली सन्तानों के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम ऐसे युद्धलोलुप सैनिक तानाशाहों को वर्वाद कर दें जो हमेशा भारतीय उपमहाद्वीप में खतरा बने रहे हैं।

"आक्रामक को मार भगाने में भारतीय वायुसेना ने एक महत्त्वपूर्ण योगदान देना है। पश्चिमी वायुसेना कमान के प्रत्येक वायु

सैनिक को गर्व होना चाहिए कि वह ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर वायु-

भूमि की रक्षा के लिए अग्रिम पंक्ति पर है । शत्रु पर उस स्थान पर आक्रमण करना आप का फर्ज है जहां उसे अधिक नुकसान पहुंचे। वायु सैनिकों का साहस और उत्साह, टैक्नीशियनों की कार्यकुशलता, सैनिक और असैनिक अफसरों का अडिग विश्वास इस महान देश की विजय कराकर दुश्मन को छठी का दूध याद दिलाएगा ।

"आप की विजय और कीर्ति में भाग लेना मेरे लिए हर्षपूर्ण कर्तव्य होगा ।"

पाकिस्तान ने इस्राइल की तरह भारत पर आक्रमण करके केवल मुंह की खाई है । भारत को इस तरह के हमले की पहले से ही आशंका थी । इसलिए विमानों को वहुत पहले से हवाई अड्डों से हटा लिया गया था । यही कारण है कि लगातार पाकिस्तानी हमले के वावजूद भी कोई भारतीय लड़ाका विमान नष्ट न हुआ । केवल हवाई पट्टियों को नुकसान हुआ था जिनकी मरम्मत शीघ्र ही कर ली गई थी। मूलतः पाकिस्तान की युद्धनीति असफल रही ।

लंदन के साप्ताहिक पत्र निव स्टेट्समैन ने लिखा था, "भारतीय उपमहाद्वीप में एक राज्य मर रहा है और एक नया राष्ट्र जन्म ले रहा है । पाकिस्तान का जन्म धार्मिक मतान्धता के कारण ही हुआ। प्रथमतः अब वंगालियों की राष्ट्रीयता ने मुस्लिम एकता को तोड़ दिया है और नाराज पठानों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है । अब केवल पाकिस्तान के दो प्रान्त पंजाब और सिन्ध में ही वफादार लोग वच रहे होंगे । पाकिस्तानियों को उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रान्त और विलोचिस्तान में मुसीवत का सामना करना पड़ेगा इसलिए अब वे भारतीय सैनिक दवाव को सहन नहीं कर सकेंगे ।"

"पाकिस्तान को हमारी सहानुभूति नहीं मिलनी चाहिए । मि० जिन्ना की जिद के कारण ही पाकिस्तान एक देश वनाया गया और मुस्लिम लीग ने एक धर्मनिरपेक्ष अखिल भारतीय दल वनने के अवसर खो दिए । आरम्भ से ही इस कृत्रिम राज्य का आधार सैनिक तानाशाही और झगड़ा-फसाद रहा है । और इसने पिछले दो दशकों

अपने बजट का ८० प्रतिशत रक्षा पर खर्च किया है।"

"पाकिस्तान के वर्तमान शासक जितने मूर्ख हैं उतने ही पाशविक हैं। शेख मुजीब के साथ समझौता करने की बजाए सदर याह्या खां ने निर्दोष बंगालियों की हत्या करने के लिए जनरल टिक्का खां और पाकिस्तानी सेना को छोड़ दिया है।"

"पिछले सप्ताह पश्चिमी पाकिस्तान की नेशनल अवामी पार्टी पर प्रतिबन्ध लगाकर और उसके नेताओं को गिरफ्तार करके उसने उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रान्त और बिलोचिस्तान को रुष्ट कर दिया है। और पाकिस्तानी सेना को अब अधिक सतर्कता बरतनी पड़ेगी।"

पूर्वी व पश्चिमी मोर्चों पर भारतीय सेना की भारी सफलता

वायुसेना की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उसने कुछ ही घंटों में पाकिस्तानी युद्ध-तन्त्र को ध्वस्त कर दिया। रात बारह बजे के बाद भारतीय वायुसेना को आदेश दिया गया कि पाकिस्तानी सैनिक महत्त्व के हवाई अड्डों को नष्ट कर दिया जाए। आदेश मिलते ही भारतीय विमानों ने अटक, लोधरान, लालामूसा, धावालानगर, घरनौध, रामविन्ड, ओकरा, मिण्टगुमरी, पसरूर, छम्ब, शकरगढ़, हाजिलपुर, डुंगाडुंगा, मियांवाली, मुरीद, सरगोधा, शोरकोट, चन्दर, रिसालवाला तथा कराची तक के हवाई अड्डों पर भयंकर बम्बवर्षा की। किराची हवाई अड्डे पर खड़े नौ सैबर जेटों और मिराज ३-ई विमानों को ध्वस्त कर दिया। और सामना करने के लिए आए स्टार फाइटर तथा सैबरों का भी आकाश में सफाया किया। इस पहली मार में हीं पाकिस्तान के ३३ विमान नष्ट हुए। दो दर्जन हवाई अड्डों को ध्वस्त कर दिया। एक जलपोत पकड़ लिया और दो तोपची जलपोत डूबा दिए। हमारे जवानों ने एक दर्जन टैंक तोड़ दिए और बंगला देश

में तीन ओरसे बड़े पैमाने पर घुसकर बहुत-से इलाके को आजाद कर दिया।

हमले के प्रारम्भ में भारतीय वायुसेना ने छः वायुयान पश्चिमी पाकिस्तान में और पांच वायुयान बंगला देश में खोये। भारतीय वायु सेना के विमानों को अड्डे पर खड़े हुए बरबाद नहीं किया जा सका। हमारे तमाम सैनिक अड्डे काम कर रहे थे। और बंगला देश में पश्चिमी पाकिस्तान की वायुसेना को बरबाद कर दिया गया था।

भारतीय नौसेना ने आजाद भारत के इतिहास में पहली बार पूर्व बंगाल की मजबूत नाकेबन्दी की थी। काक्स बाजार और चटगांव बन्दरगाहों पर भयानक हमले किए थे और यह आदेश दिया था कि पूर्व तथा पश्चिमी पाकिस्तान की बन्दरगाहों को आते-जाते सभी देशों के जलपोतों की तलाशी ली जाएगी और जिस जलपोत में पाकिस्तान के लिए युद्ध-सामग्री जाते देखी जाएगी उस जलपोत को भारतीय बन्दरगाह पर जबरन ले जाया जाएगा।

भारतीय सेना कई स्थानों पर बंगला देश की सीमा के अन्दर घुसी और शमशेर नगर पर अधिकार कर लिया और इसके साथ ही ठाकुर गांव दर्शना और गार्जीपुर को कब्जे में किया। अखौरा और जैसोर में डटकर मुकाबला किया।

पश्चिमी क्षेत्र में दुश्मन ने बख्तरबन्द दस्तों के साथ छम्ब और हुसैनीवाला क्षेत्र में भारतीय चौकियों पर हमला किया परन्तु उनको बहुत नुकसान के साथ पछाड़ दिया गया। पाकिस्तान ने छम्ब में ६ पैटन टैंक और इसी प्रकार हुसैनीवाला में छः टैंक गंवाए।

टिथवाल के दक्षिण-पूर्व की ओर एक पाकिस्तानी चौकी पर और हाजीपीर के बीच एक पहाड़ी पर कब्जा कर लिया गया। भारतीय सेना ने ६१ पाकिस्तानी सैनिकों को बन्दी बनाया। ३३ पाकिस्तानी विमानों में से बरबाद किए जाने वाले १९ विमान पश्चिमी क्षेत्र में से थे और चौदह बंगला देश के। पाकिस्तान अब तक १९ सैबर जेट वायुयान तथा मिग १९ वायुयान, ५ बी-५७ लड़ाका विमान, ३ मिराज

दो एफ-१०४ फाइटर, तीन छोटे विमान तथा एक परिवहन विमान गंवा चुका था।

भारतीय वायु सेना के हंटर विमानों ने कराची के निकट मसरूर हवाई अड्डे पर आक्रमण करके दिन में ही ९ विमानों को नष्ट कर दिया था। इनमें ८ सैबर जेट विमान और एक बी-५७ बम्ब गिराने वाला वायुयान था। भारतीय वायु सेना के तमाम हंटर विमान सुरक्षित लौट आये।

दुश्मन के अन्य तोड़े गये दस विमानों में से चार बी-५७ बम्ब गिराने वाले, तीन फाइटर बम्बर मिराज III-ई, दो एफ-१०४ स्टार फाइटर और एक एफ-८६ सैबर जेट विमान शामिल थे।

पूर्वी क्षेत्र में पाकिस्तानी वायु सेना के बर्बाद किए गये चौदह विमानों में से दस सैबर जेट विमान, तीन छोटे विमान और एक माल ढोने वाला विमान शामिल थे। मालवाहक जहाज को हवाई अड्डे पर ही ध्वस्त किया गया था और उसे आग लग गई थी। ये नष्ट किए गये विमान पिछले सप्ताह नेट विमानों द्वारा ध्वस्त तीन पाकिस्तानी सैबर जेट विमानों के अतिरिक्त थे जिनको बोयरा पर मार गिराया गया था।

भारत ने दो हंटर विमान, एक एच० एफ०-२४ और एक एस० यू-७ विमान खोये थे।

भारतीय वायु सेना के वायुचालकों ने बताया कि परिणाम सन्तोषप्रद निकले हैं। भारतीय विमानचालकों ने बादीन (कच्छ) के निकट पाकिस्तानी रडार स्टेशन को क्षति पहुंचायी।

पश्चिमी क्षेत्र में भारतीय फौजों का आगे बढ़ना

भारतीय सेनाएं पाकिस्तानी सेना को पीछे ढकेलती हुई अजनाला, वाघा और खेमकरण सेक्टरों में आगे बढ़ गई थी। रावी नदी के किनारे ग्राम शेरपुर से पाकिस्तानी सेना पीछे हट गई थी। अस्सी पाकिस्तानी सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया गया था और बारह टैंकों को बर्बाद कर दिया गया था। जालंधर में पश्चिमी कमान के

जी० ओ० सी-इन-सी, के० पी० कैन्डथ का कहना था, 'तीन दिसम्बर को हम बचाव पक्ष में थे और आज (चार दिसम्बर) हमने शत्रु को गहरा आघात पहुंचाया है।'

सायंकाल चकरीती और अजनाला पर हवाई आक्रमण हुआ। एक सैवर जेट विमान अजनाला पर और एक सैवर जेट विमान बरनाला पर मार गिराया गया।

दोपहर दो बजे चार या पांच मिराज हवाई जहाजों ने पठानकोट हवाई अड्डे पर हमला किया "हमने एक को मार गिराया और दूसरे को गोली लगी।" जनरल कैन्डथ ने कहा था।

पुंछ में पाकिस्तानी सैनिकों ने उत्तर-पश्चिम की ओर दोतरफा हमला किया। उनके हमले को पछाड़ दिया गया। पाकिस्तान की छब्बीसवीं इनफैन्ट्री ब्रिगेड के ५ सैनिकों को युद्धवन्दी बना लिया गया। पाक सैनिकों ने मेढर पर भी आक्रमण किया परन्तु हर बार उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

चनाव नदी के पश्चिम की ओर छम्ब सैक्टर में एक बख्तरबंद ब्रिगेड के साथ एक इनफैन्ट्री ब्रिगेड ने आक्रमण किया। 'हमने छः टैंक गंवाये और शत्रु को अत्यधिक हानि पहुंचाई।'

सायंकाल साढ़े ७ बजे हुसैनीवाला के दूसरी ओर पाक सैनिकों ने एक हमला किया और हुसैनी वाला के दूसरे ओर के पुल को नष्ट कर दिया।

पूर्वी क्षेत्र में पाक वायु सेना पूर्णतः ध्वस्त

पूरे बंगला देश की नौसैनिक घेराबन्दी के अतिरिक्त भारतीय वायुसेना के विमानों ने चार दिसम्बर को बंगला देश के ११ हवाई अड्डों पर १७० के करीब उड़ानें कीं तथा लड़ाई में और बमवर्षा द्वारा

१४ पाकिस्तानी विमान नष्ट किए। दुश्मन के पास वहां सिर्फ तीन विमान शेष रह गये थे। दुश्मन के दस विमान सैवर जेट एफ-८६ थे जिन्हें ढाका में कुर्मीटोला और तेजगाँव पर नष्ट किया गया।

भारतीय वायु सेना ने मिग और हंटर विमानों की सहायता से प्रातः सात बजे से एकसाथ लगातार बमवर्षा शुरू की जो दोपहर एक बजें तक चलती रही।

मैमनसिंह जिले में कमालपुर शहर पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया। ३१ ब्लूच रेजीमेंट और डेजर्ट रेंजर्स के १६० के १६० पाक सैनिकों ने, जो कमालपुर चौकी पर थे, भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

वायु सेना के विमानों ने जमुना में खड़े २० सैनिक स्टीमरों में से छः को नष्ट कर दिया तथा शेष को बेकार कर डाला।

रात्रि के बारह बजकर तीस मिनट पर रेडियो से भाषण करते हुए पाकिस्तानी सैनिक तानाशाह याह्या ने कहा कि "यह भारत के साथ अन्तिम युद्ध होगा।" वे बेढंगी उर्दू में लड़खड़ाकर बोल रहे थे। इस्लाम के नाम पर उन्होंने अपनी जनता को 'बारह करोड़ मुजाहिद' कहकर युद्ध के लिए उकसाया। उसने मित्र देशों से सहायता की अपील की।

चार दिसम्बर को संसद ने भारत रक्षा विधेयक पास कर दिया। यह विधेयक पाकिस्तानी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए सरकार को आपतकालीन अधिकार देता है।

पूर्वी कमान के सेनाध्यक्ष लैफ्टीनैंट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा ने कहा था, "मेरा उद्देश्य पाकिस्तानी सेनाओं को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर करना है और मैं तब तक यह कार्यवाही जारी रखूंगा जब तक कि वह आत्मसमर्पण नहीं करते। आई-एन-एस 'विक्रान्त' जो कि खाड़ी बंगाल में खड़ा किया गया था, से विमान उड़कर चटगांव और काक्स बाजार की बन्दरगाहों पर हमला कर चुके थे। चटगांव और नारायणगंज के तेल शोधक कारखाने जल रहे थे। जनरल अरोड़ा

का कहना था कि पाकिस्तान ने पूर्वी बंगाल में चार डिवीजन सेन
(७० हजार से ८० हजार सैनिक) और दो स्ववैड्रन विमानों की लग
रखी थी। "मैं नहीं जानता कि हमारे विमानों की कारवाई के बा
कितने विमान शेष बचे हैं।"

सुरक्षा परिषद में रूस द्वारा बीटो का प्रयोग

अमेरिका द्वारा रखे गए सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव को रूस ने
दिसम्बर को नाकारा सिद्ध कर दिया। चीन ने उस प्रस्ताव का अनु
मोदन किया था। अमेरिका का प्रस्ताव इस प्रकार था, "भारती
और पाकिस्तानी प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए बयानों को सुनने के बा
सुरक्षा परिषद का मत है कि भारत-पाक सीमा पर हो रहे संघर्ष
विश्व शान्ति और सुरक्षा को तत्काल खतरा है।

१. पाकिस्तान और भारत सरकार से यह आशा की जाती
कि वे लड़ाई को बन्द करने के लिए तमाम आवश्यक कदम उठाएं।

२. दोनों सरकारें एक-दूसरे के क्षेत्र पर से तत्काल सैनिकों
वापस बुला लें।

३. सुरक्षा परिषद पाकिस्तान अथवा भारत की प्रार्थना पर मह
सचिव को अधिकार देती है कि भारत-पाक सीमा पर युद्धबन्दी
सैनिकों की वापसी के विषय में सूचना देने के लिए राष्ट्रसंघीय प्रेक्ष
की नियुक्ति करे।

४. भारत और पाकिस्तान व अन्य सम्बन्धित समुदायों से
आशा की जाती है कि वह पूर्वी पाकिस्तान में शरणार्थियों के लौट
का वातावरण पैदा करें।

५. अन्य राज्य ऐसा कोई काम न करें जिससे कि उस क्षेत्र
शान्ति को खतरा पैदा हो।

६. भारत और पाकिस्तान की सरकारें महासचिव के उन-सुझा

पर ध्यान दें जिनसे उस महाद्वीप में शान्ति और सुरक्षा पैदा हो सकती है।

७. सुरक्षा परिषद महासचिव से प्रार्थना करती है कि वह इस प्रस्ताव को कार्यान्वित होने पर सूचना दे।

इस सुझाव में भारत और पाकिस्तान को एक समान ही समझा गया था। दोनों देशों में कोई अन्तर नहीं देखा गया था।

सोवियत रूस के प्रतिनिधि मि० मलिक का कहना था कि पूर्वी बंगाल में राजनैतिक समाधान पर बल दिया जाये जिससे भारत आये शरणार्थी वापस लौट सकें।

अमेरिका द्वारा रखे गये प्रस्ताव का ग्यारह सदस्यों ने अनुमोदन किया। ब्रिटेन और फ्रांस ने मतदान में भाग नहीं लिया। सोवियत रूस नें अपने निषेध मत का प्रयोग किया। रूस के राजदूत श्री जैकब मलिक ने अमेरिका के प्रस्ताव को एकपक्षीय और अस्वीकार्य करार देते हुए कहा कि यह प्रस्ताव उत्तरदायित्व को ठीक पार्टी से उठाकर गलत पार्टी पर रखता है। यदि पाकिस्तान बंगालियों के नेता से बात-चीत करने से इनकार न करता तो यह हालत पैदा न होती। पाकि-स्तानी सैनिक अधिकारियों की कार्यवाहियों के कारण ही यह हालत पैदा हुई है और भारत को एक नये प्रकार के आक्रमण का सामना करना पड़ रहा है। यही एक कठोर यथार्थता है। सोवियत रूस ने पाकिस्तान से बार-बार अत्याचार बन्द करने को कहा। भारत में शरणार्थियों की जितनी संख्या मौजूद थी उतनी जनसंख्या संयुक्त राष्ट्र के ८८ देशों की संख्या के बराबर है। मलिक नें चीन के उस आरोप की खिल्ली उड़ाई जिसमें कहा गया था कि भारत ने शरणार्थी सम-स्या पैदा की है। शरणार्थी समस्या पाकिस्तान के घोर अत्याचार और कत्लेआम के कारण पैदा हुई है। मलिक ने कहा कि भारत और पाकिस्तान को इस मामले में एक स्तर पर रखना गलती है।

बेल्जियम, इटली और जापान द्वारा दिये गये सुझाव में भी लड़ाई बन्द करने और सेनाओं की वापसी पर बल दिया गया था।

पाकिस्तान के राजदूत आगाशाही ने पाकिस्तान द्वारा संयुक्त राष्ट्र छोड़ने की तब धमकी दी, जब बंगला देश के प्रतिनिधि को बुलाये जाने की भारतीय मांग को रखा गया।

भारतीय राजदूत समरसेन ने कहा कि पाकिस्तान की जनता सेना द्वारा शासित है। जब चुनाव द्वारा जनता ने अपनी राय प्रकट की तो सेना ने जनता के विरुद्ध कार्यवाही की। श्री सेन ने कहा, "क्या हम इसलिए युद्ध रोक दें ताकि पाकिस्तानी सैनिक कत्लेआम कर सकें, बच्चों को काट सकें, औरतों और लड़कियों के साथ बलात्कार कर सकें।"

चीन के प्रतिनिधि ने भारत पर आरोप लगाया कि शरणार्थी समस्या की आड़ में भारत पूर्वी बंगाल को विजय करना चाहता है। भारत के इस कार्य से एशिया की शान्ति को खतरा है। भारत ने पाकिस्तान पर आक्रमण किया है।

भारत के पश्चिमी बेड़े की सफलता

५ दिसम्बर का दिन भारतीय नौसेना का दिन था। भारतीय नौसेना के पश्चिमी बेड़े के विध्वन्सक जलपोत कराची बन्दरगाह के बीस किलोमीटर निकट पहुंचे और पाक विध्वन्सक जलपोतों पर आक्रमण कर दिया तथा 'खैबर' और 'शाहजहान' विध्वन्सक जलपोतों को जलमग्न कर दिया।

खाड़ी बंगाल में नौसेना ने एक पाकिस्तानी पनडुब्बी को जलतल पर आने के लिए मजबूर किया और वह पनडुब्बी खतरे का संकेत देती हुई अन्तरध्यान हो गई। बाद में नौसेना के मुख्य कार्यालय ने बताया कि वह पनडुब्बी डूब चुकी है। भारतीय नौसेना के एडमिरल नन्दा ने नौसैनिकों को इस शानदार सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि वे शत्रु पर आक्रमण जारी रखें।

रक्षामन्त्रालय के एक प्रवक्ता का कहना था कि चटगाँव में

वन्दरगाह तटस्थ देशों के जहाजों के लिए सुरक्षित नहीं है। नेवी की सफलताओं के अतिरिक्त स्थल और वायु सेना ने शत्रु की सेनाओं पर कामयाव आक्रमरण किये। पूर्वी क्षेत्र में पाँच दिसम्बर को भारतीय वायु सेना ने २३० उड़ानें भरीं। पाकिस्तान वायु सेना का एक भी विमान सामने नहीं आया। अब पाकिस्तान के इस क्षेत्र में केवल तीन सैवर जेट विमान रह गए थे। इन दो दिनों के युद्ध में पाकिस्तान अब तक ४७ विमान जिनमें पांच मिराज थे, ६१ टैंक और वहुत सारे हथियारों से लैस गाड़ियां खो चुका था। भारत के केवल १७ हवाई जहाज नष्ट हुए थे।

५ दिसम्बर को दो पाकिस्तानी एफ-१०४ स्टार फाइटर गिराए गए थे। वंगला देश में चार सौ पाकिस्तानी सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया गया था।

लौंगेवाला (जैसलमेर) पर पाकिस्तानी आक्रमण

पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में रामगढ़ पर कब्जा करने के लिए आक्रमरण किया था। भारतीय सेनाओं ने १४ चीन निर्मित टी-५९ पाकिस्तानी टैंक बरबाद किए, और हवाई आक्रमणों के कारण २३ अन्य टैंक वरबाद हुए। पाकिस्तानी सैनिकों की घुसपैठ रेगिस्तान में १५ मील अन्दर थी। परन्तु यह सोचा जाता था कि रेगिस्तान में उनकी परिवहन समस्याएं इतनी कठिन हो जाएंगी कि वह वापस नहीं भाग सकेंगे। इस क्षेत्र में पाकिस्तान की ओर से एक वड़े हमले की आशा की जा रही थी।

बाड़मेर सैक्टर

बाड़मेर सैक्टर के गदरा शहर और महाजन की बानी पर भारत

तीय सेनाओं का कब्जा हो गया और सिन्ध के क्षेत्र में भारतीय सेना सोलह मील अन्दर तक गई थीं। महाजन की धानी गदरा रोड दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस क्षेत्र पर किया गया अभियान सफलता से चल रहा था। भारतीय सेनाएं पाकिस्तान के महत्त्वपूर्ण नगर हैदराबाद की ओर बढ़ रही थीं।

भारतीय सेनाओं ने पुंछ के साढ़े चार मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित कस्बा पर अधिकार कर लिया। छम्ब में पाकिस्तानी सैनिकों ने एक पहाड़ी पर अधिकार करने की कोशिश की परन्तु क्षति उठाकर उन्हें वापस जाना पड़ा। १३ फ्रन्टीयर राइफल्स के ५० पाकिस्तानी सैनिक मारे गए।

पाकिस्तानी वायुसेना ने पठानकोट, श्रीनगर, अमृतसर और भुज के असैनिक हवाई अड्डे पर हमले किए, परन्तु कोई हानि नहीं हुई। अमृतसर पर गिराए गए स्टार फाइटर के चालक को पकड़ लिया गया। भारतीय वायुसेना ने दिन में ही पाकिस्तान के हवाई अड्डों पर आक्रमण किए जिनमें लाहौर, मुदीर, मियांवाली, सारकोट, साकेसर (सिगनल यूनिट), सरगोधा और कराची के निकट ड्रिग रोड भी शामिल थे। बंगला देश के काक्स बाजार के ईंधन भण्डार और वायरलैस स्टेशन को बरबाद कर दिया गया था। भारतीय वायुसेना ने ५ दिसम्बर को सौ उड़ानें भरीं, जबकि पाकिस्तानी वायुसेना ने बीस से कम उड़ानें भरीं।

पूर्वी क्षेत्र

अखौरा नगर को अधिकार में कर लेने के बाद भारतीय सेनाएं बंगला देश के पूर्वी क्षेत्र में आगे बढ़ती गईं और ५ दिसम्बर को वे ढाका शहर के १०० किलोमीटर के क्षेत्र के अन्दर थीं। प्रातः छः बजकर तीस मिनट पर अखौरा की रक्षा पंक्तियों को तोड़ा गया और इस रेल और रोड जंक्शन को अधिकार में करके भारतीय सेनाएं आगे बढ़ीं। हमारी सेनाओं का उद्देश्य ढाका पहुंचना था। बंगला देश

के ठाकुर गांव के दक्षिण-पश्चिम में स्थित पीरगंज को भी ५ दिसम्बर को भारतीय सेनाओं ने अपने अधिकार में ले लिया। रंगपुर के ४५ किलोमीटर उत्तर-पश्चिम की ओर हाथीवन्दा भारतीय सेनाओं के अधिकार में था।

मैमनसिंह जिले के कमालपुर को अधिकार में ले लेने के वाद भारतीय सेनाएं जमालपुर की ओर वढ़ रही थीं। उन्होंने पाकिस्तानी सैनिकों को वक्शीगंज के दक्षिण की ओर धकेल दिया था।

वे भारतीय सैनिक टुकड़ियां, जिन्होंने ढाका, चटगांव रोड और रेल लिंक को अधिकारमें कर लिया था, अब वे लक्षम के कस्बे मेंथीं।

भारतीय टुकड़ियां कोमिल्ला के सात किलोमीटर निकट पहुंच गई थीं और कुश्तिया में चौदगां की ओर वढ़ रहीथीं। कोमिल्ला क्षेत्र के मियां वाजार परीकोट और लालगढ़ के इलाके भारतीय सेनाओं के कब्जे में आ चुके थे। सिल्हट में मुंशी वाजार पर भारतीय सेनाओं का कब्जा हुआ और इसमें ३० फ्रन्टियर फोर्स राइफल्स के ३० पाकिस्तानी सैनिकों को पकड़ लिया गया। इसी प्रकार अखौरा में भी वारहवीं फ्रन्टियर फोर्स राइफल्स के कई सैनिकों को पकड़ लिया गया।

कोमिल्ला क्षेत्र में हुई लड़ाई में युद्धवन्दी किए गए पाक सैनिकों में २५वीं फ्रन्टियर फोर्स का कमांडिंग अफसर लैफ्टीनैन्ट कर्नल वेग भी शामिल था। इसी क्षेत्र में २५वीं फ्रन्टियर फ्रोर्स के १३५ पैरा मिलिट्री सैनिकों के साथ आठ जूनियर कमीशण्ड आफिसरों और १०० अन्य सैनिकों को युद्धवन्दी वना लिया गया था।

दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में ५ दिसम्वर को सायंकाल ५ वजे कोट चांदपुर को अधिकार में ले लेने के वाद भारतीय सेना जैसोर की ओर वढ़ी। कोट चांदपुर कुश्तिया जिले में १६ किलोमीटर दक्षिण की ओर स्थित है।

पश्चिमी वंगला देश में दिनाजपुर जिले के खानपुर कस्वे की रक्षा-पंक्तियों को भारतीय सैनिकों ने तोड़ दिया था और वे दिनाजपुर कस्वे की ओर वढ़ रहे थे। खानपुर दिनाजपुर के उत्तर में [illegible] किलोमीटर

की दूरी पर स्थित है।

हिली क्षेत्र में भारतीय सेनाएं चरखई और फूलबाड़ी को अधिकार में ले चुकी थीं। पाकिस्तानियों का गढ़ लाल मुनीरहाट पूर्व और पश्चिम की ओर से घिर गया था। अगरतल्ला क्षेत्र में गोलाबारी होती रही और पहाड़पुर, धानपुर पर गोलियां चलती रहीं।

(५-१२-१९७१) ५ दिसम्बर को भारतीय सेनाओं ने पश्चिमी क्षेत्र में अमृतसर सैक्टर के थेपुरा, करनकी और गुर्की चौकियों को अधिकार में कर लिया और तीन पाकिस्तानी स्टार फाइटरों को मार गिराया गया। दो स्टार फाइटर भारतीय सीमा में हवाई अड्डे के नजदीक पड़े और तीसरा ज़लती हुई अवस्था में सीमा की दूसरी ओर जाता हुआ देखा गया। पाकिंस्तानी विमानचालक स्क्वेड्रन लीडर अमजद हुसैन खान को पकड़ लिया गया। वहावलपुर स्टेशन के निकट पहुंचती हुई एक पाकिस्तानी टुकड़ी पर भारतीय विमानों ने हमला किया और दस टैंकों को वरवाद कर दिया। पश्चिमी क्षेत्र में 'रनियन' चौकी पर हुई लड़ाई में पाकिस्तानी सेना के ईस्ट बंगाल रेजीमैन्ट के ४० सैनिकों को युद्धवन्दी वना लिया गया। ईस्ट बंगाल रेजीमैन्ट के युद्धवन्दियों की संख्या ११७ हो गई थी।

पुंछ में शत्रु सैनिकों ने रक्षापंक्ति को तोड़ने की कोशिश की परन्तु हमारे सैनिकों ने हमले को पछाड़ते हुए ७० पाकिस्तानी सैनिकों को मारा और एक को पकड़ लिया। शेष पाकिस्तानी सैनिक वहुत सारे हथियार और गोला-वारूद छोड़कर भाग खड़े हुए।

छम्ब क्षेत्र में भी पाकिस्तानी हमले को पछाड़ने के वाद भारतीय सैनिकों ने तेरहवीं फोर्स के पचास पाकिस्तानी सैनिकों के शवों को वरामद किया। इस लड़ाई में विमानों ने भी भाग लिया। ५ दिसम्बर की प्रातः ३ वजकर ४९ मिनट, ७ बजे और सवा ७ बजे तीन हवाई हमले हुए। अन्तिम हमले में एक पाकिस्तानी सैबर जेट विमान को मार गिराया गया। हवाई अड्डे को क्षति पहुंचाने की पाकिस्तानी कोशिश असफल रही। पहले हमले में कई पाकिस्तानी विमानों ने भाग

लिया था। भारतीय विमानभेदी तोपों की कार्यवाही करने पर वे भाग खड़े हुए। दूसरे और तीसरे हमले में ६ पाकिस्तानी सैवर जेट विमानों ने भाग लिया। श्रीनगर से सोलह मील दूर वदगाँव तहसील के फलथल गांव पर पाकिस्तानी विमानों ने वम गिराए, १५ घरों को हानि पहुंची।

रूस की चेतावनी

५ दिसम्बर को सोवियत रूस ने अन्य विश्वशक्तियों को चेतावनी देते हुए कहा कि कोई भी देश भारत-पाक युद्ध में हस्तक्षेप करने की कोशिश न करे। यह वक्तव्य रूस की सरकारी समाचार एजेंसी 'तास' में प्रकाशित हुआ था। सोवियत रूस ने कहा था कि भारतीय उपमहाद्वीप में हुई घटनाओं के प्रति रूस उपेक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इन घटनाओं का रूस की सुरक्षा से भी सम्बन्ध है। इन शब्दों में रूस ने चेतावनी दी थी, "सोवियत सरकार का यह विश्वास है कि तमाम देशों की सरकारों को इस संघर्ष में ऐसे कदम नहीं उठाने चाहिए जिससे कि हिन्दुस्तान उपमहाद्वीप में हालत और विगड़े।"

तास समाचार एजेंसी ने यह वक्तव्य सुरक्षा परिषद में उस समय वितरित्त किया जवकि अमरीका के उस प्रस्ताव को रूस ने 'वीटो' कर दिया था, जिसका समर्थन चीन ने भी किया था। अमेरिका के इस प्रस्ताव में युद्ध रोकने और सेनाओं की वापसी पर जोर दिया गया था।

बंगला देश को मान्यता

६ दिसम्बर का दिन बंगला देश के इतिहास में महत्त्वपूर्ण दिन माना जाएगा क्योंकि इस दिन को ही संसार के सबसे बड़े लोकतन्त्र

राष्ट्र भारत ने 'गणप्रजातन्त्री बंगला देश' को मान्यता दी। भारतीय संसद में प्रधान मन्त्री की इस घोषणा का स्वागत जिस उल्लास और हर्ष से किया गया, वह बहुत कम अवसरों पर दिखाई देता है। उस हर्षोल्लास के समय में अध्यक्ष गुरदयालसिंह ढिल्लो को भी परम्परा के विरुद्ध भाग लेते हुए देखा गया। ज्योंही श्रीमती गांधी अपनी सीट से उठीं सदस्यों को उस घोषणा का आभास हो गया था। इसलिए भाषण देने से पहले ही तालियां बज उठीं।

एक लम्बी भूमिका बांधने के बाद प्रधान मंत्री ने कहना शुरू किया, "सदन को यह सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि बंगला देश की सरकार की प्रार्थना पर विचार करने के बाद भारत सरकार ने यह निर्णय किया है कि अब हालात ऐसे हैं कि गणप्रजातन्त्रीय राज्य बंगला देश को मान्यता दे दी जाए। हमारा विश्वास है कि समय व्यतीत होने के साथ-साथ अन्य देश भी मान्यता देंगे और गणप्रजातन्त्रीय बंगला देश राष्ट्रों के परिवार का एक सदस्य होगा।

"इस समय हमें नये राष्ट्र के पिता शेख मुजीबुर्रहमान की याद आती है। मुझे विश्वास है कि यह सदन चाहेगा कि मैं बंगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री और उनके साथियों को इस अवसर पर बधाई दूं। मैं सदन के सामने इस बारे में बंगला देश से हुए पत्र-व्यवहार की प्रतियां रख रही हूं। माननीय सदस्यों को यह जानकर खुशी होगी कि बंगला देश की सरकार ने लोकतन्त्र, समाजवाद, धर्म-निरपेक्षता ही राज्य के निर्देशक सिद्धांत माने हैं। और एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जिसमें जाति, धर्म और लिंग के नाम पर कोई पक्षपात नहीं होगा।

"बंगला देश की विदेशनीति के सिद्धांतों का आधार तटस्थता की नीति और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व है। नया राष्ट्र उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद का विरोध करेगा।

"बंगला देश की सरकार ने अपने नागरिकों की शीघ्र वापसी पर जोर दिया है। हम उन नागरिकों की वापसी के प्रबन्ध में सहायता

देंगे जो अपना घर-बार छोड़कर हमारे देश में आ गए थे। मुझे विश्वास है कि भारत और बंगला देश की जनता और सरकारें पारस्परिक आदर्शों और बलिदानों को ध्यान में रखते हुए अपनी मित्रता बढ़ाएंगी। दोनों देशों की एक-दूसरे की अखण्डता और प्रभुत्वसम्पन्नता के प्रति आदर, अन्दरूनी मामलों में अहस्तक्षेप और समानता की नीति होगी।

"अतः पारस्परिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र का विकास करते हुए हम अच्छे पड़ौसी का आदर्श प्रस्तुत करेंगे जिसपर चलकर ही हम इस भू-भाग में शान्ति, स्थिरता और उन्नति स्थापित कर सकते हैं। हमारी शुभ इच्छाएं बंगला देश के साथ हैं।"

शरणार्थियों की वापसी

६ दिसम्बर को पश्चिमी बंगाल की सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि भारतीय सेना द्वारा आधिपत्य पाकिस्तानी सेना से आजाद कराये गये क्षेत्रों की ओर छोटी-छोटी टोलियां बनाकर शरणार्थी जाने लगे हैं। केन्द्रीय सरकार ने पश्चिमी बंगाल की सरकार से कहा था कि वह शरणार्थियों का अब अन्य राज्यों में स्थानान्तरण न करें। तब तक दो लाख अट्ठावन हजार शरणार्थियों को दूसरे राज्यों में भेजा जा चुका था।

पाकिस्तान ने कूटनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद किया

६ दिसम्बर को भारत से कूटनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा करते हुए पाकिस्तान रेडियो ने कहा कि भारत द्वारा बंगला देश को मान्यता दिए जाने पर ही यह कदम उठाया जा रहा है। पाकिस्तान ने स्विट्जरलैंड से कहा था कि वह भारत में उसके मामलों की देखभाल करेगा। भविष्य में किसी तीसरे देश की मारफत ही आपसी मामलों पर बातचीत सम्भव हो सकेगी।

कोमिल्ला, सिल्हट, फेनी क्षेत्र

भारतीय सेनाओं ने जैसोर के अतिरिक्त अन्य स्थानों में ५

दिसम्बर से ६ दिसम्बर के मध्य काफी सफलता प्राप्त कर ली थी। पाकिस्तान की वायु शक्ति चकनाचूर हो चुकी थी। इसलिए बढ़ती हुई टुकड़ियों को हवाई हमले का डर न था। पूर्व में इक्कीस स्थानों पर घुसपैठ करती हुई सेनाओं को कहीं भी हवाई हमले का सामना नहीं करना पड़ा।

दिनाजपुर जिले में भारतीय टुकड़ियों ने रूहिया और पीरगंज को अधिकार में कर लिया था। दूसरी टुकड़ी ने पार्चागढ़, वोदा, ठाकुरगांव और वीरगंज को जीता। ठाकुरगांव से बढ़ती हुई सेनाएं अत्री नदी के तट तक पहुंच चुकी थीं। दिनाजपुर जिले में ही भारतीय सेनाओं ने वेतापी, फूलवाड़ी और चरखी पर अधिकार कर लिया। नवावगंज की ओर बढ़ती हुई टुकड़ी करतोया नदी के दूसरे तट तक पहुंच चुकी थी। हिली क्षेत्र में लड़ाई जारी रही।

रंगपुर जिले में एक मजबूत भारतीय टुकड़ी ने वड़ाखत्ता, हटी-वंध, वोटमाड़ी और कालीगंज को जीता। लाल मुनीरहाट की ओर अग्रिम टुकड़ी बढ़ती रही। इस जिले में भ्रुंगमाड़ी और नागेश्वरी को कब्जे में कर लिया गया।

मैमनसिंह जिले में कमालपुर और वक्षीगंज को पहले ही अधि-कार में ले लिया गया था।

सिल्हट जिले में जैंतियापुर, कनेरघाट, कुलौरा और शमशेर नगर की हवाई पट्टी को कब्जे में कर लिया गया। टुकड़ियां मौलवी बाजार की ओर बढ़ती गईं।

कोमिल्ला क्षेत्र में भारतीय सेनाओं ने गंगासागर को विजय कर पाकिस्तानी सेना के गढ़ ब्राह्मण वेरिया की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में तीस्ता नदी के उजैनीसर पुल को कब्जे में किया।

फेनी पर भारतीय सेनाओं का कब्जा हुआ। इस विजय में मुक्ति-वाहिनी ने भाग लिया। लक्षम को अधिकृत करने के वाद टुकड़ियां हाजीगंज की ओर बढ़ीं।

घमासान लड़ाई के वाद कुश्तिया जिले में दरशना पर कब्जा

हो सका। अब सेना चौदगां की ओर बढ़ रही थी। इस जिले में जीवन नगर, कोट चांदपुर और खालिसपुर पुल पर भी अधिकार कर लिया गया।

भारतीय सेनाएं जैसौर के दो मील के अन्दर तक पहुंच चुकी थीं। पाकिस्तानी सैनिकों की पूरी ब्रिगेड जैसोर छावनी में थी। रजाकार और मुजाहिद उनकी पीठ पर थे। भारतीय सेना असैनिकों का खून-खराबा नहीं करना चाहती थी इसलिए वे धीमी गति से उस ओर बढ़ रहे थे।

भारतीय वायु सेना ने जैसोर के आसपास थल सेना की टुकड़ियों की बड़ी सहायता की। भारतीय कैनबरा विमानों ने जैसोर की रक्षा पंक्तियों पर और सैनिक महत्त्व के संस्थानों पर बार-बार बम गिराये। जैसोर के हवाई अड्डे के पास एक बटालियन के मुख्य कार्यालय पर भी बम गिराये गये।

जलपोत आई० एन० ए० स० विक्रान्त के हवाई अड्डे से हवाई जहाज उड़कर लगातार हमले करते रहे और दो गन बोटों को ध्वस्त कर दिया। मंगला बन्दरगाह पर भी हमले किए गए।

ढाका के मुख्य हवाई अड्डे तेजगांव पर भारतीय विमानों ने हमले किए और उसे नाकारा बना दिया। कोमिल्ला क्षेत्र में एक अन्य सैबर जेट विमान को ध्वस्त किया। बारह उड़ानों में तेजगांव हवाई अड्डे पर २४ टन बम गिराये गये। ढाका हवाई अड्डे पर सोलह टन बम गिराये गये जिससे रनवे पर सोलह बड़े गड्ढे पड़ गए थे।

दो और जलपोतों पर कब्जा

६ दिसम्बर को पूर्वी नौसेना कमानने सूचित किया कि दो पाकिस्तानी जलपोतों पर कब्जा कर लिया गया है। एक व्यापारिक जलपोत को सागर की गहराइयों में डुबो दिया गया है। एक अन्य जलपोत

को क्षति पहुंचाई गई और पूर्वी वेड़े के विमानों ने हमले जारी रखे। उन एक-एक हजार टन के छोटे जलपोतों में अवैध सामान था और उन्हें कलकत्ता वन्दरगाह के निकट सागर की ओर जवरन ले जाया गया। खुलना, छलना और मंगला वन्दरगाहों पर पूर्वी वेड़े के विमानों ने जवरदस्त हमले किए। चार गन वोटों पर हुए हवाई हमले में दो नष्ट हो गईं और दो को भारी क्षति पहुंची।

छम्ब और पुंछ की भयंकर लड़ाई

६ दिसम्वर को हुई टैंकों की इस लड़ाई में भारतीय स्थल सेना ने वायु सेना की सहायता से २३ पाकिस्तानी टैंकों को नष्ट कर दिया। पी० ओ० के० रेजीमेंट के एक वटालियन कमाण्डर, एक कैप्टन व अन्य कई सैनिकों को युद्धवन्दी वनाया। हमारी दो इनफैन्ट्री व्रिगेड और एक आरमर रेजीमेंट पर हुए आक्रमण के वावजूद भी सैनिक आगे बढ़ते रहे। ५० पाकिस्तानी सैनिकों के शवों को वरामद किया गया। नष्ट किए टैंक चीन मार्का थे। अव तक पाकिस्तान ८१ टैंकों को लड़ाई में खो चुका था।

१९६५ में हुई लड़ाई के अनुभव पर ही पाकिस्तान ने छम्व पर हमला वोला था परन्तु उसे क्षति उठाकर पीछे हटना पड़ा। उनकी इस क्षेत्र को अधिकार में कर लेने की योजना पर पानी फिर गया। तेरहवीं आजाद कश्मीर रेजीमेंट के लेफ्टि० कर्नल वशारत ने भी इस वात को स्वीकार किया है। पत्रकारों ने युद्धवन्दी वनाये गये पाकिस्तानी अफसरों से फील्ड अस्पताल में भेंट की जहां उनका इलाज किया जा रहा था।

जम्मू से ४० किलोमीटर दूरी पर स्थित जौरिया में १९६५ के युद्ध में सदर अय्यूव ने अपनी टुकड़ियों के सम्मुख भाषण दिया था। तव अखनूर के निकट ३० मील अन्दर की ओर पाकिस्तानी सेना घुस आई थी। याह्या खां ने इस वार भी यही सोचा था। उसे शायद पता नहीं था कि इस वार भारतीय सेना उसे छठी का दूध याद दिलायेगी।

पुंछ क्षेत्र में छः दिसम्बर तक २०० पाकिस्तानी सैनिक मौत के घाट उतारे गये और ६०० घायल हुए थे। बारामूला और छम्ब-जौरिया क्षेत्र में पाकिस्तानी विमानों ने ६ उड़ानें कीं। बारामूला के निकट एक सेबों के बगीचे में उन्होंने ४ बम्ब गिराये। और कोई सैनिक महत्त्व का नुकसान नहीं हुआ।

पाकिस्तान इस क्षेत्र पर पूरी ताकत इसलिए लगा रहा था ताकि जम्मू और कश्मीर को शेष भाग से अलग करके कब्जे में कर लिया जाए। परन्तु इस बार भारतीय सेना पहले से कहीं अधिक सतर्क थी।

जम्मू के नौशेरा क्षेत्र में तेरह पाकिस्तानी पैराट्रूपरों को पकड़ लिया गया। वे पाकिस्तानी विमानों द्वारा वहां इसलिए गिराये गए थे ताकि वे भारत में साम्प्रदायिकता का विष फैलाकर झगड़े पैदा कर सकें।

सिन्ध का एक हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र कब्जे में

इस क्षेत्र में बढ़ती हुई सेनाओं ने कई कस्बों को विजय करके बहुत अधिक मात्रा में सैनिक-सामग्री बरामद की थी। ६ दिसम्बर को यह सेनाएं ४-५ मील तक पाकिस्तान की सीमा में थीं। सिन्ध में भारतीय सेनाओं ने एक हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका अपने कब्जे में कर लिया था। बाड़मेर सैक्टर में पिरानी-का-पर और कैलनोर जीतने के बाद सेनाएं आगे बढ़ीं। जैसलमेर क्षेत्र में सीमा से तेरह मील अन्दर की ओर इस्लामगंज को अधिकार में ले लिया गया था। बीकानेर सैक्टर में रूहल को जीत लिया गया। बाड़मेर के सामने फ्लाइट लैफ्टीनेंट के० के० बक्शी द्वारा चालित हमारे विमान से एक पाकिस्तानी सैवर जेट पर गोलियां चलाई गईं। विमान में आग लग गई। नयाछोड़ की ओर उस विमान को आग के शोले के समान नीचे गिरता हुआ देखा गया। बाड़मेर के दानी एक व्यक्ति ने फ्लाइट लैफ्टी० बक्शी को एक हजार रुपये का इनाम दिया। और अरबन इम्प्रूवमैन्ट ट्रस्ट ने उसके शानदार कारनामे के लिए बाड़मेर में एक आवासीय प्लाट भी दिया।

पश्चिमी क्षेत्र की हवाई लड़ाई में ६ दिसम्बर को हमारे विमानों ने एक बी०-५७ विमान तथा तीन सैवर जेट मार गिराए और जम्मू के निकट दो मिराज विमानों के तथा दो सैवर जेट विमानों के गिरने की भी सूचना मिली थी।

अमृतसर, आदमपुर, जम्मू, श्रीनगर, पठानकोट, बीकानेर और चंडीगढ़ पर शत्रु के विमानों ने हमले किए जिससे नगण्य नुकसान हुआ। ओखा हवाई अड्डे के नजदीक एक बी-५७ विमान ने आक्रमण किया। उस पर गोले दागे गए और वह सागर में जाकर टूटा।

पश्चिमी पाकिस्तान में अटक में स्थित तेल शोधक कारखाने को भारतीय वायुसेना ने बम्ब गिराकर आग लगा दी। लोधरान, लालमूसा, धावल नगर, धरनोड़, रायविन्ड, ओकरा, मिन्टगुमरी रेलवे स्टेशनों पर भी बम्ब गिराये गए। मियांवाली, मुरीद, सरगोधा, स्यालकोट, चन्दर और रिसालवाला पर भी बम्ब गिराए गए।

जैसलमेर जिले के लौंगेवाला क्षेत्र में पाकिस्तानी टैंकों की भारतीय सेना से भिड़न्त हुई जिसमें भारतीय वायुसेना ने ३७ पाकिस्तानी टैंक नष्ट कर दिए। इनमें से भारतीय स्थल सेना ने टैंकभेदी गोले छोड़कर चौदह टैंकों को नष्ट किया था और तेईस टैंक भारतीय वायुसेना के हमलों से नष्ट हुए थे। चौदह चीन निर्मित टी-५६ टैंक जलते हुए देखे गए। लौंगेवाला की टैंक लड़ाई १९६५ की खेमकरण की टैंक लड़ाई की याद दिलाती है, जिसमें भारी संख्या में पैटन टैंक नष्ट किए गये थे।

टेलीफोन द्वारा अखौरा से सम्बन्ध

बंगला देश के अखौरा नगर को भारत से टेलीफोन द्वारा जोड़ दिया गया था। डाक-तार के एक प्रवक्ता ने कहा था कि अखौरा से भारत के किसी भाग को और भारत के किसी भाग से अखौरा को फोन किया जा सकता है। यह सेवा ६ दिसम्बर की शाम को साढ़े ५ बजे शुरू की गई।

युद्ध का पांचवां दिन

संयुक्त राष्ट्रसंघ में

अमेरिका के राजदूत जार्ज बुश ने सुरक्षा परिषद में भारत पर यह आरोप लगाया कि उसने पाकिस्तान पर आक्रमण कर दिया है। मि० बुश ने कहा कि युद्ध तुरन्त बन्द होना चाहिए और सेनाओं को वापस बुला लिया जाना चाहिए। इसी प्रकार चीन के राजदूत ह्वांग-हुआ ने सोवियत रूस पर आरोप लगाया कि वह भारत के इस आक्रमण में साथ दे रहा है।

परिषद ने सोवियत रूस के उस प्रस्ताव को रद्द कर दिया था जिसमें लड़ाई को बन्द करने के लिए पूर्वी पाकिस्तान में राजनैतिक समाधान पर बल दिया गया था। परिषद के आठ सदस्यों द्वारा एक अन्य प्रस्ताव रखा गया जिसमें युद्ध को बन्द करने और सेनाओं की वापसी के साथ ही शरणार्थियों की वापसी की बात भी कही गई थी। परन्तु सोवियत रूस ने इस प्रस्ताव को 'वीटो' मत का प्रयोग करके पास नहीं होने दिया।

अमेरिका और चीन ने पाकिस्तान का साथ दिया। उन्होंने भारत को आक्रमणकारी घोषित किया। ब्रिटेन और फ्रांस ने न केवल रूस के प्रस्ताव पर ही मतदान में भाग नहीं लिया, बल्कि आठ देशों द्वारा रखे गए प्रस्ताव में भी मतदान नहीं दिया। भारतीय राजदूत समरसेन क्रोध में आकर बोल रहे थे। उन्होंने अमेरिकी राजदूत बुश से पूछा कि एक लाख बीस हजार भारतीय सैनिकों की पूर्वी बंगाल में उपस्थिति अब उन्हें खलती है परन्तु अस्सी हजार पाकिस्तानी सैनिकों के जुल्म उन्हें क्यों बुरे नहीं लगे।

पोलैण्ड ने सोवियत रूस का साथ दिया। चीन ने रूस के प्रस्ताव के विरुद्ध मत दिया और अन्य बारह सदस्यों ने रूस के प्रस्ताव पर मतदान ही नहीं लिया। प्रस्ताव के पक्ष में दो वोट होने के कारण चीन

का वोट 'वीटो' नहीं माना गया।

तीसरा प्रस्ताव चीन की ओर से रखा गया जिसमें उपमहाद्वीप में हुई घटनाओं में भारत की निन्दा की गई थी। चीन के प्रतिनिधि की प्रार्थना पर उस प्रस्ताव पर मतदान नहीं किया गया।

चीन और रूस के प्रतिनिधियों में कटुता व रोषयुक्त भिड़न्त हुई। चीन बंगला देश के प्रतिनिधि को सुरक्षा परिषद में आमन्त्रित किए जाने के रूसी प्रस्ताव पर बौखला उठा था।

बंगला देश को भारत और रूस द्वारा समर्थन दिए जाने की बात को चीन ने विद्रोह को भड़काने वाली कार्यवाही बताया। चीन इसे संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर का उल्लंघन मानता था।

रूस के प्रतिनिधि जैकब का कहना था कि चीन सुरक्षा परिषद में सहयोग देने की बजाय रूस पर आरोप लगाना अच्छा समझता है। मलिक ने चीन के प्रतिनिधि को याद दिलाया कि दो करोड़ रूसियों के बलिदान को धन्यवाद दिया जाना चाहिए जिससे न केवल सोवियत रूस ही नाजियों के कब्जे से आजाद हुआ है बल्कि उन्हीं के कारण चीन भी जापानी साम्राज्य से मुक्त हो सका है। अन्त में मलिक ने बंगला देश के प्रतिनिधि को सुरक्षा परिषद में आमन्त्रित किए जाने की मांग को नहीं दोहराया और इसको किसी अन्य तिथि तक के लिए स्थगित किया गया।

चीन के प्रस्ताव में मांग की गई थी कि तमाम राष्ट्र पाकिस्तान के न्यायोचित संघर्ष में उसका समर्थन करें और दोनों देशों की सेनाओं को अपने-अपने ठिकानों पर आ जाना चाहिए।

७ दिसम्बर को सुरक्षा परिषद में भारतीय प्रतिनिधि श्री समरसेन ने कहा कि भारत को अमेरिकी मदद न मिलने पर भारत चिंतित नहीं है। हम ऐसी धमकियों से नहीं डरते। भारत को पाक की श्रेणी में रखना बिल्कुल गलत व घातक होगा। सोवियत प्रतिनिधि जैकब मलिक ने चीनी प्रतिनिधि ह्वांग हुआ के कथन का जवाब देते हुए कहा कि सोवियत संघ पाकिस्तान के मामलों पर कोई फैसला नहीं

चाहता लेकिन वह यह भी नहीं चाहेगा कि सुरक्षा परिषद स्थिति वास्तविकता को दरगुजर कर दे। चीनी प्रतिनिधि को लक्ष्य करते श्री मलिक ने कहा कि क्या आपको पता है कि पूर्वी पाकिस्तान जनता ने अपना निर्णय दे दिया था और पाकिस्तान राष्ट्रीय सम्बली की ३१३ सीटों में से १६७ सीटें पूर्वी पाकिस्तान के निर्वाचित प्रतिनिधियों को मिलीं। श्री मलिक ने आगे कहा कि क्या आप पता है कि वहां क्या हुआ और किस प्रकार जनता के अधिकारों को कुचल दिया गया। चीनी प्रतिनिधि के आरोप का खण्डन करते हुए श्री मलिक ने कहा कि भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रभाव जमाने की सोवियत संघ की कोई अभिलाषा नहीं है। उन्होंने कहा कि सोवियत संघ की आबादी २३ करोड़ है। क्या यह सम्भव है कि वह भारत की ६० करोड़ जनता पर प्रभाव जमा सकेगा।

जैसोर की मुक्ति

भारतीय सेना ने ७ दिसम्बर की शाम को बंगला देश में जैसोर को पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिक शासकों के पंजे से आजाद करा दिया और तीन ओर से ढाका की ओर से बढ़ना शुरू किया। जैसोर पूर्व बंगाल की तीन बड़ी छावनियों में से एक है और इस्लामाबाद के शासक इसे अपना एक मजबूत गढ़ समझते थे। ७ दिसम्बर को ही एक दर्जन से अधिक छोटे नगरों के अलावा पूर्वी जिले की राजधानी सिल्हट पर भी कब्जा कर लिया गया था। सिल्हट में जवानों को हैलीकाप्टर द्वारा उतारना पड़ा।

बंगला देश के पूर्व में सिल्हट, मौलवी बाजार, हाजीगंज, छतक, चन्यूगंज और पश्चिम में मेहरपुर, फरीदा पर अधिकार किया गया था। पूर्व में पाकिस्तान की सबसे बड़ी छावनी कौमिल्ला घेर ली गई थी और रंगपुर के लाल मुनीरहाट नगर पर अधिकार कर लिया गया था।

नौसेना के विक्रान्त विमान वाहक से उड़कर विमानों ने चटगांव और खुलना बन्दरगाहों पर बमबारी करके सैनिक प्रतिष्ठानों को ध्वस्त कर दिया था।

नौसेना ने बंगाल की खाड़ी में ६ विदेशी जलपोतों को शत्रु का अवैध सामान ले जाने के आरोप में पकड़ लिया।

जैसोर की छावनी को दोपहर तक साफ कर दिया गया था और शाम को उसपर कब्जा कर लिया गया था। विजयी भारतीय सैनिक और मुक्ति फौज सिल्हट में ७ दिसम्वर को दोपहर साढ़े १२ बजे प्रविष्ट हुए। मेहरपुर, झेनिडा, कालीगंज, नवारन व मौलवी बाजार पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया।

कौमिल्ला का ढाका से पूर्णतः सम्बन्धविच्छेद कर लिया गया था। दिनाजपुर जिले के हिली क्षेत्र में सख्त लड़ाई जारी थी।

पाक-अधिकृत कश्मीर का कुछ भाग मुक्त

जम्मू-कश्मीर के कारगिल अंचल में युद्धविराम रेखा के पास दो पाकिस्तानी चौकियों पर भारतीय फौजों ने कब्जा कर लिया। टिथ-वाल अंचल के पास भारतीय फौजों ने पाक अधिकृत कश्मीर का एक भाग मुक्त करा लिया।

जम्मू के उत्तर-पश्चिम में सारा क्षेत्र भारत के नियन्त्रण में था। साम्वा अंचल में भारतीय अड्डों पर उड़ने वाले पांच में से तीन पाक विमानों को ७ दिसम्वर प्रातः ६ व साढ़े ६ के बीच गिराया गया। विमान का मलवा सांवा से चार किलोमीटर दूर पटैली में गिरा देखा गया। सांवा क्षेत्र में भारतीय सेनाएं और आगे बढ़ रही थीं। पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर के हवाई अड्डे को ध्वस्त करने के इरादे से अमृतसर क्षेत्र पर दस बम गिराए, जिन्हें सैनिक अधिकारियों ने

टने से पूर्व ही निकट के ग्रामों से बरामद कर लिया।

वाड़मेर जिले में मुन्नावाग्रो के निकट भारतीय वायु सेना ने एक पाकिस्तानी सैवर जेट मार गिराया।

भारतीय सेना सिन्ध में ५० किलोमीटर अन्दर

७ दिसम्बर को भारतीय सेनाओं ने कई दिशाओं से हमला करके पश्चिम पाकिस्तान के सिन्ध-हैदराबाद डिवीजन में पांच महत्त्वपूर्ण केन्द्रों पर कब्जा कर लिया था।

भारतीय सेनाएं चछराओ पर कब्जा कर उमरकोट की ओर बढ़ रही थीं। चछराओ पाकिस्तान सीमा में ५० कि० मी० अन्दर है।

एक भारतीय टुकड़ी ने १० किलो मीटर आगे बढ़कर मनकाऊ चौकी पर कब्जा कर लिया। तीन पाकिस्तानी टैंक नष्ट किए और तीन अन्य को क्षतिग्रस्त कर दिया।

पाक सीमा के ७० कि०मी० अन्दर हमारे विमानों ने एक पाकिस्तानी सैवर जेट गिरा दिया। इस पाकिस्तानी विमान ने जैसलमेर हवाई अड्डे पर और भुज खवड़ा क्षेत्र में कुछ स्थानों पर हमला करने की कोशिश की थी। लेकिन विमानभेदी तोपोंकी मार से उसे भागना पड़ा था। वाड़मेर सैक्टर में हमारी सेनाओं ने महेन्द्रोरोपड़, फतहरोपड़, वागल, मनकान और चछराओ चौकियों पर अधिकार कर लिया था। चछराओ सीमा पाकिस्तानी इलाके में ५५ कि० मी० अन्दर है। कच्छ क्षेत्र में हमारी सेनाओं ने दो पाक चौकियों कालीवेग और जलाई पर कब्जा कर लिया था।

पाकिस्तानी वायु सेना की दुर्गति

भारत-पाक युद्ध के पांचवें दिन पाकिस्तानी वायु सेना ने छम्ब के अलावा समस्त पश्चिमी क्षेत्र में सारा दिन कोई हमला करने की हिम्मत न की जबकि भारतीय वमवर्षकों ने पश्चिमी क्षेत्र के लगभग

पुर वाले सैनिक ठिकानों और हवाई अड्डों पर हमला करके शत्रुओं के ६ टैंक नष्ट कर दिए। जम्मू के निकट सांवा क्षेत्र में भारतीय सेनाओं ने एक मिराज विमान मार गिराया।

भारतीय वायु सेना के जैट विमानों ने पश्चिमी पाकिस्तान में कराची से चकलाला, सरगोधा और रावलपिंडी के निकट स्थित हवाई अड्डों और सामरिक महत्त्व के ठिकानों पर भारी हमले जारी रखे। गदरा रोड के निकट शत्रु का एक और विमान गिराने से ध्वस्त हुए पाक विमानों की संख्या ५३ हो गई थी। जम्मू पर ७ दिसम्बर को पाकिस्तानी विमानों ने पांच वार हमला किया लेकिन हर वार उन्हें विमान भेदी तोपों ने खदेड़ भगाया।

श्रीनगर में ६ पाकिस्तानी विमानों ने अवन्तीपुर पर वम वरसाने के निष्फल प्रयास किए। जयपुर में गंगानगर, वाड़मेर और जैसलमेर की नागरिक आवादी वाले क्षेत्रों के निकट भी वम गिराए।

आगरा पर वार-वार हमला करने के वावजूद पाकिस्तानी बमवर्षक यहां के हवाई अड्डे को क्षति नहीं पहुंचा सके। विमान-पट्टी पर तीन वार प्रहार हुआ लेकिन उसकी तुरन्त मरम्मत कर दी गई।

छम्ब कस्बा खाली करना पड़ा

दो डिवीजन पाकिस्तानी सेना तथा उसकी दो ब्रिगेड टैंक और भारी तोपों के दवाव के कारण हमें युद्धविराम रेखा के पास छम्ब कस्बा खाली करना पड़ा था और हमारे जवान मुनव्वर तवी नदी के पूर्वी तट पर हट आये थे। १९६५ में भी पाकिस्तान ने इसी अंचल में भारी हमला किया था। इस वार भी पाकिस्तान ने विमानों से हमारे जवानों पर हमले किए। हमारी सेना ने शत्रु को कड़ी मार दी। उसके ३३ टैंक वर्वाद कर दिए। हमारे केवल पन्द्रह टैंक ही टूटे। यह क्षेत्र दस मील लम्वा और पांच से सात मील तक चौड़ा है और तवी नदी के पश्चिमी तट से युद्धविराम रेखा तक फैला हुआ है। मेंधर अंचल में तथाकथित आजाद कश्मीर का काफी इलाका आजाद करा

लिया गया था।

मेघालय क्षेत्र में सिल्हट से ९३ किलोमीटर दूर सुनामगंज मुक्त करा लिया गया था। पाकिस्तानी फौजों ने मंगला को त्याग दिया और खुलना को खाली कर दिया। भारतीय फौजों ने लालमुनीर-हाट मुक्त करा दिया। कोमिल्ला का मुख्य संचार केन्द्र भारतीय सेना से घिर गया था।

भारतीय फौजों ने सांवा (जम्मू) और माधोपुर (पंजाव) के बीच २० पाक चौकियों पर कब्जा किया। स्यालकोट अंचल में भारतीय फौजें २० किलोमीटर आगे वढ़ गई थीं।

युद्ध का छठा दिन

वंगला देश में पाकिस्तानी वायु सेना का खात्मा हो गया था। ८ दिसम्बर को भारतीय वायु सेना ने अपने हमले में पाकिस्तान के वचे दो अन्तिम सैवर जट विमानों को नष्ट करके इतिहास कायम कर दिया था। पाकिस्तान के १७ विमान पूर्वी बंगाल में गिराये गये और भारतीय सेना के केवल ५ विमान टूटे। भारतीय वायु सेना की एक और वड़ी सफलता थी—गत दो दिनों में शत्रु के भारी दवाव के वावजूद भी सिल्हट जिले में शस्त्रास्त्र, गोला-वारूद और राशन सहित चार सौ पच्चीस अधिकारियों व अन्य सैनिकों को हैलीकाप्टरों द्वारा उतारा।

लड़ाई के छठे दिन भारतीय फौजों ने कोमिल्ला हवाई अड्डे तथा ब्राह्मणवारिया पर कब्जा करके भारी सफलता प्राप्त की। जैसोर, कालीगंज अंचल में एक महत्त्वपूर्ण संचार केन्द्र मगुरा पर भी कब्जा हो गया।

चटगांव हवाई अड्डे तथा काक्स बाजार पर भारतीय नौसेना के विमानों की वमवारी से रेलवे को भारी क्षति पहुंची।

पाक सैनिक व रजाकारों का छिपने का प्रयत्न

अर्धसैनिक रजाकारों के दस्ते बंगला देश के ग्रामीण क्षेत्रों में

छिपने का यत्न कर रहे थे परन्तु मुक्तिवाहिनी उनका ढूंढ़-ढूंढ़कर सफाया कर रही थी। पाकिस्तानी सैनिक तथा रजाकार पहाड़ों और ज़ंगलों में भी छिपने का यत्न कर रहे थे।

विभिन्न स्थानों पर भारतीय सेना ने बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सैनिकों तथा अफसरों को युद्धबन्दी बनाना शुरू कर दिया था। भागते पाकिस्तानियों ने गोला-बारूद तथा हथियार छोड़े थे।

बंगला देश के लगभग सभी स्थानों से पाक सेना में भारी भगदड़ शुरू हो गई थी। भारतीय सेना ने ढाका से केवल बाईस मील की दूरी पर स्थित दाउदकंडी नामक स्थान पर कब्जा कर लिया था। ८ दिसम्बर को भारतीय फौजों ने बंगला देश में स्थित कोमिल्ला को आजाद करा लिया था। कोमिल्ला पाकिस्तानी सेना का मजबूत गढ़ समझा जाता था। भारतीय सेना के कोमिल्ला पहुंचने से पहले ही पाकिस्तानी सैनिक वहां से भाग गये थे। ७ दिसम्बर को पाकिस्तानी सैनिकों ने जैसोर को भी खाली कर दिया था। सिल्हट की भी यही कहानी थी। लड़ाई के छठे रोज में ब्राह्मणबारिया पर भी भारतीय सेना ने कब्जा कर लिया था।

छम्ब तथा डेरा बाबा नानक क्षेत्र

पाकिस्तानी सैनिकों ने छम्ब और डेरा बाबा नानक क्षेत्र पर हमला किया परन्तु उनके आक्रमण को विफल कर दिया गया। रावी-पार डेरा बाबा नानक पुल के पश्चिमी छोर पर स्थित पाकिस्तानी चौकी पर अब भारतीय झण्डा फहरा रहा था। स्यालकोट का रास्ता साफ था। खालड़ा क्षेत्र में पाकिस्तान की हवेलियां चौकी और खेमकरण में पांच गांव अब भारतीय सेना के अधिकार में थे। उड़ी क्षेत्र में भारतीय सेनाओं ने शत्रु की बहुत-सी खंदकें नष्ट कर दीं। इस दौरान २० पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और ७० घायल हुए थे।

गुलमर्ग के निकट भी अन्य दो पाकिस्तानी चौकियां हमारी सेनाओं के कब्जे में आ गईं। खेमकरण में भारतीय सेना ने मोवके, नागर,

धाकेवाली, फहत्तो और रोहेवाली गांवों को अधिकार में ले लिया था। छह पाक विमानों ने अवन्तीपुर पर हमला किया लेकिन कोई क्षति नहीं हुई।

भारतीय वायुसेना के सतर्क रहने के कारण पाकिस्तानी जहाजों की बमवारी सीमित रही लेकिन इस वीच अमृतसर और जम्मू पर बम गिराए गए। अमृतसर क्षेत्र में चार वम गिराए गए। जम्मू सीमा के निकट पाकिस्तानी वमवारी से छह से अधिक लोग घायल हुए।

राजस्थान क्षेत्र

भारतीय सेना ने राजस्थान क्षेत्र में शत्रु टुकड़ियों से हुई मुठभेड़ में उनकी पांच चौकियां हथिया लीं और तीन टैंक तवाह कर दिए। एक टैंक को भारी क्षति पहुंचायी। इस क्षेत्र में अब तक हमारी सेनाएं पाकिस्तान की नौ चौकियों पर कब्जा कर चुकी थीं। जैसलमेर में पाकिस्तानी सेनाएं पीछे हट रही थीं। नगर पार क्षेत्र में हथियाई गई चौकियां वड़, अलोनिया, एसीना, फूलपारो, कमीला और नयाछोड़ थीं। वीकानेर क्षेत्र में भी सलमसार और रूकनावाला स्थित पाक चौकियां हमारे कब्जे में आ गई थीं।

पाकिस्तानी सेना ने राजस्थान की नागरिक वस्तियों पर वमवारी करने के साथ-साथ नापाम वमों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था।

सिंध में साठ किलोमीटर अन्दर छोर के हवाई अड्डे पर भारतीय सेना का कब्जा हो चुका था। यह हवाई अड्डा छोड़ और नयाछोड़ के मध्य में है। राजस्थान क्षेत्र में आठ सौ वर्गमील का क्षेत्र भारतीय सेनाओं के कब्जे में हो गया था। 'गोल्डन ऐरो' नामक रेलगाड़ी चलने लगी थी। भारतीय सेना के इन्जीनियरों ने वाड़मेर से मिलाने के लिए छह मील लम्वी रेल पटरी तैयार कर दी थी।

यहां दिन में पाकिस्तानी विमानों ने कोई हमला नहीं किया। लड़ाई के सातवें दिन इस क्षेत्र में वारह विमानों को मार गिराया गया। हवाई हमले में भारतीय विमानों ने छह पाकिस्तानी टैंकों

को वर्बाद कर दिया तथा और भी नुकसान पहुंचाया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में

संयुक्त राष्ट्र की महासभा में ८ दिसम्बर को १०४ सदस्यों ने उस प्रस्ताव का समर्थन किया जिसमें भारत को और पाकिस्तान को अविलम्ब युद्धविराम करने और अपनी सेनाओं को अपने क्षेत्रों में वापस कर लेने के लिए कहा गया था।

सदस्यों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। विरोध करने वाले सदस्य थे—भूटान, बुल्गारिया, वायलो, रूस, क्यूवा, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, भारत, मंगोलिया, पोलैण्ड और यूक्रेन। दस सदस्यों ने भाग नहीं लिया। मतदान में भाग न लेने वाले सदस्य थे: ब्रिटेन, अफगानिस्तान, चिल्ली, डेनमार्क, फ्रांस, मैडागास्कर, नेपाल, ओमान, सेनेगल और सिंगापुर।

मारशियस ने घोषित किया कि वह मतदान में भाग नहीं लेगा।

बर्मा, इक्वेटोरियल गिन्नी, गिन्नी, लेसायो और मालद्वीप अनुपस्थित थे।

मिस्र सहित सभी अरब देशों ने (ओमान को छोड़कर) पाकिस्तान के पक्ष में वोट दिया।

अफ्रीकी देशों ने प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया लेकिन सेनेगल और मलावी ने वोट नहीं डाला।

पड़ोसी देशों में श्री लंका ने प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया। नेपाल और अफगानिस्तान तटस्थ रहे।

वह प्रस्ताव महासभा के विशेष अधिवेशन में अर्जेनटाइना और ३१ अन्य सदस्यों ने पेश किया था। पाकिस्तान के साथ रोमानिया और युगोस्लाविया ने प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया। लेकिन सोवियत गुट के राष्ट्रों, भारत और भूटान ने उसका विरोध किया।

महासभा के १३१ सदस्यों में से केवल १२५ सदस्य शामिल थे।

गाजी का डूबना

नौ दिसम्वर को रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम ने संसद को वताया कि अमेरिका निर्मित पाकिस्तानी पनडुब्बी 'गाजी' को भारतीय नौसेना के विध्वंसक जलपोतों ने तीन दिसम्वर की आधी रात को नष्ट कर दिया था। विशाखापत्तनम के एक नौसैनिक अड्डे से सुरक्षात्मक कार्यवाही के रूप में एक विध्वंसक जलपोत को खवर लेने के लिए आगे भेज दिया गया। समुद्र के अन्दर 'गाजी' की उपस्थिति की खवर मिलते ही अधिकारियों ने उसे समुद्र के भीतर ही दफन कर देने का आदेश दिया। उसकी फटने की आवाज को पानी के ऊपर नहीं सुना गया। वाद में निश्चित रूप से यह नहीं कहा ज़ा सका कि गाजी का क्या परिणाम हुआ। फिर भी खोजवीन जारी रही। आठ दिसम्वर को तैरती हुई तीन लाशें और काफी संख्या में माल-असवाव भी मिले। इन सवकी जांच करने पर पनडुब्बी गाजी के नष्ट होने का विश्वास हो गया। २४१० टन भारी गाजी पर ८९ आफीसर तथा नौ सैनिक रहते थे, जिनकी मौत समुद्र के भीतर लिखी थी।

कराची बन्दरगाह पर हवाई हमले

भारतीय नौसेना के पश्चिमी वेड़े ने अरव सागर में शत्रु की नौसेना शक्ति को नष्ट करने के लिए दो साहसिक हमले किए। एक हमला पाकिस्तान-ईरान सीमा पर मकरान की वन्दरगाह पर किया गया था।

युद्ध के सातवें दिन भारतीय नौसेना ने शत्रु की शक्ति को वहुत नुकसान पहुंचाया था। चार जलपोतों को या तो भारी नुकसान पहुंचा था या वह सागर के गर्भ में बैठ गए थे। भारतीय वायुसेना ने एक व्यापारिक जहाज को डुवोया था और दो जलपोतों को नुकसान पहुंचाया था।

कराची बन्दरगाह पर यह दूसरा हमला था। और भारतीय लड़ाकों

जलपोत कराची बन्दरगाह के आठ किलोमीटर निकट पहुंचकर आक्र-मण कर रहे थे। आक्रमण के वाद भारतीय नौसैनिक सुरक्षित लौट आए थे। व्यापारिक जलपोत 'मधुमति' को जवरन वम्बई वन्दरगाह की ओर ले जाया गया था। भारतीय जलपोतों ने दो पाकिस्तानी व्यापारिक जलपोतों को अपने अधिकार में कर लिया था और उनको एक भारतीय वन्दरगाह पर ले जाया गया था। उनमें एक जलपोत का नाम 'वाकिर' था।

स्यालकोट और इच्छोगिल को खतरा

इस क्षेत्र में पाकिस्तान ने काफी मार खाई। 'चिकन नैक' पर भारतीयों ने कब्जा करके अपनी सप्लाई लाइन को सुरक्षित किया। कारगिल क्षेत्र में नौ पाकिस्तानी चौकियों को अधिकार में लिया। टिथवाल सैक्टर में लिप्पावादी को आजाद कराया। साम्वा शकरगढ़ क्षेत्र से स्यालकोट की ओर वढ़ा जा सकता था। अधिक संख्या में सैनिक और टैंक लाकर दुश्मन ने छम्ब-जौरिया में अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश की और पाक विमान भी वड़ी संख्या में आए। उनके हमले का पूरी तरह से जवाव दिया गया। पहले पाकिस्तानी विमान कई उड़ानें भरते थे। दो विमान आए जिनमें से एक विमान को एक गोरखा जवान ने सव-मशीनगन से मार गिराया। पाक सैनिकों ने अखनूर तक पहुंचने की वहुत कोशिश की। पुंछ और उड़ी क्षेत्र में भी पाकिस्तानी सैनिक सफलता नहीं पा सके। पाकिस्तानियों ने पुंछ पर आक्रमण करने के लिए दो ब्रिगेड सैनिकों को झोंक दिया था परन्तु वे हमारी चौकी के ३०० गज के निकट ही आकर रुक गए थे और उन्हें वरवाद कर दिया था। साम्वा क्षेत्र में भारतीय सैनिकों ने मराला हैडक्वार्टर को खतरा पैदा कर दिया था। इसी स्थान से इच्छोगिल नगर का पानी नियंत्रित होता है। जम्मू और कश्मीर में लड़ाई शुरू होने से अव तक ६० पाक सैनिकों को युद्धवन्दी वना लिया गया था। भारत में निर्मित विजयन्त टैंकों ने अखनूर क्षेत्र में भारी नुकसान पहुंचाया।

भारतीय सैनिक भारत में बने इस मीडियम टैंक विजयन्त का पहली बार प्रयोग कर रहे थे। विजयन्त टैंकों की सहायता से हमारी टुकड़ियों ने चिकननैक्स को ३६ घण्टों में जीत लिया था।

पाक वायुशक्ति का चौथाई भाग समाप्त

भारत ने पाकिस्तान की वायुशक्ति को वहुत वड़ी मात्रा में क्षति पहुंचाई थी। पाक के तीन दिसम्बर के अचानक आक्रमण करने के वावजूद भी भारतीय विमानों को अधिक क्षति नहीं पहुंच पाई। कारगिल के निकट लद्दाख की राजधानी लेह की ओर जाती हुई सड़क के निकट पांच पहाड़ियों पर भारतीय सैनिकों ने कब्जा कर लिया था।

छम्ब क्षेत्र में मुनव्वर तवी के पूर्व की चौकी को पाकिस्तानियों से छीन लिया गया था। भारतीय विमानों ने ३ दिसम्बर की रात से चार दिसम्बर की शाम तक ५०० उड़ानें भरीं और खड़े हुए दुश्मन के विमानों को और तेल भण्डारों को नष्ट किया। सात दिन के इस युद्ध में पाकिस्तानी अव केवल अपना वचाव ही कर रहे थे। उनके विमानों ने दिन में हमला करना छोड़ दिया था, जवकि भारतीय विमान दिन में कार्यवाही कर रहे थे। भारतीय विमानों ने इस क्षेत्र में पैदल सैनिकों के श्रेष्ठ समर्थन के साथ-साथ ६५ टैंकों को वरवाद कर दिया था। कराची के तेल भण्डार और राडार स्टेशन को हवाई आक्रमण के परिणामस्वरूप नष्ट कर दिया गया था। छम्ब और लौंगेवाला लड़ाइयों में भारतीय विमानों ने शत्रु की वख्तरवन्द गाड़ियों को वहुत नुकसान पहुंचाया था। हमारी विमानभेदी तोपें पाकिस्तानी विमानों को मार गिरा रही थीं। भारतीय विमान पाकिस्तानी क्षेत्र पर प्रतिदिन २५० उड़ानें कर रहे थे जब कि पाक विमान केवल १० उड़ानें भर रहे थे।

डेरा वावा नानक पुल पर पाकिस्तानी हमले को पछाड़ दिया गया और जम्मू, माधोपुर से बढ़ती हुई भारतीय टुकड़ियां पाकिस्तानी क्षेत्र में दूर तक जा चुकी थीं। कारगिल क्षेत्र में [illegible]

नदी के निकट भारतीय सैनिक पहुंच चुके थे। पुंछ क्षेत्र में शत्रु डटा हुआ था और छम्ब में शत्रु कोई और कार्यवाही न कर सका था। स्यालकोट, जम्मू, माधोपुर क्षेत्र में भारतीय सेनाएं दुश्मन के क्षेत्र में ६ मील अन्दर तक डटी हुई थीं। खेमकरण क्षेत्र में एक हमले को पछाड़ दिया गया। आदमपुर हवाई अड्डे पर दुश्मनने तीन असफल हमले किए। भारतीय विमानों ने छम्ब, सुलेमन्की (फाजिल्का क्षेत्र), जैसोर (स्यालकोट क्षेत्र) पर हमले किए और दुश्मन को तितर-बितर होने पर मजबूर कर दिया। राजस्थान क्षेत्र में लौंगेवाला पर पाकिस्तानी सैनिकों ने ४५ टैंकों से हमला किया था जिसमें ४० टैंक बरबाद कर दिए गए थे। जोधपुर के विमानों ने जैसलमेर क्षेत्र में चीन निर्मित टैंकों को धूल में मिला दिया था। भारतीय विमानों ने हैदराबाद सिंध डिवीजन में मीरपुर खास के रेलवे जंकशन पर हमला किया था। नया-छोर पर हमारे सैनिकों ने हमला कर दुश्मन को गम्भीर क्षति पहुं-चाई थी।

युद्ध का आठवां रोज

युद्ध के आठवें दिन छम्ब पर भयंकर लड़ाई हुई। शत्रु की सेनाओं ने छम्ब पर एक जबरदस्त हमला किया। यह उसका पांचवां हमला था। भारतीय अग्रिम रक्षा पंक्तियों को पीछे हटना पड़ा। हमारा काफी नुकसान हुआ परन्तु शत्रु का नुकसान हमारे नुकसान से कहीं अधिक था। रात को नये हमले की आशंका थी। इसलिए एक ब्रिगेड और बढ़ाई जा रही थी ताकि शत्रु को कारगर ढंग से पछाड़ा जा सके।

शेष पश्चिमी क्षेत्र में कोई गतिविधि नहीं हुई। नगर पारकर के उन्नीस किलोमीटर उत्तर की ओर वीरावाह को जीत लिया गया। यह कार्यवाही प्रातः साढ़े दस बजे हुई। बाड़मेर क्षेत्र में तमाम चौकियां हमारे पास ही रहीं। जैसलमेर क्षेत्र में इस्लामगढ़ के उत्तर में भाई खानवाला खू पर अधिकार कर लिया गया। पश्चिमी क्षेत्र में पाकि-

स्तान ने पांच और टैंक गंवाये। इस क्षेत्र में नष्ट हुए पाकिस्तानी टैंकों की संख्या एक सौ सात हो गई। कारगिल क्षेत्र में कई पहाड़ियों को अधिकार में कर लिया गया और उड़ी में और १० दिसम्बर की रात के हमले को पछाड़ दिया गया था। पुंछ में भी हमले का मुकावला किया गया था।

अमृतसर क्षेत्र में रनियान पर शत्रु ने हमला किया। शत्रु को भारी क्षति उठानी पड़ी। एक पाकिस्तानी टैंक जलता हुआ देखा गया।

स्यालकोट क्षेत्र में शकरगढ़ की ओर जाती हुई सड़क पर स्थित नैनाकोट को जीत लिया गया।

श्रीनगर हवाई अड्डे पर कई हमले होने के वावजूद भी हवाई अड्डा उड़ानों के काम में आता रहा। असफल होकर शत्रु विमानों ने असैनिक स्थानों पर वमवारी शुरू कर दी थी। श्रीनगर से सत्रह मील दूर स्थित फलसल गांव में ५३ गड्ढे पाये गये जो वमवर्षा के कारण वन गए थे।

जम्मू के सीमा क्षेत्रों में वमवर्षा के कारण २४ व्यक्ति मारे गए और १० व्यक्ति घायल हुए। पाकिस्तानी विमानों ने तीन वार आग लगाने वाले वमों का प्रयोग किया। छम्ब का कस्वा पाकिस्तानी सेना के अधिकार में हो गया था। लोग अपने घरों को छोड़कर चले गये थे, उस वीरान कस्वे में गोली से मारे गये सूअरों और वैलों के शव कहीं-कहीं पड़े थे। शत्रु विमानों ने अमृतसर से १७ कि०मी० दूर पठानकोट लाइन पर स्थित जैन्तीपुरा रेलवे स्टेशन पर तीन वम गिराये। लूप लाइन और रेलवे क्वार्टरों को थोड़ा-सा नुकसान हुआ।

भारतीय सेनाएं स्यालकोट शहर से केवल ३५ कि० मी० दूरी पर थीं। डेरा वावा नानक क्षेत्र में अजनाला के पश्चिम में स्थित दो भारतीय चौकियां वुर्ज और वेरा पर दोपहर १$\frac{१}{२}$ बजे हमला हुआ। भारतीय सेनाओं ने डटकर मुकावला किया और दोनों चौकियों को अपने अधिकार में रखा।

चटगांव क्षेत्र के दक्षिण में स्थित प्रसिद्ध कस्वे नोग्राखाली पर मुक्तिवाहिनी का कब्जा हो गया। नोग्राखाली महात्मा गांधी की शान्ति यात्रा के कारण प्रसिद्ध है। भारतीय सेनाएं विजयपताका फहराती हुई जैसोर से खुलना की ओर वढ़ रही थीं। इस क्षेत्र में भारतीय टुकड़ियों ने ३० वाहन, ६ आर० सी० एल० तोपें और चार भारी मोर्टार कब्जे में किए।

वंगला देश की राजधानी से ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित आशुगंज के सामने मेघना नदी के पश्चिमी किनारे पर भारतीय टुकड़ियां हैलीकाप्टर से उत्तरीं। चलना की वन्दरगाह लक्षम का रेलवे जंक्शन और फूलपुर को आजाद करा लिया गया। भारतीय वायु सेना के राकेटों के आक्रमण के कारण ढाका रेडियो के ट्रांसमीटरों को क्षति पहुंची। ढाका रेडियो मौन हो गया था। लक्षम और हाजीगंज के आक्रमण में २३वीं पंजाव रेजीमैंट के एक लैफटीनैंट कर्नल और चार सौ अन्य सैनिकों को युद्धवन्दी वना लिया गया। सिल्हट, कौमिल्ला क्षेत्र में मेयना नदी पर पुल वनाकर सेनाएं पार हुईं। स्टीमरों और हैलीकाप्टरों द्वारा भी नदी को पार किया गया। ४०० से ५०० तक सैनिकों को ले जाता हुआ जहाज डुवो दिया गया। मैमनसिंह क्षेत्र के जमालपुर तोपखाने का घेरा डाल दिया गया था। दुश्मन के भागने के लिए अव कोई रास्ता न था। एक अन्य हवाई हमले में चलना, वारीसाल और नारायण गंज की वन्दरगाहों में ६ मीडियम जलपोतों, १० छोटे जलपोतों, ७ गन वोटों और ११ मोटर वोटों को या तो नष्ट किया गया या वुरी तरह नुकसान पहुंचाया गया। भारतीय सेनाएं रंगपुर क्षेत्र के पलसवाड़ी कस्वे को अधिकार में कर लेने के वाद ब्रह्मपुत्र की ओर वढ़ रही थीं। ३२वीं वलूच रेजीमैन्ट के लैफ्टी० कर्नल राजा सुलतान महमूद केशव को भारतीय सेना ने पूरे सैनिक आदर के साथ दफना दिया। यह कर्नल पीरगंज की लड़ाई में मारा गया था।

बाड़मेर सैक्टर में १३० मील लम्बे भारत-पाक सीमा क्षेत्र को भारतीय सेनाएं अधिकार में किए हुए थीं। इस क्षेत्र में हमारे जवानों ने जिन चौकियों को अधिकार में किया उनके नाम थे:दालान-का-तार, सोमरार, दोस्त जोता, तार अब्दुल रहीम, हुंग तथा भुड। नगर पारकर के पश्चिम की ओर शत्रु के महत्त्वपूर्ण राडार स्टेशन विगूर को कब्जे में कर लिया गया था। अब तक भारतीय सेनाएं सिंध में १३०० वर्ग मील क्षेत्र पर अधिकार जमाए हुए थीं। इसमें ४०० वर्ग मील कच्छ क्षेत्र का, ९०० वर्ग मील बाड़मेर सैक्टर का था।

विदेशियों की निकासी के लिए-प्रार्थना

ब्रिटेन, कनाडा, सोवियत रूस और संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भारत से प्रार्थना की थी कि उनके नागरिकों को निकालने के लिए सुरक्षा प्रदान की जाये। इन देशों की सरकारों ने पाकिस्तान में असुरक्षा को देख-कर अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए असैनिक हवाई जहाजों का प्रबन्ध कर दिया था। भारत ने इस्लामाबाद के लिए सुरक्षा गारंटी का समय बारह दिसम्बर प्रातः १० बजे से दोपहर १२ बजे तक का निश्चित किया था। ब्रिटेन के ५ हवाई जहाज, रूस के दो हवाई जहाज, संयुक्त राष्ट्र और कनाडा के एक-एक हवाई जहाज इस कार्य के लिए तैयार खड़े थे।

ढाका के लिए सुरक्षा गारंटी की अवधि चौबीस घंटे की थी जो १० दिसम्बर सायं के ६ बजे से अगले रोज ६ बजे तक निश्चित की गई थी। यह समय ढाका के असैनिक हवाई अड्डे की हवाई पट्टी को मरम्मत करने और विदेशी नागरिकों की निकासी के लिए दिया गया था। सुरक्षा अवधि का उपयोग करते हुए विदेशी सरकारों ने अपने नागरिकों को कराची, इस्लामाबाद और ढाका से निकाल लिया। इस सुरक्षा अवधि का उपयोग करने वाली सरकारों को अपनी उड़ानों की पूर्व सूचना भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय को देनी थी और बंगला देश की सीमा में प्रवेश पाने से पूर्व और बंगला देश की सीमा

के बाहर आने के पश्चात् कलकत्ता में उतरना जरूरी था।

भारत-बंगला देश का समझौता अनुबन्ध

भारत सरकार ने घोषित किया कि भारतीय सेनाओं के कार्य की व्याख्या करने के लिए व दोनों देशों के सम्बन्ध को सुदृढ़ करने के लिए एक अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। तीन कार्यों की व्याख्या इसप्रकार की गई थी : (1) बंगला देश में साधारण हालात की वापसी, (2) जनहित व आवश्यक सेवाओं का पुनर्गठन व परिवहन की सुविधाएं, (3) २५ मार्च के बाद पाकिस्तानी सैनिक अत्याचारों के परिणामस्वरूप भारत में आए एक करोड़ शरणार्थियों की वापसी का प्रबन्ध। इस समझौते के अनुसार दोनों देशों की सेनाएं आजाद कराए गए इलाके के प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करेंगी। इस समझौते में भारतीय सेनाओं को 'सहयोगी सेनाएं' कहा गया था। और भारतीय सेना का कमाण्डर ही बंगला देश में भारतीय और मुक्तिवाहिनी सेना का कमाण्डर होगा। इस समझौते पर भारत सरकार की ओर से प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने और बंगला देश की सरकार की ओर से बंगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति सैयद नजरुल इस्लाम और प्रधानमन्त्री ताजुद्दीन ने हस्ताक्षर किए। यह भी कहा गया था कि बंगला देश और भारत सरकार एक अन्य समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे।

नवां दिन

पूर्वी पाकिस्तान के मेजर जनरल फरमान अली ने पूर्व पाकिस्तान से पाकिस्तानी सेनाओं को निकालने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ से सहायता की अपील की थी। पाक सैन्य अधिकारी का यह सन्देश पूर्व पाकिस्तान से संयुक्त राष्ट्र सहायता कार्यों के फ्रांसीसी अध्यक्ष पाल-

मार्क हेनरी ने जो ढाका में थे, महासचिव ऊ थांट को भेजा था।

किन्तु उक्त संदेश के शीघ्र बाद पाकिस्तानी राजदूत आगाशाही ने संयुक्त राष्ट्रसंघ से प्रार्थना की कि उस सन्देशकी उपेक्षा की जाय। उन्होंने बताया कि राष्ट्रपति याह्या खां स्वयं एक संदेश महासचिव को भेजेंगे। किन्तु याह्या खां का कोई सन्देश वहां ११ दिसम्बर सुबह तक नहीं पहुंचा था।

जनरल फरमान अली ने संयुक्त राष्ट्र से सेनाओं तथा कुछ नागरिकों को पूर्वी पाकिस्तान से सुरक्षित निकालने में मदद देने को कहा था। सुरक्षा परिषद के सदस्यों ने तुरन्त बैठक बुलाने के बारे में विचार-विमर्श शुरू किया। किन्तु विचार-विमर्श तब रोक दिया गया, जब याह्या खां की तरफ से फरमान अली के सन्देश की उपेक्षा करने के सम्बन्ध में एक सन्देश मिला।

जनरल मानिक शा की पुनः अपील

११ दिसम्बर को भारतीय स्थल सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा ने बंगला देश स्थित पाक सेनाओं को पुनः चेतावनी दी कि वे अविलम्ब आत्मसमर्पण कर दें अन्यथा उन्हें अनावश्यक भारी जनहानि उठानी पड़ेगी। आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र से प्रसारित यह चेतावनी बंगला देश स्थित पाक सेनाओं तथा उपसैनिक प्रशासक मेजर जनरल फरमान अली के नाम जारी की गई।

पूर्वी सैक्टर में हिली, मैमनसिंह व जमालपुर छावनी मुक्त

११ दिसम्बर को मुक्तिवाहिनी और भारतीय जवानों ने शाम ५ बजे मैमनसिंह को मुक्त करा लिया था। इस कार्य को करने के लिए इन सेनाओं को ब्रह्मपुत्र नदी की एक शाखा को पार करना पड़ा था।

ठाकुर गांव के दक्षिण में कांता नगर में जबर्दस्त लड़ाई जारी थी। वहां पर भारतीय सेना नदी पुल के उत्तर में दबाव डाल रही

थी। इस क्षेत्र में शत्रु पक्ष को भारी जानी नुकसान उठाना पड़ा था।

इसके पश्चात् भारतीय सेनाएं खुलना से २४ किलोमीटर उत्तर में थीं और जैसोर, खुलना सड़क पर आगे बढ़ रही थीं। भारतीय सेनाओं द्वारा ११ दिसम्बर सुबह दस बजे पाकिस्तान के डिवीजन मुख्यालय हिली को मुक्त करा लिया गया था। यहां पर पाकिस्तानी सेनाएं बहुत दिनों से टिकी हुई थीं।

मैमनसिंह जिले में जमालपुर की महत्त्वपूर्ण छावनी पर भारतीय सेनाओं द्वारा ११ दिसम्बर को बड़े नाटकीय ढंग से कब्जा किया गया था। इस छावनी में सामरिक आश्चर्य के दर्शन का उपयोग करते हुए घबराई हुई पाक सेना पर आक्रमण किया गया था। पाक सेना ने बिना लड़ाई लड़े आत्मसमर्पण कर दिया था। इस कार्यवाही में ६०० पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया तथा मोर्टार, मशीनगनें तथा अनेक राइफलों को भारतीय सेना ने अपने कब्जे में कर लिया था।

मैमनसिंह यद्यपि जिले का सदर मुकाम था किन्तु छावनी का जमालपुर के बराबर सामरिक महत्त्व नहीं था। मैमनसिंह छावनी पर प्रातः ही जमालपुर के साथ कार्यवाही की गई थी।

११ दिसम्बर को इस क्षेत्र में दो हजार दो सौ पाकिस्तानी सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया गया। बंगला देश में हिली, मैमनसिंह व जमालपुर छावनी मुक्त कराई गईं। कुष्टिया का भी पतन हो गया। मुक्ति पाने वाले अन्य क्षेत्र थे—गायबांदा, फूलचड़ी, बहादुरिया, दुर्गादीकी, बिग्राम, चांदीपुर (रंगपुर क्षेत्र)। भारतीय सेनाओं ने भयंकर टक्कर के बाद हिली मुक्त कराया था।

तेईसवीं पंजाब, तीसवीं पंजाब, पच्चीसवीं फ्रन्टियर, इक्कीसवीं आजाद कश्मीर (पाकिस्तानी टुकड़ियों के नाम) बटालियनों से बारह अफसर, सोलह जे० सी० ओ० और दो हजार दो सौ अन्य सैनिकों को युद्धबन्दी बनाया गया। इन युद्धबन्दियों में इकत्तीसवीं ब्लूच के लेफ्टिनेंट कर्नल अशरफ अली सैयद, तेईसवीं पंजाब के लेफ्टिनेंट कर्नल [illegible] और उनके सैकिंड-इन-कमांड मेजर इकबाल भी शामिल थे।

खुलना पर हवाई हमले किए गए। छः जलपोतों और दस स्टीमरों को भारी नुकसान पहुंचाया गया। भारतीय सेना खुलना से १५ कि० मी० दूर थी। मैनामती छावनी में शत्रु अब भी डटा हुआ था। यह छावनी अब भी भारतीय सेनाओं से घिरी हुई थी। कुश्तिया, वोराहट, पंचवीबी, खेतिया, सिराजगंज से पीछे हटती हुई पाकिस्तानी टुकड़ियों पर भारतीय वायु सेना ने हमले किए।

मेघना नदी के पश्चिमी तट पर और भैरव बाजार के दक्षिण की ओर उस सड़क पर हैलीकाप्टरों द्वारा सैनिकों को उतारा गया जो ढाका की ओर जाती थी। बंगलादेश के पूर्वी भाग में ब्राह्मणबारिया में पीछे हटती हुई पाकिस्तानी सेनाओं ने भैरव बाजार के निकट मेघना नदी के पुल को उड़ा दिया। जैसोर की भारतीय टुकड़ियों ने मधुमती नदी को पार किया और ढाका की ओर बढ़ीं। विमानवाहक विक्रान्त से विमान उड़कर काक्स बाजार पर हमले कर रहे थे।

बंगला देश के प्रधानमन्त्री का जैसोर में आगमन

२१ दिसम्बर को बंगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति सैयद नजरुल इस्लाम और प्रधानमन्त्री ताजुद्दीन अहमद मुक्त हुए जैसोर में पहुंचे तो जैसोर की जनता ने तालियां बजाकर और फूलों के हार पहनाकर उनका स्वागत किया। जैसोर नगर में एक सार्वजनिकसभा का आयोजन किया गया था जिसमें भाषण देने के लिए बंगला देश के दोनों नेता वहां पहुंचे थे। इस्लाम का कहना था, "आठ महीनों की भयानक रात के बाद हम आज एक नई ताजा सुबह देख रहे हैं। परन्तु यह सब कुछ श्रीमती इन्दिरा गांधी के कुशल नेतृत्व के बिना सम्भव न था।" बंगला देश के दोनों नेताओं ने जैसोर की जनता के सामने बंगला देश की नीतियों की रूपरेखा बताई और राष्ट्र-निर्माण के लिए किए जा रहे प्रयत्नों की व्याख्या की। शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, धर्मनिरपेक्षता, गुटों से अलग रहना; समाजवाद ही बंगला देश की नीति का आधार होंगे।

छम्ब पर पाक का असफल आक्रमण

युद्ध के नवें दिन छम्ब में भयंकर लड़ाई हो रही थी। पाकिस्तानी सेना ने रात के समय डेरा बाबा नानक के महत्त्वपूर्ण पुल का पश्चिमी भाग उड़ा दिया। इसका उद्देश्य भारतीय सेनाओं को स्यालकोट की ओर बढ़ने से रोकना था। सात सौ बीस मीटर लम्बे पुल का पूर्वी किनारा भारतीय सेना के अधिकार में रहा।

चार दिन से लगातार शत्रु सैनिक रावी के उस पार से ऊटपटांग गोलाबारी कर रहे थे, जिससे भारतीय सीमा में कोई विशेष क्षति नहीं पहुंची थी। भारतीय सेनाओं ने वायु सेना की मदद से पुंछ व कश्मीर क्षेत्र में शत्रुओं की तीन चौकियां और जीत ली थीं।

स्यालकोट क्षेत्र में भारतीय सीमा सुरक्षा दल ने दुबगई चौकी पर हमला कर दिया। इस मुठभेड़ में २१ पाकिस्तानी सैनिक मारे गये। शत्रु के तीन टैंक नष्ट हो गये, एक पैटन टैंक हाथ आया।

नयनकोटक्षेत्र में शत्रु का इक्कीस टन गोला-बारूद भारतीय सेना के हाथ आया। इस क्षेत्र में उन्नीस चौकियां भारतीय सेना के हाथ में थीं। खेमकरण, फिरोजपुर व फाजिल्का क्षेत्र में भारी गोलाबारी चल रही थी।

छम्ब क्षेत्र अब पाकिस्तानी टैंकों का दूसरा कब्रिस्तान बन गया था। इस क्षेत्र में शत्रु के पचास टैंक नष्ट हुए जिनमें पैटन टैंक और कुछ चीनी टैंक भी शामिल थे। श्रीनगर के एक अस्पताल और एक मस्जिद पर पाक विमानों ने बमवर्षा की। इस कारण वहां के लोगों में पाकिस्तान के प्रति क्षोभ व्याप्त था। छम्ब में पांच दिन की घमासान लड़ाई के बाद भारतीय सेनाओं ने शत्रु को मुनव्वर तवी नदी के पश्चिमी तट की ओर धकेल दिया। तवी के पूर्व की ओर कोई पाकिस्तानी सैनिक नहीं थे।

कारगिल क्षेत्र में दस और चौकियां जीत लेने के बाद विजित चौकियों की संख्या सत्रह हो गई थी। पांच-छः चौकियां अभी लेनी शेष थीं। यह चौकियां तेरह से पन्द्रह हजार फुट की ऊंचाई पर हैं।

सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा की अपील

आल इण्डिया रेडियो के कलकत्ता स्टेशन से बंगला देश में लड़ रही पाकिस्तानी सेनाओं के नाम सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा की अपील पुनः प्रसारित की गई। मेजर जनरल फरमान अली के नाम सन्देश में मानिक शा ने कहा था, "मैंने बंगला देश में लड़ रही आपकी सेनाओं को शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर देने के लिए बार-बार कहा है। हमारी सेनाएं हर दिशा से आपकी सेनाओं को घेरे हुए हैं। जल से या वायु से भाग निकलने का अब कोई रास्ता नहीं है और न ही पश्चिमी पाकिस्तान से कोई सहायता पहुंच सकती है।"

जनरल मानिक शा ने चेतावनी दी, "यदि सेनाओं ने आत्मसमर्पण न किया तो पश्चिमी पाकिस्तान में नर-नारी और बच्चों की जिन्दगी को बहुत खतरा पहुंच जाएगा। सैनिक शक्ति के प्रयोग करने में मैं बहुत सावधान रहा हूं। परन्तु अब मैं अधिक देर होने की आज्ञा नहीं दूंगा।"

एक दूसरे सन्देश में मानिकशा ने कहा, "मैं यह भी जानता हूं कि तुम्हारे लिए दो जलपोत तैयार खड़े हैं। और तुमने वायुशक्ति को बढ़ाया है। मैं यह भी जानता हूं कि पांच व्यापारिक जलपोत ६ बजे और ७ बजे के बीच जाने वाले हैं। मैंने इन हालात से उचित ढंग से निपटने के लिए अपनी सेनाओं को आज्ञा दे दी है। यदि आपकी सेनाओं ने बच निकलने की कोशिश की तो सैनिकों सहित तुम्हारे व्यापारिक जहाजों को नष्ट कर दिया जाएगा।"

पाकिस्तानी टुकड़ियों से अपील करते हुए मानिक शा ने कहा— "तुम्हारे प्रयत्न सराहनीय परन्तु निष्फल हैं। तुम अनावश्यक ही मार सह रहे हो। तुम्हारे कमांडरों ने तुममें झूठी आशाएं जागृत की हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि अब तुम्हारे बच जाने या भाग निकलने का कोई रास्ता नहीं है। अपने परिवारों के लिए शीघ्र ही आत्मसमर्पण करो।"

युद्ध का दसवां दिन

१२ दिसम्बर को ढाका के पास वड़ी संख्या में छाता सैनिक उतारे गये। बंगला देश की राजधानी को जीतने के लिए निर्णायक युद्ध शुरू हो गया था। बंगला देश के अन्य मार्गों में मुक्तिवाहिनी के सहयोग से भारतीय सेनाएं शत्रु के गढ़ ढा रही थीं। मेघना नदी पार करके ढाका के पूर्व से वढ़ती हुई भारतीय सेनाओं की मुख्य टुकड़ी ने नृसिंधी कस्वे पर अधिकार कर लिया था। यह स्थान ढाका से केवल वाईस मील दूर है। भारतीय [दस्ते इस ओर वढ़ते गये। उत्तर में जमालपुर से भी भारतीय सेना की टुकड़ियां ढाका की ओर तेजी से जा रही थीं। पलाशवाड़ी के दक्षिण में घोड़ाघाट और गोविन्दगंज को आजाद करा लिया गया था। भारतीय सेनाओं ने दौलतपुर पर अधिकार करके खुलना पर हमला वोल दिया था।

पश्चिमी मोर्चे

कच्छ अंचल में छाड़वेट तथा उसके १५० वर्ग मील क्षेत्र पर भारतीय जवानों ने अधिकार कर लिया था। यह वही क्षेत्र है जो विश्व अदालत के फैसले पर भारत ने पाकिस्तान को दे दिया था।

जम्मू-कश्मीर के छम्ब अंचल में भारी मार देकर शत्रु को मुनव्वर तवी नदी के पश्चिमी किनारे से पीछे धकेल दिया था। तवी नदी के ८ किलोमीटर पश्चिम में जहां शत्रु ने वड़ी संख्या में टैंक जमा कर रखे थे, हमारी वायु सेना ने भारी वमवर्षा की। वड़ी संख्या में टैंकों को जलते देखा गया। भारतीय वायु सेना ने दस टन से अधिक विस्फोटक पदार्थ डाला। इससे शत्रु सेना का हौसला पस्त हो गया। इसीलिए शत्रु ने मुनव्वर तवी की ओर कोई नया हमला करने का यत्न नहीं किया था। छम्ब अंचल में दीवा के तीन मील उत्तर-पूर्व में लाल-याली चौकी पर भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना का हमला विफल कर दिया। ८ पाकिस्तानी सैनिक मारे गये। दुश्मन वड़ी संख्या में हथि-

न्यार तथा गोला-बारूद छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

जम्मू-कश्मीर के उत्तर में कारगिल अंचल में भारतीय सेनाओं ने दो और चौकियों पर अधिकार कर लिया। इस क्षेत्र में शत्रु को नई सेनाएं लाते देखा गया। टिथवाल अंचल में भी भारतीय जवानों ने शत्रु की कई चौकियों पर अधिकार कर लिया। जम्मू में सात चौकियों पर हमला किया। एक वरोती चौकी पर शत्रु के कई टैंक तोड़े गये। एक पाकिस्तानी अफसर तथा तीन सैनिक वन्दी बनाये गये।

पाक पंजाब में चौकियों पर अधिकार

गुरदासपुर अंचल में कोटदवा और फतेहपुर दो चौकियों पर भारतीय सैनिकों ने कब्जा किया। फतेहपुर की चौकी अजनाला के बारह मील दक्षिण-पश्चिम में है। खेमकरण से चार मील दक्षिण-पश्चिम में पूथखुना की पाकिस्तानी चौकी पर भारतीय सैनिकों ने हमला किया और यह चौकी खाली मिली।

बाड़मेर से सिंध में घुसने वाली भारतीय सेना नयाछोड़ के लिए भीषण युद्ध लड़ रही थी। शत्रु ने हैदराबाद से नयाछोड़ की अपनी टुकड़ी की सहायता के लिए नई कुमुक भेजी थी। पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर पर कई बार हवाई हमला किया। पठानकोट तथा जामनगर पर भी शत्रु ने कई बार हमला किया परन्तु कोई क्षति नहीं पहुंचा सका।

भारतीय नौसेना के हमले में पाकिस्तान के तीन युद्धपोत तथा अन्य अनेक जहाज नष्ट हुए। कराची के वन्दरगाह को भी क्षति पहुंचाई गई।

छम्ब क्षेत्र में देवा से ५ किलोमीटर दूर लालीली पर दुश्मन की कई बार हमला करने की कोशिश को असफल कर दिया गया। मुनव्वर तवी के आठ किलोमीटर पश्चिम में वूढ़ेजाल में भारतीय वायु सेना ने दुश्मन के टैंकों और पैट्रोल भण्डारों को भारी क्षति पहुंचाई। गुरदासपुर क्षेत्र के कोटदुआवा पर हमारे जवानों ने कब्जा कर लिया।

पूर्वी क्षेत्र

युद्ध के दसवें रोज कोमिल्ला क्षेत्र में कई अफसरों व जूनियर कमीशंड अफसरों के साथ एक हजार पाक सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया। भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा की अपील के कारण कई सौ पाकिस्तानी सैनिक खाइयों और बंकरों से निकलकर आत्म-समर्पण कर रहे थे। कोमिल्ला क्षेत्र में आत्मसमर्पण करने वाले कुछ अफसर थे : ३९वीं बिलोच के कमांडिंग अफसर लेफ्टि० कर्नल एस० एम० नईम, २३वीं पंजाब के मेजर रिशमाखान, १५वीं बिलोच के मेजर खालिद चौधरी और मेजर यमन हैदर।

ढाका राजधानी के आसपास हैलीकाप्टरों से भारतीय सैनिक उतारे गये। भैरव बाजार से टुकड़ी ढाका की ओर बढ़ रही थी। यह टुकड़ी ढाका से लगभग ३० किलोमीटर दूरी पर थी।

खुलना के निकट दौलतपुर छावनी में प्रवेश कर भारतीय सेना शत्रुओं की खोजबीन कर रही थी। सिल्हट, कोमिल्ला क्षेत्र में भारतीय टुकड़ी नृसिंधी को मुक्त कराने के बाद ढाका की ओर बढ़ रही थी।

गोविन्दगंज की लड़ाई में दुश्मन के दो चेफी टैंक बर्बाद किए गए और ६० शत्रु सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया गया। इसी क्षेत्र में डंगापाड़ा के दक्षिण में दो पाकिस्तानी टैंक कब्जे में किए गए। २ रीकायलैस तोपों को नष्ट कर दिया गया।

पाकिस्तानी सैनिक और रजाकार असैनिकों के वेष में बच निकलने की कोशिश कर रहे थे।

७ दिन तक हिल में भयंकर लड़ाई चली। इस लड़ाई में कुछ भारतीय काम में आये और कुछ हताहत हुए। सैनिक टुकड़ियां हिली को मुक्त कराकर बोगरा की ओर बढ़ रही थीं।

कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुथीबाड़ी और महान क्रान्तिकारी जितेन्द्रनाथ मुकर्जी का पैतृक घर अब मुक्त क्षेत्र में थे।

दस दिन के युद्ध में अब तक पाकिस्तान अपने ८० विमानों और

२१ जलपोतों से हाथ धो बैठा था। जलपोतों में पनडुब्बियां और तोप नौकाएं भी शामिल हैं।

इस दौरान भारत के ३६ विमान और ५४ टैंक नष्ट या क्षतिग्रस्त हुए। बंगला देश में नष्ट या क्षतिग्रस्त किए गए ३१ पाकिस्तानी टैंकों सहित भारत ने अब तक १४८ टैंकों को नष्ट या क्षतिग्रस्त किया था।

युद्ध का ग्यारहवां दिन

युद्ध के ग्यारहवें दिन बंगला देश की राजधानी ढाका भारतीय तोपों की मार में थी। भारतीय टुकड़ियां तीन ओर से ढाका की ओर बढ़ रही थीं। उत्तर-पश्चिम में तगेल से, उत्तर में जमालपुर मैमनसिंह से और उत्तर-पूर्व में नृसिधी से। भारत असैनिकों की मृत्यु और सम्पत्ति के नुकसान से बचना चाहता था, चाहे उद्देश्य पूरा होने में कुछ देर क्यों न हो जाए। इसलिए सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा ने पाकिस्तानी सेना के मेजर जनरल फरमान अली के नाम तीसरे सन्देश में निर्दोष सिपाहियों को मौत के घाट उतारे जाने की अवश्यम्भावी सम्भावना पर जोर दिया था। उन्होंनेकहा, "आत्मसमर्पण न किएजाने की दशा में मैं भारतीय सेना को जो ढाका के निकट पहुंच रही है, यह आदेश देने पर मजबूर हो जाऊंगा कि वह आपकी सेना की शक्ति को मिट्टी में मिला दे।"

जनरल मानिकशा ने कहा, "मैं पहले आपको २ सन्देश भेज चुका हूं परन्तु अब तक आपकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिला है। मैं फिर कहूंगा कि अब विरोध करना बेकार है और इससे आपके कई सैनिकों को मृत्यु प्राप्त होगी। मैं आत्मसमर्पण करने वाले सैनिकों के प्रति उचित व्यवहार और रक्षा की गारंटी देता हूं।

"...व्यर्थ का खून-खराबा रोकना ही सब कमाण्डरों का कर्तव्य होना चाहिए, और इस मानवीय उत्तरदायित्व को निभाने के लिए मैं

आपसे एकबार फिर आपके सहयोग की अपील करता हूं। यदि आपने इसपर भी अपना विरोध जारी रखा तो मैं यही कहूंगा कि आप तमाम असैनिकों तथा विदेशी नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दें। मैं आशा करता हूं कि आप मुझे मजबूर नहीं करेंगे कि मैं आपके तोपखाने की शक्ति को बरबाद कर दूं।"

मैमनसिंह और तगेल से बढ़ती हुई भारतीय टुकड़ियों के मार्ग में नदियों की बाधाएं नहीं थीं परन्तु भैरव बाजार, नृसिंधीसे आने वाली भारतीय सेना के मार्ग में छोटी-छोटी नदियां और दलदली स्थान थे। पीछे हटती हुई शत्रुओं की टुकड़ियों ने नदियों पर बने पुलों को उड़ा दिया था। परन्तु बंगला देश की जनता भारतीय टुकड़ियों और गोला-बारूद को नदियों से पार कराने में सहायता दे रही थी।

कोमिल्ला के निकट मैनामती छावनी में शत्रु टुकड़ियां अब भी घिरी हुई थीं। खुलना और बोगरा को अधिकार में लेने के लिए लड़ाई जारी थी और तगेल और लखीमपुर को आजाद करा लिया गया था। भारतीयटुकड़ियों ने हार्डिंग पुल पर पीछेहटती हुईदुश्मन की टुकड़ियों द्वारा छोड़ी गई तोपों और वाहनों कोअधिकार में कर लिया था। शत्रु की टुकड़ियों का मनोबल गिर चुका था। लक्षम और कोमिल्ला क्षेत्रों में १०६५ पाक सैनिकों के साथ १४ अफसरों और २५ जूनियर कमीशंड अफसरों ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

जैसोर से भागी हुई पाकिस्तानी टुकड़ियां खुलना में विरोध कर रही थीं। उनके बचाव के सब मार्गों को बन्द कर दिया गया था। हिली क्षेत्र में नेशनल अवामी पार्टी के नेता मौलाना भाशानी के नगर पंचबीबी को मुक्त कराने के बाद भारतीय सेनाओं ने बोगरा को घेर लिया था। बोगरा पाक सेनाओं का सदर मुकाम था। बंगला देश में भारतीय टुकड़ियों के सामने आत्मसमर्पण करने वाले पाकिस्तानी सैनिकों की संख्या ५,००० हो चुकी थी। जनरल मानिक शा की अपील का शत्रु सैनिकों पर प्रभाव पड़ रहा था।

पश्चिमी क्षेत्र

भारतीय सीमा में घुसकर कुछ क्षेत्र को हथियाने का पाक का उद्देश्य बुरी तरह विफल कर दिया गया था। छम्ब क्षेत्र की लड़ाई को छोड़ शेष सब लड़ाइयां शत्रु की भूमि पर हो रही थीं। छम्ब में मुनव्वर तवी के पश्चिमी तट पर पाक सेनाएं कब्जा जमाए हुए थीं। कारगिल, पुंछ, उड़ी, फाजिल्का और सुलेमन्की क्षेत्रों में शत्रु के हमले को पछाड़ दिया गया था और राजस्थान क्षेत्र में पाक की भूमि का एक हजार वर्ग मील का क्षेत्र भारतीय सेनाओं के कब्जे में था। कारगिल क्षेत्र में २ पाकिस्तानी चौकियों के पतन के बाद विजित चौकियों की संख्या २३ हो गई थी। छम्ब क्षेत्र में लड़ाई बन्द थी। पठानकोट साम्भा क्षेत्र में ७ पाकिस्तानी सैनिक टैंकों को नष्ट कर दिया गया था और एक पाक टैंक को चलती हुई अवस्था में पकड़ लिया गया था। जम्मू क्षेत्र में पाकिस्तानी विमानों ने असैनिक आबादी पर १२ बम गिराये। हिरी नगर क्षेत्र के नाडिड गांव में आग लगाने वाले बम गिराए गए। कुछ क्षेत्र में हजीरा और कोटली के बीच की सड़क को भारतीय सेनाओं ने अधिकार में कर लिया। इससे पाक सेना की सप्लाई लाइन कट गई। पश्चिमी क्षेत्र में ३ दिसम्बर के बाद तक युद्ध-बन्दी बनाए पाकिस्तानी सैनिकों की संख्या ३०० थी।

डेरा बाबा नानक में फतहपुर चौकी को मुक्त कराने में भारतीयों ने शत्रु सैनिकों द्वारा पीछे छोड़े गए ३० रेडियो, काफी तादाद में छोटे हथियार और गोला-बारूद बरामद किया।

बाड़मेर से ५७ कि० मी० की दूरी पर पाक भूमि के रेगिस्तान के अन्तिम बिन्दु पर नयाछोड़ नाम का कस्बा स्थित है। इसको विजय करने के बाद भारतीय टुकड़ियां हैदराबाद के हरे मैदानों में प्रविष्ट हो सकती थीं। भारतीय सेनाओं ने पर्वतअली नामक रेतीली पहाड़ी को अपने कब्जे में कर लिया था। ऊंट सेना की भारतीय टुकड़ी ने रैलनोर से सरविदो तक की चौकियों को ले लिया था। [illegible] सैक्टर में

गंगा, जैसलमेर, रिसाला पाक भूमि में आठ मील अन्दर तक चला गया था। भारतीय विमान स्थल सेना को बढ़ने में इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे थे।

खाड़ी बंगाल की तरफ अमेरिका के सातवें बेड़े का कूच

सैगान का समाचार था कि अणु-शक्ति चालित इण्टरप्राइज नामक विमानवाहक जलपोत खाड़ी बंगाल की ओर बढ़ रहा है। यद्यपि इस विमानवाहक का अन्तिम लक्ष्य नहीं बताया गया था फिर भी हिन्द महासागर में इसके आगमन पर कई अटकलें लगाई जा रही थीं। इसे सिंगापुर के मल्लका जलडमरू मध्यतक आने का आदेश दिया गया था। इस बेड़े में विध्वंसक जलपोत, जल और स्थल पर चलने वाले जहाज भी थे। अमेरिकियों का कहना था कि बंगला देश से अमेरिका के नागरिकों को निकालने के लिए यह विमानवाहक भेजा गया था।

'इण्टरप्राइज' अमेरिका का सबसे बड़ा विमानवाहक जलपोत है और यह अणु-शक्ति से चालित है। इस पर से सौ विमान उड़ान भर सकते हैं। यह स्मरण रहे कि ढाका से अमेरिका के नागरिकों को निकाला जा चुका था और ९९००० टन के इस जलपोत का आगमन महत्त्वपूर्ण था। लगता था कि अमेरिका पाकिस्तान का समर्थन करने के लिए भारत पर राजनैतिक असर डालना चाहता था।

अमेरिका सरकार के प्रवक्ता के अनुसार अमेरिका भारत-पाक युद्ध में सैनिक दृष्टि से उलझना नहीं चाहता था। अमेरिका को आशा थी कि विश्व की अन्य शक्तियां भी इस झगड़े से दूर रहेंगी। अमेरिकन सरकार विमानवाहक 'इण्टरप्राइज' की खाड़ी बंगाल की ओर कूच के विषय में मौन थी। ढाका से अमेरिकी नागरिकों को निकाल लाने का बहाना केवल सन्देह पैदा कर रहा था।

अणु-शक्ति चालित इण्टरप्राइज विश्व का सबसे बड़ा विमानवाहक

जलपोत है। यह भारतीय विमानवाहक 'विक्रान्त' से चार गुना बड़ा है और इसका क्षेत्रफल साढ़े चार एकड़ है। यह विमानवाहक जलपोत आठ 'न्यूक्लर रीएक्टरों' द्वारा चालित है। इसको पांच वर्ष तक ईंधन की आवश्यकता नहीं पड़ती और यह विश्व के चारों ओर वीस चक्कर लगा सकता है। इसमें चार सौ अफसरों और ४२६० नौसैनिकों के ऐशो-आराम से रहने की व्यवस्था है। इसकी चाल की गति 'तीस नॉट' है। यह तीन हजार मील के फासले को सौ घण्टे से कम में तय कर सकता है। १९६१ में निर्मित इण्टरप्राइज को अमेरिका के प्रशान्त महासागर के वेड़े को १९६५ में सौंपा गया था। अब तक यह वियतनाम में था। इस वेड़े में तोपों से लदे विध्वंसक जलपोत भी थे। इस वेड़े में 'त्रिपोली' नाम का हैलीकाप्टर वाहक जलपोत भी है। 'त्रिपोली' से चौवीस हैलीकाप्टर उड़ान ले सकते हैं। 'इण्टरप्राइज' ने १९६२ में क्यूबा के घेरे में भी काम किया था।

युद्ध का बारहवां दिन

१४ दिसम्बर को रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने संसद को वताया कि पाकिस्तान अपने हमले के लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहा है। उसकी वहुत वड़ी मात्रा में सैनिक क्षति हुई है। अव तक पाकिस्तानी नियमित सेना और अर्द्धसैन्य दलों के ८१६८ अफसर व सैनिक बन्दी वनाये जा चुके थे। १७५ टैंक और ८१ विमान नष्ट किये जा चुके थे। इस युद्ध में भारतीय सेना के १९७८ सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए, ५०२५ घायल हुए और १६६२ सैनिक लापता हैं। भारतीय जलपोत 'खुकरी' के अठारह अफसर और १७३ नौसैनिक लापता हैं। इस जलपोत के छः अफसर और ९१ नौसैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। वायु युद्ध में ३३ पायलट अफसर व ३ नेवीगेटर लापता हैं। ९ अफसर और ३ नेवीगेटर युद्ध-क्षेत्र में काम आये।

पाक के ४०६६ अर्द्धसैन्य दलों के सैनिकों को युद्धवन्दी वनाने के अतिरिक्त ४१०२ पाक सैनिक और अफसरों को वन्दी बनाया गया।

पाकिस्तान ने इस युद्ध में अब तक ८३ विमान खोये जबकि भारत के ४१ हवाई जहाज काम में आये। भारत के ६१ टैंकों के बदले पाकिस्तान ने १७५ टैंक गंवाये। भारत का एक विध्वंसक जलपोत काम आया और पाकिस्तान के दो विध्वंसक, दो सुरंगें साफ करने वाले जलपोत, दो पनडुब्बियां और उन्नीस गनबोटें नष्ट हुईं।

भारतीय गोलाबारी से ढाका की बाहरी रक्षापंक्ति भंग

बंगला देश की राजधानी ढाका के लिए लड़ाई शुरू हो गई थी। पहले हमले में ही भारतीय जवानों ने नगर के बाहरी क्षेत्र की रक्षा-पंक्ति तोड़ दी थी तथा एक ब्रिगेडियर, दो लेफ्टिनेंट कर्नल, अनेक मेजर और अन्य सैनिक अधिकारियों को बन्दी बना लिया था। बड़ी संख्या में पाक सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया।

पूर्वी बंगाल के गवर्नर डा० मलिक सहित अनेक उच्च पाकिस्तानी असैनिक अधिकारियों ने त्यागपत्र देकर रेडक्रास से शरण मांगी। इस प्रकार पूरे प्रान्त में पाकिस्तानी असैनिक शासन का अन्त हो गया था। अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास ने भारत से यह अनुरोध किया था कि त्यागपत्र देने वाले ढाका के पाकिस्तानी उच्च अधिकारियों को भारतीय तथा बंगला देश की सरकार सुरक्षा दे। भारत ने रेडक्रास का यह आग्रह स्वीकार कर लिया था। इन अधिकारियों को ढाका के तटस्थ क्षेत्र—इण्टरकंटीनेंटल होटल व होली फैमिली अस्पताल में रखा गया।

स्थल सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा की आत्मसमर्पण के लिए अन्तिम अपील का जवाब न आने पर सवेरे ही भारतीय जवानों ने तोपों से ढाका की छावनी पर गोले बरसाने शुरू कर दिए थे। विमानों ने भारी बमवर्षा की। भारतीय सेनाएं यह नहीं चाहती थीं कि शत्रु की सेनाओं के साथ वहां के नागरिकों की हत्या हो। इसलिए नगर के निवासियों को युद्ध-क्षेत्र से बाहर निकल आने का मौका दिया गया। इस बात पर खेद प्रकट किया गया कि पाकिस्तानी सैनिकों ने ढाका विश्वविद्यालय को अपना एक गढ़ बना लिया था।

ढाका के पूर्व में भैरव वाजार की ओर आने वाली भारतीय टुकड़ी नृसिंधी से काफी आगे बढ़ चुकी थी। सवेरे ढाका की छावनी से केवल छह मील दूर रह गई थी। उत्तर से आने वाली दूसरी भारतीय टुकड़ी ने जयदेवपुर पर १३ दिसम्वर को कब्जा कर लिया था। उसके वाद तंगी नामक कस्वे को अपने नियन्त्रण में लेने के वाद वह ढाका के वाहरी क्षेत्र में पहुंच चुकी थी। तीसरी भारतीय सैनिक टुकड़ी ढाका की ओर उत्तर-पश्चिम में तंगेल से आ रही थी। लगता यह था कि ये तीनों टुकड़ियां ढाका के वाहरी अंचल में मिलकर ढाका पर अन्तिम जोरदार हमला करेंगी।

ढाका के वाहरी क्षेत्र में ब्रिगेडियर खैदर खां युद्धवन्दी वनाया गया था। यह अफसर पाकिस्तान के अन्य वन्दी बनाये गये सव अफसरों से वड़ा था। खैदर की ब्रिगेड ढाका नगर की सेना का एक भाग थी। शत्रु की इस ब्रिगेड ने पहले तो जमकर लड़ाई की परन्तु भारतीय जवानों की मार के आगे उन्हें झुकना पड़ा। अफसरों के बन्दी बनाये जाते ही पूरी ब्रिगेड ने आत्मसमर्पण कर दिया।

बोगरा पर अधिकार

बंगला देश में वोगरा नामक प्रमुख नगर पर कब्जा कर लिया गया था। यह नगर पाकिस्तानी सेना के डिवीजन का मुख्य कार्यालय था। शत्रु सेना का सेनापति मेजर जनरल नजीर हुसैन तो भाग गया, परन्तु अनेक पाकिस्तानी सैनिकों को वन्दी वनाया गया था। इस नगर को जीतने के लिए टैंक युद्ध हुआ जिसमें पाकिस्तान के दो टैंक नष्ट किए गए। भारतीय सेना का भी एक टैंक काम आया।

दक्षिणी भाग में भारतीय सेनाएं फेनी की ओर से आगे वढ़कर चटगांव वन्दरगाह से केवल ८ मील उत्तर की ओर कोमीरहाट तक पहुंच गई थीं। खुलना की छावनी दौलतगंज को आजाद करोने के लिए लड़ाई जारी थी। भयंकर युद्ध में शत्रु के दो टैंक नष्ट किए जा चुके थे। कोमिल्ला की मैनामाटी छावनी, दिनाजपुर, रंगपुर तथा कुछ अन्य कस्वों

में पाकिस्तानी सैनिक अब भी लड़ रहे थे।

भारतीय सेना ने मुक्तिवाहिनी से मिल कालिया कैर को मुक्त कराके जयदेवपुर की ओर प्रस्थान किया जो ढाका से अठारह किलोमीटर दूर थी। भारतीय सेना की दूसरी प्रमुख सफलता चटगांव नौसेना अड्डे को जाने वाली सड़क रेलमार्ग पर स्थित कुमारी की मुक्ति थी। भारतीय सेना चटगांव से केवल १० किलोमीटर दूर रह गई अर्थात् चटगांव अब भारतीय तोपों की मार के क्षेत्र में आ गया था। इसी क्षेत्र में खेतलाल, जयपुर हाट और खानसामां को भी आजाद कराया गया। भारतीय वायुसेना ने खुलना, दौलतपुर, गोकुल, जयदेवपुर और मैनामाटी पर आक्रमण करके शत्रु के बंकरों व वाहनों को नष्ट किया। भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी ने मेघालय की ओर से बढ़कर सिल्हट में पैट्रोलियम एवं गैस शोधक संयंत्र पर नियंत्रण कर लिया। इस संयंत्र में बारह हजार गैलन पैट्रोल था।

पश्चिमी मोर्चा

स्यालकोट क्षेत्र के एक सौ गांव भारतीय सेना के अधिकार में आ गये। शकरगढ़ व नयाछोड़ के लिए भीषण युद्ध जारी था। भारतीय सेना ने जम्मू के दक्षिण-पूर्व में पाकिस्तान के स्यालकोट अंचल के शकरगढ़ क्षेत्र में ३५० वर्गमील इलाके पर अधिकार कर लिया था। इस क्षेत्र के १०० गांव हमारे कब्जे में आ गये थे।

पठानकोट से जम्मू तक जाने वाली सड़क के बीच साम्बा नामक स्थान है। इसी स्थान पर हमारी सीमा से १० मील दक्षिण-पूर्व में शकरगढ़ है। शकरगढ़ का उक्त क्षेत्र लेकर भारतीय जवानों ने कश्मीर को भारत के अन्य भागों से जोड़ने वाले राजमार्ग को अब पूरी तरह सुरक्षित कर लिया था। शकरगढ़ क्षेत्र की लड़ाई में पाकिस्तान के ४५ पैटन टैंक नष्ट किए गए। इसी इलाके के पास स्यालकोट अंचल के पसरूर, चायविड़ा क्षेत्र में १९६५ में भी भयंकर टैंक युद्ध हुआ था और पाकिस्तान के बड़ी संख्या में टैंक नष्ट किए गये थे।

फाजिल्का क्षेत्र, कालीशाह तथा गाजी नामक दो चौकियों पर अधिकार किया गया। कारगिल क्षेत्र में तीन और चौकियों पर अधिकार होने के साथ इस क्षेत्र में शत्रु की २६ चौकियों पर कब्जा हो चुका था।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ अंचल में भी पाकिस्तान की भीरूशियां चौकी पर अधिकार करके शत्रु के हजीरा कोटली मार्ग को काट दिया गया था। राजौरी अंचल में शत्रु की धारूशियां चौकी पर अधिकार किया गया था। छम्ब क्षेत्र में शान्ति थी।

नयाछोड़ में युद्ध

१४ दिसम्बर के घमासान युद्ध में राजस्थान क्षेत्र में भारतीय सेना ने नयाछोड़ की कई पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा कर लिया। इससे शत्रु को उसके कई सुदृढ़ गढ़ों से पीछे धकेलने में भारतीय सेना को भारी सफलता मिली थी और शत्रुओं को जान-माल की भारी क्षति पहुंची थी। इस क्षेत्र में शत्रु सेना के २१ सिपाहियों की लाशें गिनी गईं। शत्रु सेना अपने बहुत-से घायल सिपाहियों को उठा ले गई। हमारी सेना ने शत्रु के ३५ सैनिकों को बन्दी बनाया।

नयाछोड़ क्षेत्र में दुश्मन के फौजी स्थानों पर भारतीय वायु सेना के विमानों ने १४ दिसम्बर को कई बार हमले किए जिससे शत्रु के चार टैंक नष्ट हो गये और दो टैंक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुए। पाकिस्तान में बहुत अन्दर मीरपुर खास में शत्रु की चौकियों को गोलाबारूद पहुंचाने वाली एक मालगाड़ी पर भारतीय विमानों ने हमला किया और उसे नष्ट कर दिया। जैसलमेर क्षेत्र में भारतीय विमानों ने पाकिस्तान के महत्त्वपूर्ण रेलवे स्टेशन खैरपुर में पैट्रो-केमीकल संयंत्र पर हमला कर उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। भारतीय विमानों ने गोला-बारूद से भरी दो और मालगाड़ियों पर हमला करके उन्हें नष्ट कर दिया। मीरपुर एवं रहीमयार खां रेलमार्ग भी क्षतिग्रस्त हुआ। यह रेलमार्ग पाकिस्तान के दक्षिण में कराची [illegible] के ऊपर

में रावलपिण्डी और लाहौर को जोड़ता है।

जैसलमेर क्षेत्र में पीछे हटती हुई पाक सेनाएं वहुत वड़ी मात्रा में हथियार और गोला-वारूद छोड़कर भाग खड़ी हुईं। इनमें वहुत-से उपकरण तथा हथियार सही हालत में गव्बर क्षेत्र में भी मिले थे। इनमें ३४० मि० मी० विमानभेदी तोपें, दो मैदानी तोपें और एक जीपथी।

रूस द्वारा तीसरी बार वीटो का प्रयोग

भारत-पाक युद्धविराम कराने के उद्देश्य से अमेरिका ने सुरक्षा परिषद में जो नया प्रस्ताव रखा था, उसे १३ दिसम्वर की रात की बैठक में सोवियत संघ ने फिर वीटो कर दिया। भारत-पाक संघर्ष के मामले पर रूस ने सुरक्षा परिषद में तीसरी वार वीटो का प्रयोग किया। इसके साथही परिषदके अध्यक्ष ने वर्तमान वहस में बंगला देश के प्रतिनिधि को भाग लेने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। अमेरिकी प्रस्ताव पर रूसी वीटो के वाद इटली और जापान ने युद्ध वन्द करने के लिए नया प्रस्ताव पेश किया। तदुपरान्त परिषद की बैठक स्थगित हो गई।

अमेरिकी प्रस्ताव पर रूस के राजदूत श्री जैकव मलिक ने कहा कि यह प्रस्ताव विल्कुल स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने अमेरिका की गलत और यथार्थहीन नीति की निन्दा की। युद्धविराम की अपील के साथ ही बंगला देश की समस्या का राजनैतिक समाधान भी होना चाहिए। बंगला देश के प्रतिनिधि को वहस में भाग लेने की इजाजत दी जानी चाहिए। रूसी राजदूत ने चीन की भी जोरदार भर्त्सना की और कहा कि उसकी नीति दोमुंही वदमाशी की है। इटली और जापान द्वारा रखा गया नौसूत्री प्रस्ताव पाकिस्तानी प्रतिनिधि आगाशाही ने अमान्य करार कर दिया।

सुरक्षा परिषद में भारत के विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह ने समस्या हल करने के लिए त्रिसूत्री फार्मूला रखा जिसमें कहा गया था कि

बंगला देश के लोगों को वहस में भाग लेने की अनुमति मिलनी चाहिए। युद्धविराम वार्ता में बंगला देश के लोगों को शामिल किया जाना चाहिए। तीसरे, उन्हीं लोगों की इच्छानुसार स्थिति का राजनीतिक समाधान होना चाहिये। अगर यह तीनों बातें मान ली जायें तो युद्धविराम हो सकता है।

जनरल नियाजी द्वारा युद्धविराम की प्रार्थना

युद्ध का तेरहवां रोज

ढाका में पाकिस्तानी सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल ए०के० नियाजी ने भारत को एक सन्देश भेजकर युद्धविराम की प्रार्थना की। यह संदेश १५ दिसम्बर को तीसरे पहर दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास की मार्फत भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा को मिला। सन्देश पर भूतपूर्व असैनिक गवर्नर के सैनिक सलाहकार मेजर जनरल राव फरमान अली के भी हस्ताक्षर थे। जवाव में भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शा ने अमेरिकी दूतावास की मार्फत जनरल नियाजी को सन्देश भेजा—वे बंगला देश में सभी पाक सेनाओं को तुरन्त युद्ध बन्द करने व भारतीय सेनाओं के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए आदेश दें। जनरल मानिक शा ने चेतावनी दी—यदि कल सवेरे (१६ दिसम्बर) नौ बजे तक युद्ध बन्द करके पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण नहीं किया तो हमारे जवान पूरी ताकत से अन्तिम अभियान शुरू कर देंगे। जनरल मानिक शा ने शत्रु सेनापति को १५ दिसम्बर रात्रि का समय उत्तर देने के लिए दिया। १५ दिसम्बर शाम के ५ बजे से हवाई हमला न करने का निश्चय किया गया।

भारतीय सेनाध्यक्ष ने लेफ्टिनेंट जनरल नियाजी को यह आश्वासन दिया कि जो पाकिस्तानी सैनिक और अफसर आत्मसमर्पण करेंगे उनके साथ जेनेवा समझौते के अनुसार अच्छा व्यवहार किया जायेगा।

ढाका में इण्टरकांटीनैंटल होटल को तटस्थ क्षेत्र घोषित किये जाने के बावजूद भी पाकिस्तानी अधिकारियों ने अपने तोपची इस होटल की छत पर विठाये। हमारे हवावाजों ने देखा कि ढाका के उत्तरी भाग में पाकिस्तानी सैनिकों ने अपने मोर्चों के ऊपर नागरिकों को बांध दिया है जिससे भारतीय विमान उन मोर्चों के ऊपर हमला न करें।

चटगांव जिले के पहाड़ी क्षेत्र पर मुक्तिवाहिनी कब्जा कर चुकी थी ताकि पाकिस्तानी सैनिक वर्मा की ओर न भाग पायें। खुलना की छावनी दौलत नगर के लिए लड़ाई चल रही थी।

खुलना में भारतीय सेनाओं ने औद्योगिक नगर सिरामानी को आजाद करा लिया। सिल्हट में पाकिस्तानी वलूच रेजीमेंट की एक कम्पनी ने आत्मसमर्पण किया। चटगांव में भारतीय सेना खोज-खोजकर शत्रुओं का सफाया कर रही थी और चटगांव के निकट पहुंच गई थी।

शकरगढ़, छम्ब तथा नयाछोड़

शकरगढ़ को बचाने में शत्रु ने अपनी सारी शक्ति झोंक दी थी। भारतीय सेना को जम्मू व कश्मीर की सीमा के उस पार और सफलता मिली। पठानकोट के उस पार शकरगढ़ को जीतने के लिए भारतीय सेना को काफी संघर्ष करना पड़ा। वायुसेना ने सिंध और पंजाब में शत्रु की संचार व्यवस्था को भंग करने के लिए पाक सैनिक अड्डों पर हमले किये। इसमें स्थल सेना ने भी योग दिया।

कश्मीर में हाजी कोटली मार्ग पर पुंछ नदी का मदारपुर पुल नष्ट कर दिया गया और मार्ग के आसपास कुछ पाक चौकियों पर अधिकार कर लिया गया। लगभग दो सौ घुसपैठियों का सफाया कर दिया गया। कारगिल क्षेत्र में १५५ वर्ग किलो मीटर का क्षेत्र भारतीय सेना के अधीन था। शत्रु की ३१ चौकियों पर हमारा कब्जा था। इस क्षेत्र में १५०० शत्रु सैनिक मारे गए। तीन हजार सैनिक घायल हुए तथा

१५० सैनिक वन्दी वनाये गये। हमारे ५०० सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा १००० घायल हुए।

भारतीय सेनाएं शकरगढ़ के लिए संघर्ष कर रही थीं। भारतीय सैनिकों ने बीए नदी पार कर ली थी। उन्हें कड़ा मुकावला करना पड़ रहा था। शत्रु ने अपनी पूरी शक्ति यहां झोंक दी थी। हमारी सेना ने शत्रु की ६०० वर्ग किलोमीटर भूमि पर कब्जा कर रखा था।

छम्ब क्षेत्र में जौरियां के ६ मील दक्षिण में शत्रु के एक दस्ते को हमारे जवानों ने घेर लिया और एक टैंक तथा चार चीन के वने राकेट पकड़े।

आरम्भ में शकरगढ़ की भयंकर लड़ाई में शत्रु के ६ टैंक नष्ट किए गए और एक पकड़ लिया गया। फाजिल्का क्षेत्र में शत्रु की जिस गाजी चौकी पर हमारे जवानों ने एक दिन पहले कब्जा किया था, उसे खाली करना पड़ा। फीरोजपुर अंचल में शत्रु की एक कम्पनी को घेर लिया गया और लड़ाई में ३० पाकिस्तानी मरे, १४ घायल हुए और दो बन्दी वनाये गये। १५ दिसम्बर को शत्रु के तीन विमान नष्ट किए गये जबकि हमारा एक विमान नष्ट हुआ।

राजस्थान क्षेत्र में १५ दिसम्बर को पाकिस्तानी विमानों (मिग १९ व सैबर जेट) को हवावाजों ने मार गिराया। नयाछोड़ के पश्चिम में हुई इस लड़ाई में हमारे विमान थल सेना की मदद करने गये थे। हमारे सैनिक नयाछोड़ के सदर मुकाम से सिर्फ २ मील थे। हमारे विमानों ने रेलगाड़ियों से कुमुक पहुंचाने की हर कोशिश नाकाम कर दी।

कच्छ क्षेत्र में हमारी सेनाओं ने चाचाराव की पाकिस्तानी चौकी पर अधिकार कर लिया था जो वाड़मेर के सामने पड़ने वाले पाकिस्तानी क्षेत्र में है। राजस्थान और गुजरात दोनों मोर्चों से पाकिस्तान में प्रवेश करने वाली भारतीय सेनाएं इसी स्थान पर पहुंचकर एक-दूसरे से मिली थीं। कच्छ सीमा पर विगोर क्षेत्र में एक और पाकिस्तानी चौकी वलियार पर अधिकार कर लिया गया था।

गंगानगर से २० किलोमीटर उत्तर में भारतीय सेनाओं ने पाक क्षेत्र में स्थित हिमवाली नामक चौकी पर कब्जा कर लिया था। वहां १० पाक फौजी मारे गये थे और २ वन्दी वनाये गए थे। जैसलमेर अंचल में दुश्मनों का सफाया करते समय २१ पाक फौजी हताहत हुए और २५ वन्दी वनाये गये।

युद्ध का चौदहवां रोज : बंगला देश आजाद

ढाका में पाकिस्तानी जनरल नियाजी द्वारा विना शर्त आत्म-समर्पण करने के साथ सम्पूर्ण बंगला देश आजाद हो गया।

१६ दिसम्बर साढ़े आठ बजे पाकिस्तानी सेना के प्रधान सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल नियाजी ने जनरल मानिक शा को रेडियो सन्देश भेज-कर विना शर्त आत्मसमर्पण की वात मानी। तीसरे पहर हमारे कोर कमाण्डार मेजर जनरल जैकब ढाका पहुंचे। प्रारम्भिक वातचीत पूरी होने पर पूर्वी कमान के सेनापति तथा मुक्तिवाहिनी तथा बंगला देश में लड़ रही भारतीय सेनाके संयुक्त सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल अरोड़ा हैलीकाप्टर से ढाका गए और शाम साढ़े चार बजे पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण के कागजातों पर हस्ताक्षर हो गए। विना शर्त इस आत्मसमर्पण के अनुसार बंगला देश के सभी स्थानों पर पाकिस्तानी सेनाएं, अर्द्धसैनिक दस्ते तथा असैनिक सशस्त्र दस्ते नजदीक के भार-तीय सैनिकों या मुक्तिवाहिनी के समक्ष हथियार डालकर आत्मसम-र्पण करेंगे। बंगला देश में ढाका सहित कई स्थानों से पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा हथियार डालने के समाचार आ चुके थे।

आत्मसमर्पण के कागजात पर हस्ताक्षर

ढाका के रेसकोर्स मैदान में ४ वजकर ३१ मिनट पर पाकि-स्तानी सेनाओं के सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल ए० ए० के० नियाजी ने आत्मसमर्पण के कागजातों पर हस्ताक्षर कर दिये। इसी रेसकोर्स मैदान में शेख मुजीवुर्रहमान ने मार्च, १९७१ में अवज्ञा आन्दोलन शुरू

किया था। नियाजी के आत्मसमर्पण में सदर याह्या का समर्थन था। आत्मसमर्पण की शर्तें इस प्रकार थीं, "पाकिस्तानी पूर्वी कमाण्ड इस बात पर सहमत है कि बंगला में लड़ रही उसकी सशस्त्र सेनाएं पूर्वी क्षेत्र में भारतीय व बंगला देश सेनाओं के संयुक्त सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा के सामने आत्मसमर्पण कर दें।

"इस आत्मसमर्पण में पाकिस्तान की जल-थल व वायु सेनाओं के साथ-साथ अर्द्ध-सैन्य दल व असैनिक सशस्त्र सेनाएं सम्मिलित हैं।

"ये सेनाएं जहां भी हैं, हथियार डालकर लेफ्टिनेंट अरोड़ा की कमाण्ड के निकटतम नियमित टुकड़ियोंके सामने आत्मसमर्पण करेंगी।

"आत्मसमर्पण के कागजात पर हस्ताक्षर करने के साथ ही पाकिस्तानी पूर्वी कमाण्ड लेफ्टिनेंट जनरल अरोड़ा के आदेश पालन करेंगी।

"आदेश के प्रति अवज्ञा आत्मसमर्पण की शर्तों का उल्लंघन माना जायेगा और युद्ध के नियमों और परम्पराओं के अनुसार निबटाया जायेगा।

"आत्मसमर्पण की शर्तों की व्याख्या या अर्थ के विवादास्पद होने पर लेफ्टिनेंट जनरल अरोड़ा का निर्णय अन्तिम माना जाएगा।

"लेफ्टि० जनरल अरोड़ा आत्मसमर्पण करने वाले पाकिस्तानी अर्द्ध-सैन्य दलों और सैनिकों को विश्वास दिलाते हैं कि जेनेवा कनवैन्शन के अन्तर्गत उनके साथ सम्मान और आदर का व्यवहार किया जायेगा।

"विदेशी नागरिकों, अल्पसंख्यक जातियों के व्यक्तियों व पश्चिमी पाकिस्तान के नागरिकों को लेफ्टिनेंट अरोड़ा की सेनाएं सुरक्षा प्रदान करेंगी।"

हस्ताक्षर (लेफ्टिनेंट जनरल
जगजीतसिंह अरोड़ा)
जी० ओ० सी-इन-सी आफ दि
इण्डियन एण्डबंगला देश फोर्सस
इन दि ईस्टर्न थियेटर

हस्ताक्षर (लेफ्टिनेंट जनरल
ए० ए० के० नियाजी)
मार्शल-ला एडमिनिस्ट्रेटर
आफ जोन बी आफ ईस्ट
पाकिस्तान

भारत द्वारा युद्धविराम की घोषणा

पश्चिमी मोर्चों पर एकतरफा युद्धविराम का निश्चय १६ दिसम्वर शाम को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की बैठक में किया गया। मन्त्रिमण्डल की बैठक के तुरन्त बाद विदेश मन्त्री स्वर्णसिंह को न्यूयार्क में सन्देश भेजकर कहा गया कि वे इसकी घोषणा संयुक्त राष्ट्रसंघ में कर दें जिससे राष्ट्रसंघ युद्धविराम का नया फार्मूला निकालने का यत्न वन्द कर सके।

एक ओर १६ दिसम्वर की शाम को जिस समय भारत ने पश्चिमी मोर्चे पर युद्धविराम की घोषणा की, दूसरी ओर उसी समय पश्चिमी पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल याह्या खां ने रेडियो पर कहा, "जब तक पाकिस्तान का सभी इलाका खाली नहीं कर लिया जाता, तब तक युद्ध जारी रहेगा।" फिर भी भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आशा व्यक्त की थी कि पाकिस्तान युद्धविराम की बात मान लेगा।

पाक टैंकों का कब्रिस्तान—शकरगढ़

३ दिसम्वर से अब तक के भीषणतम टैंकों के युद्ध में पाकिस्तान ने ५५ टैंक गंवाये। यह भयंकर लड़ाई स्यालकोट क्षेत्र में शकरगढ़ और जफरवाल के बीच वसंतार नदी के किनारे पर हुई। जिस प्रकार १९६५ की लड़ाई में खेमकरण में टैंकों का कब्रिस्तान बना था, उसी प्रकार इस वार वसंतार नदी का क्षेत्र टैंकों का कब्रिस्तान रहेगा। हमारी सेनाओं ने इस क्षेत्र में २५ गुना क्षेत्र पर कब्जा किया है जितना कि छम्ब में पाक सेनाओं ने हमारे क्षेत्र का किया है। शकरगढ़ की टैंकों की लड़ाई में दोनों देशों के लड़ाका विमानों ने भाग लिया। भारतीय सेनाएं सीमा से ४० किलोमीटर अन्दर तक घुस गई थीं। भारत ने इस युद्ध में १५ टैंक गंवाये। पाकिस्तान के ८६ टैंक इस क्षेत्र

में नष्ट किए गए थे।

राजस्थान क्षेत्र में भारतीय सेनाएं नयाछोड़ पर कब्जा करने के लिए घमासान युद्ध लड़ रही थीं। छोड़ और नयाछोड़ के बीच वैमानिक युद्ध भी हुआ जिसमें पाकिस्तान का एक मिग-१९ हवाई जहाज मार गिराया गया और दूसरा पाक क्षेत्र में दूर गिरते हुए देखा गया। जैसलमेर सीमा के सामने ही पाक सेना के लिए टैंकों और गोला बारूद की नई कुमुक ले जानेवाली एक माल गाड़ीपर रेती और खैरपुर स्टेशनों के बीच भारतीय वायु सेना ने हमला किया और उसे नष्ट कर दिया। पाकिस्तानी सेना को सहायता पहुंचाने वाले केन्द्रों पर चुन-चुनकर हमले करके उन्हें नष्ट किया गया।

कारगिल क्षेत्र में भारतीय स्थल सेना का दबाव बढ़ता गया। अब तक ३३ पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा कर लिया गया था। तिथवाल क्षेत्र में भी भारतीय सेना की टुकड़ी ने नुकोट की चौकी पर अधिकार कर लिया था।

डेरा बाबा नानक क्षेत्र में भी हमारी सेना ने शत्रु के तीन टैंक नष्ट किए। पाकिस्तानी सेना पुंछ को कश्मीर घाटी से अलग-थलग करने में विफल होने के बाद नागरिकों को अपना निशाना बना रही थी।

छम्ब क्षेत्र में शान्ति थी। उड़ी में गालाबारी चलती रही थी। गुरदासपुर रेलवे स्टेशन, भटिंडा क्षेत्र व पठानकोट क्षेत्र में शत्रुविमानों ने आबादी वाले क्षेत्रों के निकट बम गिराये। कुछ असैनिक व्यक्तियों की जानें गईं।

बंगला देश का उदय

ढाका व बंगला देश के लिए घोर काली रात्रि का अवसान हुआ। हरा व सफेद पाकिस्तानी झण्डा ढाका से गायब हो गया और उसके स्थान पर बंगला देश का झण्डा लहरा रहा है। यह झण्डा इस बात का प्रतीक है कि नया राष्ट्र बंगला देश धार्मिक कट्टरता व साम्प्रदा-

यिकता पर आधारित नहीं है बल्कि लोकतन्त्र व धर्मनिरपेक्षता पर आधारित है।

३६३ वर्ष पुराने ढाका शहर के लिए पश्चिमी पाकिस्तानी सेनाओं के समर्पण से पुराना अध्याय खत्म होता है और नया अध्याय शुरू होता है।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नये देश के उदय का स्वागत करते हुए कहा कि ३१ मार्च को भारत ने बंगला देश के मुक्ति संघर्ष का हृदय से समर्थन करने का जो वचन दिया था वह अब पूरा हो गया है। भारत ने जो विजय प्राप्त की है वह न केवल सैनिक विजय है बल्कि हमारे विचारों व आदर्शों की विजय है।

क्या खोया, क्या पाया

(२१ दिसम्बर तक)

	भारत	पाक
विमान	४५	९४
टैंक	७३	२४६
युद्धपोत	१	४
पनडुब्वी	—	३
तोपधारी नौकाएं	—	१६
छोटे जहाज	—	१२
स्टीमर तथा अन्य पोत	—	१००

युद्धविराम के बाद भारत के पास पाकिस्तान का १४०० वर्ग मील का क्षेत्र कब्जे में है। भारत का केवल ५० वर्ग मील का क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में है।

पाक ने जो क्षेत्र जीता

१. छम्ब क्षेत्र में तवी नदी के पश्चिमी किनारे तक का भाग।

२. हुसैनींवाला क्षेत्र में सतलुज नदी के पश्चिम का भाग।
३. फाजिल्का के ७-८ मील पश्चिम में कुछ भाग जिसमें पक्का ग्राम तथा सवुना जल वितरक सम्मिलित हैं।

भारत ने जो भूमि जीती

१. कारगिल की ४० चौकियां।
२. गुराल, टिथवाल एवं उड़ी क्षेत्र में वहुत-सी सीमा चौकियां तथा लिप्पा घाटी का वहुत-सा भाग।
३. पुंछ, राजौरी, नौशेरा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण ऊंचे क्षेत्र।
४. अखनूर का पूरा क्षेत्र।
५. जम्मू क्षेत्र में कुछ सीमावर्ती चौकियां।
६. शकरगढ़, जफरवाल क्षेत्र का काफी वड़ा भाग जो ४०० वर्ग मील से भी अधिक है।
७. रावी के दक्षिण में डेरा वावा नानक क्षेत्र।
८. डेरा वाबा नानक, अजनाला, अमृतसर, खेमकरण, फिरोज-पुर, ममदोत और फाजिल्का क्षेत्र में सीमावर्ती चौकियां।
९. बीकानेर,रुकनपुर, रनहाल, विजनौर तथा अन्य सीमावर्ती चौकियां।

१०. जैसलमेर, इस्लामगढ़, भटखनवाला खू तथा अन्य चौकियां। (पाक सीमा में चार से आठ मील अन्दर)
११. वाड़मेर एवं कच्छ क्षेत्र—नयाछोड़ तक का सारा भाग, नगर पारकर वल्ज का पूरा भाग, उमरकोट, चाचरी तथा वीरवाह के पूर्व का भाग।
१२. वाड़मेर-सिंध और कच्छ-सिंध क्षेत्र का वहुत वड़ा भाग जिसमें छाड़वेट भी सम्मिलित हैं।

जल, थल एवं वायु सेना के हताहतों की संख्या

	पूर्वी क्षेत्र	पश्चिमी क्षेत्र	योग
मृत	१०४७	१४२६	२४७३
घायल	३०४७	३६११	६६५८
लापता	८९	२१४९	२२३८
	४१८३	७१८६	११३६९

वंगला देश में पाक युद्धवन्दी—एक लाख

सैनिक व असैनिक मोर्चे की कुछ झांकियां

दिसम्वर १२ व १३ की वात है। अजनाला क्षेत्र में वुर्ज चौकी को दोवारा कब्जे में लेने के लिए सीमा सुरक्षा दल और स्थल सेना के सैनिकों ने संयुक्त हमला किया। परन्तु एक पिलवाक्स से मशीनगन की दनदनाती हुई गोलियों के कारण उन्हें वाधा पड़ी। सव-इंस्पैक्टर अजीतसिंह और कांस्टेवल करतार जमीन पर रेंगते हुए पिलवाक्स की ओर वढ़े। अजीतसिंह का साथी करतारसिंह गोली का शिकार हुआ। परन्तु अजीतसिंह ग्रिनेड फेंकता हुआ आगे वढ़ा। साथी की मौत से भी उसका साहस नहीं टूटा। वह 'पिलवाक्स' के निकट पहुंच चुका था। उसने अपने नंगे हाथों से मशीनगन की जाली को पकड़ा। वह इतनी गर्म थी कि उसका दायां वाजू जल-सा गया। तव उसने उस खाई में हथगोले फेंककर शत्रु के ८ सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। उसने मशीनगन को वाहर खींचा। उसके इस शौर्य के कारण ही वह चौकी हाथ में आ सकी।

गुड़गांवा जिले में पटौदी के निकट एक गांव में एक बुढ़िया ने सैनिकों की एक टुकड़ी को गुजरते देखा। उनमें से कुछ सैनिकों को उसने कुछ देर रुकने के लिए कहा, घर गई और कुछ ही देर में देशी घी का एक टीन उठाकर ले आई। उसकी आंखों में आंसू छलक आये

थे। वह कह रही थी, "यह १६ किलोग्राम देशी घी है। पिछले कुछ महीनों में मैंने इकट्ठा किया है। कृपया इसे ले लो। अपनी चौकी पर पहुंचने पर इससे हलवा बनाना और अपने साथियों को खिलाना। मैं सदा तुम्हारे जीवन और सफलता की कामना करती रहूंगी।" उसने बताया कि उसका पति भी सेना में था और १९६५ के युद्ध में मातृभूमि के काम आया। वह उसको भी देशी घी इकट्ठा करके भेजा करती थी। सैनिकों के प्रति उसका स्नेह धन्य है।

भारतीय सेनाओं से पिटते हुए भी पाकिस्तानी सैनिकों ने अपनी क्रूरता एवं पाशविक प्रवृत्तियों को नहीं छोड़ा। बंगला देश में जैसोर विजय के भागीदार कैप्टन बोहरा के अनुसार पाकिस्तानी सेनाओं से मुक्त जैसोर शहर में एक बंकर में उन्हें रस्सियों से बंधी बीस बंगाली स्त्रियां बेहोश अवस्था में मिलीं। कैप्टन बोहरा के अनुसार ऐसा लगता था कि पाकिस्तानी सैनिकों ने जैसोर छोड़ने से पहले उन महिलाओं से बुरी तरह बलात्कार किया था।

छम्ब क्षेत्र में भारत के महान वीर नायक क्षेत्री ने सिद्ध कर दिया कि एक भारतीय जवान की शक्ति ५ टैंकों से भी अधिक है। नायक बहादुर क्षेत्री ने अकेले ५ पाकिस्तानी टैंकों को तोड़कर भारतीय वीरों के शौर्य की पताका को सबसे ऊंचा उठा दिया है। नायक क्षेत्री ने छंब में जिस अतुलनीय पराक्रम का परिचय दिया है, उससे भारतीय जवानों के हौसले बेहद बुलन्द हो गये। नायक नरबहादुर क्षेत्री और बसतार १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध की अमर स्मृति बने रहेंगे। नायक क्षेत्री जैसे भारतीयों के शौर्य से प्रभावित 'न्यूजवीक' पत्रिका ने अब यह कहना शुरू कर दिया है कि पाकिस्तानी पैटन टैंक बूढ़े हो चले हैं।

१६ दिसम्बर के दिन ढाका के रेसकोर्स मैदान में एक नवजात राष्ट्र का निर्माण करने वाले थे—पूर्वी अंचल में भारत व बंगला देश की सेनाओं के संयुक्त सेनापति लेफ्टि० जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा और मार्शल ला एडमिनिस्ट्रेटर लेफ्टि० जनरल ए० ए० के० नियाजी।

ये दोनों जनरल भारतीय सैनिक अकादमी में कभी एक साथ पढ़े थे। एक विजेता था तो दूसरा विजित। एक धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र देश का मुक्तिदाता सिपाही था, तो दूसरा इस्लाम पर आधारित सैनिक ताना-शाही का मुजाहिद था। ढाका में हवाई अड्डे से रेसकोर्स तक मोटर में साथ-साथ जाते हुए दोनों ने एक-दूसरे के परिवार की कुशलता के बारे में पूछा। जनरल नियाजी ने पश्चिमी पाकिस्तान में अपने परि-वार से मिलने की उत्सुकता व्यक्त की। "उस समय जनरल नियाजी की क्या हालत थी?" पूछने पर हमारे जनरल ने कहा, "वह अप्रसन्न थे, जो स्वाभाविक ही था।"

नेट देखते ही भागो

पाक विमानचालक नेट से बड़ा घबराते हैं। इस बात का पता उस वार्तालाप से चलता है जो दो पाक विमानचालकों के बीच भारतीय वायु सेना ने सुनी। वह नेक सलाह यह थी, "अगर आपको अपने आसपास नेट दिखाई दे तो खतरा मत लीजिये और तुरन्त लौट पड़िये।"

सिक्कों की बोरियां

पाक सेना के कुकृत्य बंगला देश में आने वाली पीढ़ियां भी न भुला सकेंगी। उन्होंने वहां के बैंकों और धनपतियों को बुरी तरह लूटा। २५ दिसम्बर के एक समाचार के अनुसार जब भारतीय नौ-सेना अधिकारियों ने चटगांव नदी में अपने जाल बिछा दिये तो फल-स्वरूप पाकिस्तानी सिक्कों से भरी हुई कई बोरियां हाथ लग गईं। पाकिस्तानी सेना द्वारा नदी में पाक सिक्कों से भरी फेंकी गईं सैकड़ों बोरियों का यह एक भाग मात्र ही था। इस कुकृत्य का उद्देश्य बंगला देश को इस अर्थ से वंचित करना मात्र ही था। पाक सेना ने इसी योजना के अन्तर्गत अकेले चटगांव में ही ३२ करोड़ के नोट जला दिये थे।

लूट, बलात्कार व कत्ल

पाक सेना के सैनिकों के अत्याचारों की वारदातें दिल दहला देने वाली हैं। नर, नारियों और बच्चों को हजारों की संख्या में प्रतिदिन कत्ल किया जाता रहा। मोहम्मदपुर और मिर्जापुर में रजाकर अधिक संख्या में थे। वे लोग बंगालियों की प्रतिदिन बलि चढ़ाते थे। सैक्टर नम्बर १२ में प्रतिदिन २५ बंगाली बलि के लिए चुने जाते थे। चुन-चुनकर उनके गलों पर छुरी फेर दी जाती थी। अकेले जैसोर में १०,००० बंगाली कत्ल किये गये।

बलात्कार की घटनाएं तो और भी गन्दी हैं। प्रतिदिन ढाका छावनी में लड़कियों को एकत्रित किया जाता था। उनको नंगा ही पंक्तियों में खड़ा किया जाता था। वे अपने उरोजों को बालों से छुपातीं, तो पाशविकता से भरे सैनिक चिल्लाते, 'देखने दो'। पाक सैनिक उन लड़कियों में से अपनी पसन्द की लड़की चुनते और उनसे असंख्य बार बलात्कार करते। उनमें कई लड़कियां तो मर जाती थीं और कई मूर्च्छित हो जाती थीं। शेष जीवित लड़कियों की छातियों को काट दिया जाता था। कुछ सुन्दर, स्वस्थ लड़कियों को केवल इसलिए जिन्दा छोड़ दिया जाता ताकि वे प्रतिदिन कई सैनिकों की कामवासना को पूरा कर सकें। बंगला देश की मुक्ति के बाद जो लड़कियां बरामद की गईं, अधिकांश उनमें गर्भवती थीं। पाक सैनिकों द्वारा पकड़ी गई लड़कियों में बहुत कम जीवित रह पाईं। ब्राह्मणबारिया में भारतीय सेना ने नंगी जीवित, मृत व मूर्च्छित औरतों को खाइयों से निकाला।

ढाका के निकट एक गांव में एक लड़की के पिता को सैनिकों ने आदेश दिया कि वह सबके सामने अपनी लड़की से बलात्कार करे वर्ना उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा। पिता के इनकार करने पर पाक सैनिकों ने उसके सामने ही उसकी लड़की से बलात्कार किया। बाद में लड़की को मौत के घाट उतार दिया। आदेश न मानने के आरोप में उस पिता को भी उनके हाथों मौत मिली। गांव के दर्जनों पिताओं को उन्होंने ऐसा ही आदेश दिया।

ढाका में जंगखोरों का आत्मसमर्पण

ढाका में युद्ध के बादल जब छट रहे थे और पाकिस्तानी सेनाएं अपनी करारी शिकस्त का एहसास करने लगी थीं तो १६ दिसम्बर के ऐतिहासिक दिन ढाका स्थित पाकिस्तानी फौजियों और इस्लामाबाद में पाकिस्तानी सदर याह्या खां के बीच वायरलैस पर हुई बातचीत नाटकीय रंग तो लिए हुए थी ही, उससे यह भी पता लगता था कि जनरल याह्या खां अब अपने फौजी अफसरों को मुंह दिखाने की भी हिम्मत नहीं रखते। ढाका से सन्देश आया, "सब कुछ खत्म हो गया। हमारे लिए खुदा से दुआ करो। साहब से कह दो अब क्या करें ?"

उत्तर मिला : "साहब (याह्या खां) छुपे बैठे हैं।"

थोड़ी देर में दनदनाता हुआ एक और सन्देश आया : "अगर हम हथियार न डालें तो कट जायेंगे।"

इस्लामाबाद से फिर वही उत्तर मिला, "साहब चुप बैठे हैं।" ऐसी हालत में पाकिस्तान की पूर्वी कमान ने अपने-आप हथियार डाल देने का फैसला किया और कुछ दिन पहले तक ढाका में जो फौजीतंत्र आखिरी आदमी तक भारतीय सेना का मुकाबला करने का दावा करता था, उसने घुटने टेक दिये।

एक पाकिस्तानी लेफ्टिनेंट की डायरी

"जो व्यक्ति दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह स्वयं ही उसमें पड़ता है।" ये शब्द तेरहवीं फ्रन्टियर फोर्स के लेफ्टिनेंट आगा शहीद-हरून की डायरी के हैं जो उसने पूर्वी बंगाल में हुए अत्याचारों को देखकर लिखे। इस अफसर की डायरी बंगला देश में चर्खेयी रेलवे स्टेशन पर मिली। उक्त उद्गार के नीचे उसने अपना निजी विवरण लिखा था—जन्मतिथि—मार्च २६, १६४६, जन्म स्थान—लुधियाना, विवाह की तिथि—जनवरी १६, १६६७। असीम व पीड़ादायक यातनाओं को देखकर उसकी आत्मा उसे फटकारती रही। बंगालियों पर हुए जुल्मों को देखकर वह इतना दुखी हुआ कि उसने अपने पिस्तौल से

आत्महत्या करने की सोची। वह आत्महत्या करने ही वाला था कि उसी समय कमरे में उसका वरिष्ठ अधिकारी आ गया और उसे पिस्तौल छिपाना पड़ा।

उसने एक घटना का हृदयस्पर्शी वर्णन देते हुए लिखा था: अवामी लीग समर्थकों का सफाया करने के लिए वह निकट के एक गांव में गया। उसके साथ उसके सहयोगी अफसर भी थे। गांव के पुरुषों को दीवार के साथ एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया। सैनिक उनको गोली से उड़ाने ही वाले थे कि एक बुढ़िया उसकी ओर दौड़ी, और उसके चरणों पर गिरी और प्रार्थना की कि पंक्ति में खड़े उसके दो लड़कों की जान बख्श दी जाए। वे ही परिवार की आजीविका कमाने वाले थे। इस अफसर को उस बुढ़िया में पश्चिमी पाकिस्तान में रहने अपनी बूढ़ी मां का चेहरा दिखाई दिया। उसने उन व्यक्तियों को छोड़ दिया और सीधा अपने बैरक को लौटा।

भुट्टो का पहरा

छम्ब सीमा से आठ किलोमीटर दूर एक भारतीय मेजर ने मजाक करते हुए कहा, "आपको पता है हमने यहां भुट्टो को कैद कर रखा है!" सब पत्रकार आश्चर्य से देखने लगे। "चौंकिये मत," उस अफसर ने कहा, "भुट्टो इस कुत्ते का नाम है जो आपके पास बैठा ऊंघ रहा है। दो महीने पहले इसे हमने इस गांव में पकड़ा था और तब से यह हमें छोड़कर जाता ही नहीं। रातभर जागकर यह बंकर के द्वार की पहरेदारी करता रहता है।"

एक गिलास पानी

भूखी-प्यासी जनता को पाकिस्तान के शासकों ने किस तरह बलि का बकरा बनाया, इसके कई प्रमाण आ चुके हैं। हाल में ही खोकरा पार सिन्ध क्षेत्र से इसका एक और सबूत मिला। भारतीय जवानों के हमले से भयभीत पाकिस्तानी सैनिक चौकी छोड़कर भाग गए। उनका नायक हकीम खां सोता रह गया।

भारतीय जवानों के पहुंचने पर हकीम खां जागा और नयाछोड़ की ओर भागा, लेकिन प्यास से बेताब वह भाग न सका और भारतीय जवानों के सामने आकर हथगोला और रायफल रखते हुए बोला, "यह सब ले लो, मुझे बन्दी बना लो, लेकिन मेरे प्राणों की रक्षा करो। मुझे एक गिलास पानी दो।"

भारतीय जवानों ने अपने महान आदर्शों और परम्परा के अनुसार पाकिस्तानी सैनिक को पहले पानी पिलाया और फिर उसे युद्ध-बन्दी बनाया।

जूते छोड़कर भागे

१६ दिसम्बर को स्यालकोट अंचल में भारतीय जवानों की मार से पाकिस्तानी भयभीत होकर इतनी तेजी से भागे कि अपने सभी हथियारों के साथ बड़ी संख्या में जूते छोड़ गए। जर्मन टेलीविजन के कैमरामैन ऐसे जूते शकरगढ़ के पास से लाए हैं। उन्होंने ये जूते देशी तथा विदेशी पत्रकारों को दिखाये।

मुझे क्यों छोड़ दिया

पूर्व में पाकिस्तानी सेना जब मुसीबत में फंसी पड़ी थी, उत्तरी बंगला देश के मुक्त क्षेत्र ठाकुरगांव में एक थका-हारा पाकिस्तानी सिपाही भारतीय सेना की जीप को अपनी सेना की जीप समझकर दौड़ा हुआ आया और रो-रोकर कहने लगा, "सबको ले जाते समय मुझे क्यों छोड़ दिया गया।" अपनी गलती महसूस होने पर, धोखे का शिकार हुआ भूखा-प्यासा सैनिक भारतीय अफसर के सामने रिरियाने लगा कि उसे बंदी बनाकर पश्चिम पाकिस्तान में उसके घरवालों के पास भेजने में मदद की जाये।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के वाहन

भारत सरकार ने बहुत पहले यह सन्देह प्रकट किया था कि पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा उसकी विभिन्न मानवीय संस्थाओं द्वारा जो सहायता दी जा रही है, उसका उपयोग जनता की

भलाई के लिए नहीं बल्कि जनता की हत्या करने के लिए सैनिक कार्यों में हो रहा है। अब बोगरा (वंगला देश) से कुछ दूर उत्तर में भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी ने ऐसी तीन गाड़ियां पकड़ी हैं जिन पर संयुक्त राष्ट्रसंघ का चिह्न अंकित था और जिनका उपयोग पाकिस्तानी सेना के लिए शस्त्रास्त्र ढोने के लिए किया जा रहा था। पाकिस्तान को ये गाड़ियां संयुक्त राष्ट्रसंघ वाल सहायता कोष की ओर से दी गई थीं। वंगला देश को आजाद कराने वाली सेना ने संदेह का सबूत प्रस्तुत कर दिया है। वंगला देश के हजारों निरपराध वच्चों की लाशें तालावों और नालों में सड़ रही थीं और संयुक्त राष्ट्रसंघ याह्या खां के सैनिक संपोलो को वंगला देश में दूध पिला रहा था।

वीर मेजर

छम्ब क्षेत्र में जाट रेजीमेंट के एक मेजर ने अपने सैनिकों के साथ राष्ट्रधर्म और सैनिकधर्म का वड़े शानदार ढंग से निर्वाह किया। मुनव्वर तवी नदी के पश्चिमी किनारे के भारतीय ठिकानों पर पाकिस्तानी हमला होने पर यह वीर मेजर जख्मी हो गया। जवानों ने इच्छा प्रकट की कि वे घायल अफसर को पीछे पहुंचा दें। इसका प्रयत्न भी हुआ। लेकिन इस वीर योद्धा की अन्तिम इच्छा यह थी कि वह अपने जवानों के बीच वीरगति प्राप्त करना चाहता है। इस इच्छा से भी वड़ी उसकी एक और इच्छा थी कि वह जिंदा रहने तक जहां है, भारत मां के उस पवित्र ठिकाने को अपवित्र पैरों तले रौंदा जाना वर्दाश्त नहीं कर सकता। जाट रेजीमेंट के वीरों ने अपने धर्म को निभाया। 'जय भगवान, जाट जवान' के नारे लगाते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। भारतीय वीर मरना जानते हैं, हटना नहीं।

भुट्टो सुरक्षा परिषद में

भारत विरोधी लफ्फाजी में भुट्टो जगत्प्रसिद्ध हैं। भाषण में ही क्रोध में आकर गालियां तक दे जाते हैं। मुंह से अनापशनाप कहना उनके लिए साधारण-सी वात है। भारत के विदेशमन्त्री श्री स्वर्णसिंह

भी सुरक्षा परिषद में पधारे हुए थे। भुट्टो के भाषण के कुछ अंश इस प्रकार हैं—"मिस्टर प्रेजीडैंट (भुट्टो ने कहा), आपने भारत के माननीय विदेशमंत्री की बात का हवाला दिया। उनके बारे में 'माननीय' क्यों कहा गया। अगर वह भारत का प्रधान बन सकता है, तो मैं संयुक्त भारत का प्रधानमंत्री हो सकता था। परन्तु मैं एक आजाद देश का सदस्य हूं, चाहे वह देश मिट क्यों न जाये।"

घमण्ड से अपनी कुशन सीट पर पीछे की ओर सहारा लेते हुए पाकिस्तान के भावी राष्ट्रपति ने फरमाया, "मैं एक कठपुतली की तरह नहीं बोल रहा हूं। मैं पश्चिमी पाकिस्तान के प्रमाणित नेता की हैसियत से बोल रहा हूं। पूर्वी पाकिस्तान में शेख मुजीबुर्रहमान की सफलता से भी अधिक सफलता मुझे चुनाव में मिली है। मुजीब को इस बात का पता होना चाहिये।"

पहले अपने भाषण में भुट्टो ने कहा था, "शेख से चल रही वार्तालाप के बारे में भारत सरकार प्रसन्न न थी क्योंकि प्रारम्भिक वार्तालाप समाप्त करके मैं ज्योंही पाकिस्तान आया तो पहली चीज उन्होंने जो की वह थी विमान-अपहरण की। विमान-अपहरण कश्मीर (भारतीय) के जासूसों ने इसलिए किया ताकि मैं और शेख मुजीब आपस में मिल न सकें।"

ताशकंद समझौते के बारे में भुट्टो का कहना था, "सारी बात का सार यह है कि हम एक ऐसे समझौते पर सहमत हुए जो हमारे पक्ष में न था, जो उनके (भारत के लोग) पक्ष में था। वह समझौता इतना एकपक्षीय था कि भारत के प्रधानमंत्री (लालबहादुर शास्त्री) हर्षातिरेक से मर गये।"

वीर कप्तान महेन्द्रनाथ मुल्ला

१४वीं फ्रिगेट स्क्वड्रन के सीनियर अफसर कैप्टन महेन्द्रनाथ मुल्ला की कमान में भारतीय नौसेना के दो जहाज 'हंटर किलर अभियान' के लिए तैनात किये गये थे, जिन्हें उत्तरी अरब सागर में पाकिस्तानी पनडुब्बियों को खोजकर नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था।

इस अभियान के दौरान ६ दिसम्बर, १९७१ की रात को भारतीय नौ-सेना का जहाज 'खुखरी' शत्रु की एक पनडुब्बी के तारपीडो से मारा गया और डूब गया। जहाज को छोड़कर कैप्टन मुल्ला ने अपनी सुरक्षा की चिन्ता नहीं की। उन्होंने अडिग रहकर अपने जहाज की कम्पनी के बचाव की व्यवस्था की। बाद में भी जबकि जहाज डूब रहा था, उन्होंने तत्काल बुद्धि का परिचय दिया और बचाव कार्य का निर्देशन जारी रखा। उन्होंने एक नाविक को अपना जीवन-रक्षक गीयर दे दिया और खुद अपनी रक्षा से इन्कार किया। अपने जहाज के अधिक से अधिक व्यक्तियों को जहाज छोड़ने का निर्देश देकर कैप्टन मुल्ला पुनः बचाव-कार्य के लिए पोत के पुल तक गए। इस कार्य को करते हुए उन्हें अपने जहाज के साथ डूबते हुए देखा गया। उनका कार्य, व्य-वहार और उच्च आदर्श नौसेना की महती परम्परा के अनुकूल रहा।

वीरता का बेमिसाल आदर्श

सीमा सुरक्षा दल के एक वीर कांस्टेबल ने अपनी जान देकर दस जानें बचाने का बेमिसाल उदाहरण पेश किया है। फिरोजपुर सैक्टर में सतलुज पुल के उस पार कांस्टेबल जगजीतसिंह की चौकी थी। ३ और ४ दिसम्बर को दुश्मन ने भारी पैदल सेना और बख्तरबंद गाड़ियों के साथ भयानक हमला किया। जगजीतसिंह अपने प्राणों को दांव पर लगाकर, बिना समर्पण किए, लगातार गोलियां दागता रहा। जब गोला-बारूद खत्म हो गया, तो वह तैरकर सतलुज के पार गया और पास की एक चौकी से काफी गोला-बारूद ले आया। दुबारा उसे फिर गोला-बारूद लाने के लिए सतलुज तैरकर पार करनी पड़ी। तीसरी बार जब वह सतलुज पार करके अपनी चौकी पर लौट रहा था तो दुश्मन की क्रॉस फायर में मारा गया। इसी प्रकार सीमा सुरक्षा दल के सब-इंस्पेक्टर श्री रामस्वरूप ने आमने-सामने लड़कर जिस साहस का परिचय दिया, वह भी अद्वितीय है। ३ दिसम्बर की रात को जब पाकिस्तानियों ने हमला किया तो वे हुसैनीवाला चौकी पर तैनात थे। तुरंत ही वे अपने साथियों को लेकर पीछे हट आये, लेकिन

जब उनका गोला-बारूद का भण्डार जवाब दे गया तो वे आमने-सामने की लड़ाई पर उतर आए और अपने दो साथियों को एक खाईसे बचा-कर सुरक्षित निकाल लाये। पीछे हटते हुए उन्होंने एक पाकिस्तानी सैनिक से उसकी रायफल छीन ली और सतलुज पार करके साफ बच निकले।

शत्रुओं पर दया

भारतीय सैनिक जहां युद्ध में वीरता तथा साहस से लड़ना जानते हैं, वहां असहाय शत्रु पर दया करना भी जानते हैं। ऐसी ही एक मिसाल वायुसेना के हैलीकाप्टरों के चालकों ने कायम की। पश्चिमी क्षेत्र में राजौरी इलाके में एक अग्रिम चौकी पर तीन पाकिस्तानी सैनिक गम्भीर रूप से घायल पड़े थे और मौत का इन्तजार कर रहे थे। उन्हें डाक्टरी सहायता की अत्यन्त आवश्यकता थी। भारतीय हैलीकाप्टरों के चालक अपनी जान की सुरक्षा की परवाह न करते हुए वहां तक पहुंचे और चलती हुई गोलाबारी के बीच में उन पाकिस्तानी सैनिकों को बचा लिया। मौत के जबड़ों से निकालकर भारतीय वीरों ने शत्रु-युद्धबन्दियों की रक्षा का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया।

साकेसर (पाकिस्तान) का राडार संयंत्र और हमारे निडर विमानचालक

मियांवाली (प० पाकिस्तान) से बीस मील पूर्व की ओर साल्ट-रेंज के सुदूर दक्षिणी किनारे पर पाकिस्तान वायु सेना का विमान-नाशक राडार स्टेशन है जिसके आसपास आक्रमणकारी विमानों को मार गिराने वाली तोपें लगी हुई थीं। भारतीय विमानचालकों के लिए यह एक चैलेंज था और ४ दिसम्बर को पाकिस्तान के अचानक आक्रमण का ठीक जवाब देने के लिए निशाना था। इस राडार का तहस-नहस किया जाना बहुत आवश्यक था, क्योंकि पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम भाग में विमानों की पूर्व सूचना यही देता था।

इस खतरनाक काम के लिए 'हाकर हंटर' फाइटर बाम्बर विमान को चुना गया। यह विमान शत्रु के क्षेत्र में [illegible] तक जाकर घातक

मार कर सकता था। हंटर एक ऐसा विमान है जो चलाये जाने में सरल परन्तु शत्रु पर मार करने में अद्भुत है। आक्रमण करने की योजना इस प्रकार बनाई गई थी कि वह राडार भारतीय विमानों के आगमन की पूर्व सूचना देने में अधिक समर्थ न हो सके और विमान से छोड़े गये राकेटों से अधिक से अधिक शत्रु को मार दी जा सके। ४ दिसम्बर को पंजाब के एक सैनिक हवाई अड्डे से विंग कमाण्डर मेहता के नेतृत्व में दो हंटर विमान उड़े। कुछ ही क्षण बाद उसी निशाने के लिए फ्लाइट लेफ्टि० राय के नेतृत्व में उड़ान भरी। ये चारों लड़ाका विमान रास्ते की विमानभेदी तोपों की मार से बचते हुए निशाने पर पहुंचे। वहां राकेटों और तोपों की मार की। वे राडार की रक्षा के लिए लगाई पाकिस्तानी विमानभेदी तोपों से बचकर सकुशल लौट आये। उसी दिन दोपहर बाद फ्लाइट लेफ्टिनेंट राय एक बार फिर अकेला विमान लेकर ठिकाने तक गया तथा राडार संयंत्र को क्षति पहुंचाकर सकुशल लौटा।

दूसरे दिन दोपहर बाद दो हंटर लड़ाका विमानों को स्क्वेड्रन लीडर जे० एम० मिस्त्री के नेतृत्व में उसी ठिकाने के लिए भेजा गया। स्क्वेड्रन लीडर जे० एम० मिस्त्री के विंगमैन ने सूचना दी कि दुश्मन के हवाई अड्डे का 'रनवे' बेकार हो चुका है। इस निडर विमान-चालक ने एक बार फिर उस दूर ठिकाने पर आक्रमण करने की पेश-कश की। इस बार का उसका आक्रमण अधिक तेज और विनाशकारी था। विमानभेदी तोपों के गोलों के बीच में उसने शत्रु के राडार यंत्र को गम्भीर क्षति पहुंचाई। उसके राकेट ठीक निशाने पर बैठे थे। उस समय मियांवाली के एक अन्य हवाई अड्डे पर भारतीय चालक आक्र-मण कर रहे थे। स्क्वेड्रन लीडर जे० एम० मिस्त्री ने उनको एक सन्देश प्रसारित करते हुए कहा कि उसने अपना काम पूरा कर लिया है और वह अब मियांवाली क्षेत्र में है। यही उसका अन्तिम सन्देश था। वह बहादुर विमानचालक अकेला गया था। शत्रु ठिकाने को नष्ट करने के बाद लौटने में असमर्थ रहा।

थोड़ी देर बाद फ्लाइट लेफ्टिनेंट राय और फ्लाइट लेफ्टिनेंट मलकानी साकेसर पर दोबारा आक्रमण करने के लिए लड़ाका विमानों को लेकर दुश्मन के क्षेत्र में गये। बाद की सूचनाओं से पता चला कि शत्रु के इस ठिकाने पर स्थित संचार-व्यवस्था भंग हो चुकी है। अन्तिम आक्रमण और भी तेज प्रलयकारी व घातक था। अनेक विमानभेदी तोपों के दनदनाने से भी हमारे विमानचालक निरुत्साहित नहीं हुए। दोनों विमानचालक भी न लौट पाये और लापता की सूची में हैं। उस क्षेत्र में की गई उड़ानों की संख्या से पता चलता है कि उन वीर साहसी युवक विमानचालकों का त्याग निष्फल नहीं गया। राकेटों की मार और तोपों के गोलों से दुश्मन के कई महत्त्वपूर्ण ठिकानों को नष्ट किया गया और उनके हताहतों की संख्या में वृद्धि की गई। इन तीन निडर विमानचालकों ने अन्य भारतीय विमानचालकों के लिए मार्ग साफ कर दिया था। अब वे पश्चिमी पंजाब के आकाश में सुरक्षित उड़ान भर सकते थे। अब उन्हें साकेसर के राडार का भय न था। साल्ट रेंज की लाल चट्टानों पर स्थित साकेसर अब आग में धधक रहा था। ४ और ५ दिसम्बर के यह हवाई आक्रमण वीरता के इतिहास में अमर रहेंगे और पश्चिमी वायु कमान के विमानचालक इसे हमेशा याद रखेंगे।

पाकिस्तान का पापमय जन्म

राज्य सभा में ४ दिसम्बर को पाकिस्तान की आक्रामक कार्यवाही के विषय में बहस हो रही थी। उसी दौरान निर्दलीय सदस्य श्री मुहम्मद करीम चागला ने कहा कि मैं पाकिस्तान का खात्मा देखना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान का जन्म पाप में हुआ और उसका अन्त भी पाप में होगा। हमारी लड़ाई प्रतिरक्षात्मक-आक्रामक होनी चाहिए। याह्या खां पागल हो गया है। हमारी सरकार का पहला काम बंगला देश को मान्यता देना होना चाहिए।

भारत के भूतपूर्व विदेश मन्त्री के ये शब्द कितने यथार्थ थे इसमें शक की कोई गुंजायश नहीं।

मानवीय आजादी की रक्षिका

श्रीमती इन्दिरा गांधी का विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ था। तब उन्होंने हाथ में खड्ग लेकर निम्न प्रतिज्ञा की थी, 'यदि विश्व की चहुं दिशाओं में कहीं भी ऐसे लोग हैं जो हमें हमारी स्वतन्त्रता से विहीन रखने का प्रयत्न करते हैं, तो वे इस बात पर ध्यान दें कि मैं हाथ में तलवार लिए हूं और उनके प्रयत्न को विफल करने की अंत तक चेष्टा करूंगी। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि मानवीय स्वतन्त्रता की ज्योति विश्व में व्याप्त हो, एवं यह ज्योति हमें चारों ओर से घेर ले।'

पाकिस्तान द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमन्त्री का जो रूप दृष्टिगोचर हुआ, निस्सन्देह वह उसी प्रतिज्ञा की पूर्ति कर गया।

बौना पाकिस्तान

बंगला देश के अलग हो जाने से पाकिस्तान की जनसंख्या बारह करोड़ चौरासी लाख तीस हजार से कम होकर पांच करोड़ चौरासी लाख रह गई है और ५५,१२६ वर्गमील का क्षेत्र भी कम हो गया है। पहले पाकिस्तानका क्षेत्रफल ३,६५,५२९वर्गमील था,अब३,१०,४०३ वर्गमील है। बंगला देश के आजाद हो जाने से अब भारत में पाकिस्तान से भी अधिक मुस्लिम हैं। पाकिस्तान में मुसलमानों की संख्या नौ करोड़ सैंतीस लाख थी, अब चार करोड़ अट्ठाईस लाख है जबकि भारत में छह करोड़ मुसलमान रहते हैं। पहले पाकिस्तान का निर्यात का व्यापार ३३,०३० लाख रुपये का था, अब केवल १७,६२० लाख रुपये का है। इसमें आधे से अधिक जूट के निर्यात का भाग था। बंगला देश के स्वतन्त्र हो जाने से पाकिस्तान की विदेशी मुद्रा की आय को गम्भीर क्षति पहुंची है जिसको पाकिस्तान पूरा नहीं कर पायेगा।

पाक विघटन की भविष्यवाणी

स्वतन्त्र पार्टी के नेता श्री राजगोपालाचारी का कहना है, "यदि

मिस्टर जिन्ना गांधीजी के सुझाव को स्वीकार कर लेते तो यह उप-महाद्वीप चट्टान की तरह मजबूत रहता। जब जिन्ना ने इसे अस्वीकार कर दिया, पाकिस्तान का भविष्य तभी अंकित हो गया था। मुझे और लार्ड माउण्ट बैटन को पाक विघटन की आशा थी और २५ वर्ष बाद वह सत्य सिद्ध हुआ।"

पाक विघटन में याह्या खां के योगदान के बारे में वयोवृद्ध नेता का कहना है कि याह्या खां की अदूरदर्शिता ने जिन्ना निर्मित बालू पर खड़े इस देश को ढाह दिया है।

अध्यापक को पत्र

भारत के रक्षामंत्री ने भारत-पाक युद्ध से पहले पाकिस्तान में रहने वाले अपने भूतपूर्व अध्यापक श्री ए० डब्ल्यू० खान को पत्र लिखा था। श्री जगजीवनराम ने लिखा था कि भारत युद्ध नहीं चाहता। याह्या खां ने भारत को युद्ध की धमकी दी है। "मास्टर साहब, मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि राष्ट्रीय सुरक्षा और गौरव के साथ युद्ध को रोकने का प्रयत्न करूंगा।"

पत्र में श्री जगजीवनराम ने आशा व्यक्त की थी कि पाकिस्तान के सैनिक शासक मौत और बर्बादी का मार्ग छोड़ देंगे।

मशीनगन और सैबर जेट

विमानभेदी तोप और नेट से ही नहीं मामूली मशीनगन से भी सैबर जेट विमान गिराया जा सकता है। इसका उदाहरण पाकिस्तानी सीमा के अन्तर्गत गजनसू सेक्टर में एक गोरखा जवान ने दिया। उसने एक पाकिस्तानी सैबर जेट विमान को अपनी मशीनगन का ऐसा निशाना बनाया कि वह जलता हुआ नीचे आ गिरा और पायलेट की मृत्यु हो गई।

० ० ०

तोपों की गड़गड़ाहट, विमानों की घरघराहट एवं लाखों निर्दोष नर-नारियों और बच्चों के कत्लेआम के बाद एक नये राष्ट्र का जन्म हुआ। धर्म-निरपेक्ष बंगला देश भारतीय वीर सैनिकों और मुक्ति-वाहिनी के योद्धाओं के त्याग, शौर्य, पराक्रम तथा बलिदान की अमिट गाथा है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने वाली यह केवल एक भारी सैनिक सफलता ही नहीं बल्कि उन भारतीय आदर्शों की विजय है जो हमारे राष्ट्रीय जीवन का आधार है।

साधना पॉकेट बुक्स